मासिक

इसलाहे समाज

मार्च **2018** वर्ष **29** अंक **03**

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् हक़्क़

- वार्षिक राशि **100** रुपये
- प्रति कापी **10** रुपये
- टोटल पेज **82**

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-**6** से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-**6** से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. विश्व शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा **2**
2. बढ़ता प्रदूषण और हमारी जिम्मेदारियां **4**
3. शराब नोशी एक समाजी नासूर **7**
4. विश्व शान्ति की बुनियाद और इस्लाम **9**
5. शराब के नुकसानात, मानवता की सुरक्षा... **12**
6. इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक **15**
7. राष्ट्रीय सदभावना और मानवीय सेवा **18**
8. विश्व शान्ति की स्थापना में इमामों की भूमिका **21**
9. आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें **23**
10. भाई चारा, सदभावना और आज़ादी **25**
11. दहेज की रोक थाम कैसे की जाये **27**
12. जहेज़ (दहेज विरोधी कविता) **31**
13. मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द का परिचय **27**
14. सन्देश **32**
15. दाइश के आतंकवाद के खिलाफ अहले हदीस ओलमा का सामूहिक फ़तवा **70**
16. आतंकवाद के विरोध में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का सामूहिक फ़तवा **74**
17. दाइश की गतिविधियां मानतवता विरोधी... **77**
18. हम आतंकवाद के निरन्तर विरोध में क्यों? **79**

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

बढ़ता प्रदूषण और हमारी जिम्मेदारियां

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मानव शरीर की तनदुरूस्ती का राज साफ पानी, पवित्र खाद्य, साफ सुथरा माहौल, उपजाऊ जमीन और मिटटी में निहित है यह बात इस लिये कही जा रही है कि विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों ने इन्सान की नाक में दम और जीना दूभर कर रखा है, जल प्रदूषण, वायू प्रदूषण, जमीनी प्रदूषण आदि का एक असीमित सिलसिला है जिसने मानव शरीर को खोखला कर दिया है और शरीर को बीमारियों का गढ़ बना दिया है विभिन्न सर्वे और अनुमानों के अनुसार वायू प्रदूषण से मरने वालों की तादाद में बेपनाह बढ़ोतरी हो रही है।

वास्तव में इन्सान इन सबका एलाज ढूंढ़ने और विभिन्न कारणों की खोज लगाने से पहले अपने आप को पा ले तो फिर सभी बीमारियों, प्रदूषणों और संकटों पर नियंत्रण पा लेगा। इन्सान ने इन तमाम खराबियों के पीछे कौमों, मुल्कों और भांत भांत के उन इन्सानों को ढूंढ़ना शुरू कर दिया जो विभिन्न हिकमतों और कानूने फितरत के नतीजे में प्रकट हुये हैं या वजूद में लाये गये हैं जो प्राकृति के प्रतीक और अल्लाह की हिकमत के करिश्मे और प्रतीक हैं जो इन्सानी समुदाय के रिश्ते को मजबूत करने, पहचानने मिल जुल कर रहने, प्रेम करने और एक दूसरे के सहायक और दुखदर्द में साथी बनने के लिये हैं न कि नफरत, दुश्मनी और दूरियों को बढ़ाने के लिये हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''ऐ लोगो हमने तुम सबको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया है और इसलिये कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो, तुम्हारे कुंबे और कबीले बना दिये हैं अल्लाह के नजदीक तुम सबमें से बाइज्जत वह है जो सबसे ज्यादा डरने वाला है''। (सूरे हुजुरात-१३)

मगर तुम हो कि कुदरत की महान कृति इन्सान को अपनी बनायी हुयी टोलियों में बांट रहे हो और इन बटवारों की खाड़ी को गहरा करते चले जा रहे हो।

समुद्र और पानी की बेशुमार सृष्टि जो तुम्हारी सेहत का मजबूत माध्यम थीं अब खुद तुम्हारे फैलाये हुये प्रदूषण की वजह से इन समुद्री जानदारों का जीना दूभर है वह तुम्हें जीवन की चमक दमक, जैविकी और विटामिंस कहां से उपलब्ध कर सकती हैं? गोया कि समुद्र की मछलियां और बेशुमार सृष्टि समुद्र की तहों में दुआएं देने के बजाये अपने वजूद की दुहाई दे रही हैं और उनकी बददुआएं तुम को जल प्रदूषण, खतरनाक बहाव सैलाब और सोनामी की शक्ल में मिल रही हैं जिसे तुम देख और भुगत रहे हो और एलाज

जानते हुये भी अंजान और नादान बने हुये हो, हमें तुम्हारी अक्ल और बुद्धिमत्ता पर मातम करने को जी चाहता है।

आइये अब दूसरों को कोसने के बजाये हम स्वयं व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर अपना आत्मनिरिक्षण करें और इन प्रदूषण पर नियंत्रण पाने का प्रयास करें अपने दोष और पाप को दूसरों के सर मंढने के बजाये स्वंय की इस्लाह करें और क्षमायाचना करें, सरकारों, फैक्टरियों, कारखानों और कारखनदारों की कारिस्तिानियों पर मातम और क्रोध का जाम उंडेल कर नसीहत का हक़ अदा करके खामूश न हो जायें क्योंकि यही असफल कौमों का सबसे बड़ा मर्ज रहा है।

तो आइये हम प्रदूषण फैलाती बड़ी बड़ी फैक्टरियों और कारखानों को हटाने की मांग और सरकारों को कोसने के जिस तरीके पर दुनिया अग्रसर है, उसको छोड़ दें हम व्यवहारिक जीवन में उतर कर इस्लामी आदर्श पेश करें। इस्लाम में फुजूल खर्ची और फालतू कामों से मना किया गया है इसकी रोशनी में अगर हम धुवां उगलती और बेतहाशा बढ़ती हुयी गाड़ियों के सिलसिले में अपने आप पर कन्ट्रोल कर लें और जाम सिग्नल पर जो मिन्टों घन्टों हजारों गाड़ियां बार बार खड़ी होती हैं और प्रदूषण फैलाती हैं उस पर मामूली ध्यान दें तो लाखों टन धुवें पर काबू पा सकते हैं ईंधन बचा सकते हैं और देश बढ़ती महंगायी और विनियम मुद्रा (जरे मुबादला) के दबाव में कमी ला सकते हैं।

आप को आपके प्रिय धर्म इस्लाम ने शिक्षा दी है कि सफाई आधा ईमान है, शरीर, घर द्वार, सेहन, सड़क और आम गली कूचों की सफाई हमारी धार्मिक जिम्मेदारी है पवित्रता आधा ईमान है और यह हर जगह और हर स्तर पर अपेक्षित है।

इस्लाम ने न सिर्फ सफाई सुथराई को धर्म का भाग करार दिया है बल्कि हर प्रकार के प्रदूषण से मानव संसार को बचाने का उपाय भी बताया है। मिसाल के तौर पर पानी ही को ले लीजिये जिस पर पूरी सृष्टि के जीवन का आधार है, को बचाने और फालतू खर्च न करने का हुक्म देने के साथ साथ इसे साफ और पारदर्शी रखने का हुक्म दिया है और पानी को दूषित करने से रोका है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि तुम में से कोई भी शख्स ठहरे हुये पानी में पेशाब न करे क्योंकि फिर जरूरत पड़ने पर उसी से ही स्नान करना है (बुखारी, मुस्लिम) इस आदेश में हर हानिकारक और गंदी चीजें शामिल हैं जो जल प्रदूषण का कारण बनती हैं इस हदीस की रोशनी में यह बात कही जा सकती है कि जो इस्लाम धर्म किसी एक व्यक्ति को भी पानी में गन्दगी फैलाने से मना करता हो और इसमें पेशाब करने से रोकता है वह पूरे शहर की गन्दगी को पानी में बहाते रहने को क्यों पसन्द कर सकता है? वह केमीकल और जहरीले पदार्थों की नालियों का रूख बेतहाशा तौर पर समुद्रों, झीलों और तालाबों की तरफ मोड़ देने की इजाजत क्यों दे सकता है?

इसी प्रकार पानी के बर्तन को रात में ढक कर रखने का

हुक्म है जिस के बड़े लाभ हैं इस्तेमाल पानी को यूं ही बहा देना या टूटे बर्तनों, बोतलों, खुली टंकियों और गडढ़ों में जमे रहने देना जिससे उसका रंग बदल जाये, दुर्गंध आने लगे सहीह नहीं है। आज डेंगू, मलेरिया और इस प्रकार की बदतरीन बीमारियां और वबा की परिस्थिति इसी लापरवाही का परिणाम है।

पेड़ पौदे का पर्यावरण की सफाई सुथराई और सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है यह कारखानों, गर्द धूल, निर्माण कार्य से पैदा होने वाले प्रदूषण को साफ और संतुलित रखने में बड़े सहायक होते हैं इसी वजह से इस्लाम ने खेती बाड़ी और पेड़ लगाने का हुक्म दिया है और इसके लिये बड़ा प्रोत्साहन किया है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कोई भी मुसलमान कोई पौदा लगाता है या खेती बाड़ी करता है तो उसमें से जो कुछ पक्षी, इन्सान या चौपाया खा लेता है तो यह उसके लिये सदका (नेकी) होती है। (सहीह बुखारी)

इसी लिये इस्लाम ने आदेश दिया है कि आबादी से दूर जा कर मानवीय आवश्यकता पूरी करो। स्वच्छ भारत अभियान के बाद हालिया स्वच्छ शौचालय अभियान ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के जमाने में शुरू हो चुका था और घरों में इसका प्रबन्ध ा किया गया था। इस्लाम ने निर्जीव और जानदार की सुरक्षा के सिलसिले में भी स्पष्ट शिक्षा दी है जो कि पर्यावरण को कन्ट्रोल करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

जरा इन शिक्षाओं पर गौर करें और देश, सृष्टि और मानवता से संबन्धित अपनी जिम्मेदारियों को अदा करें क्योंकि अगर इन उज्जवल शिक्षाओं पर अमल किया जाये तो प्रदूषण का ऐसा खतरा हो सकता है जिसमें हम सब लिप्त हैं और देश, समाज और मानव स्वास्थ्य के लिये प्रदूषण चुनौती बन कर सामने आ सकता है? कदापि नहीं। हकीकत यह है कि हममें से अधिकतर लोगों को इसका एहसास तक नहीं है वह कौम जिसका आधा ईमान सफाई सुथराई हो वह कीचड़ों के ढेर से घिरी हुयी है स्वास्थ्य की सुरक्षा का मामूली ख्याल भी नहीं है औरों ने हमारी खूबियों को अपना करके स्वंय को सभ्य और सिवीलाइज्ड बावर करा लिया है किसी कवि ने सच कहा है।

जमाना बड़े गौर से सुन रहा था

हम ही सो गये दास्तां कहते कहते

अगर स्वंय को प्रदूषण की वबा और लानत से बाल बच्चों रिश्ते नातेदारों और देश, समाज और मानवता को बचाना है तो आइये पहल कीजिये और उन उपायों और सिद्धांतों को अपनाइये जो इस्लाम ने बताया है।

सरकार और मियूनिस्पल्टी का इन्तेज़ार मत कीजिये। आस पास में प्रदूषण और गन्दगी न पैदा होने दीजिये क्योंकि इससे पहले नुक्सान आपका है आपके भाई बन्दों और सवा सौ करोड़ देशवासियों, देशबन्धुओं मानव जगत और जनस्वास्थ्य का नुकसान है और इन सबको बचाना हमारा कर्तव्य है।

❑❑❑

शराब नोशी एक समाजी नासूर

डा० अबुल हयात अशरफ

शराब नोशी तमाम बुराइयों का स्रोत और समाज की तमाम बुराइयों की जड़ है। शराबनोशी इन्सान की अक्ल को बेसुद्ध कर देती है, यह वक्ती तौर पर जोश पैदा करने वाली, जजबात को उभारने वाली और बेहिस्सी की स्थिति पैदा करने वाली घातक चीज है यह दिमाग की कोशिकाओं पर दुर्प्रभाव डाल कर प्रयोग करने वाले के स्वभाव में परिवर्तन पैदा कर देती है। शराब, अलकोहल, वाइन (अंगूर से बनी शराब) बियर घर पर स्थानीय अनाजों से बनी शराब ब्रान्डी विस्की आदि पर आधारित होती है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ ईमान वालो, बात यही है कि शराब और जुवा और थान वगैरह और पांसे के तीर यह सब गंदी बातें शैतानी काम हैं इनसे बिल्कुल अलग रहो ताकि तुम सफलता पाओ''। (सूरे माइदा-९०)

दूसरी आयत में जोर देकर कहा गया है कि ''शैतान तो यूं चाहता है कि शराब और जुवा के जरिये से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग्ज (वैमनस्यता) डाल दे और अल्लाह की याद से और नमाज़ से तुम को बाज रखे सो अब भी बाज आ जाओ (सूरे माइदा-९१)

अल्लाह ने शराब पर, शराब बनाने वाले पर, शराब बनवाने वाले पर, उसके पीने वाले और पिलाने वाले पर, उसके उठाने और जिनकी तरफ उसको उठाकर ले जाया जाये, उस पर और उसके बेचने और खरीदने वाले पर और उसकी कीमत खाने वाले पर लानत की है। (अबू दाऊद)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हर मादक पदार्थ शराब है और हर शराब हराम है (सहीह मुस्लिम) एक तीसरी हदीस में ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो चीज़ अपने अधिक मात्रा में नशा पैदा करती हो तो उसकी कम मात्रा भी हराम है। (तिर्मिज़ी)

इस्लाम का सिद्धांत है कि वह समाज में विखराव और तबाही लाने वाली चीज़ों को जड़ से खत्म करने की कोशिश करता है, शराब जिस चीज़ की भी हो वह शराब है और वह हराम और निषेध है।

शराब नोशी से जिगर और गुर्दों का तशन्नुज होता है विभिन्न प्रकार के कैनसर जैसे सर का कैनसर, गले का कैनसर आंतों का कैनसर हो जाता है, टीवी की बीमारी भी हो जाती है, पटठे कमजोर हो जाते है हाई बलडपरेशर डिपरेशन और स्मृति शक्ति कमजोर हो जाती है, सीने का इन्फेक्शन नमूनिया और फालिज के असरात पैदा हो जाते

हैं।

विश्व स्तर पर हर साल लगभग १५ लाख लोग शराब पीने के कारण मर जाते हैं, हिन्दुसतान में १५ से २० प्रतिशत दिमागी बीमारियाँ शराब पीने की वजह से पैदा होती हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार पब्लिक स्पतालों में दाखिल होने वाले ३७ प्रतिशित मरीजों का सबब शराब नोशी होती है। १७.६ प्रतिशत मनोवैज्ञानिक मरीज शराब की वजह से होते हैं। ३६ प्रतिशत लोग शराब नोशी की वजह से आत्महत्या करने की कोशिश करते हैं। डब्लू एच.ओ की रिपोर्ट के अनुसार ५० प्रतिशत रेप की घटनायें शराब नोशी के परिणाम में होती हैं। शराब की लत पड़ जाने पर आदमी चोरी डकैती करता है यहां तक कि कभी कभार वह नाजायज वसूली और अवैध तरीकों से रक़म हासिल करता है। अपने बीवी बच्चों को भूखा रख कर घर वालों को परेशानी में डाल कर अपने को आर्थिक तौर पर तबाह करके अपनी शराब नोशी की इच्छा पूरी करता है इसकी वजह से समाज में विखराव, बेचैनी दुश्मनी परिवारिक झगड़ा, आपसी दुश्मनी पैदा होती है इसी लिये इस्लाम में इसे उम्मुल खबाइस (तमाम बुरी चीजों की जनक) कहा गया है। अगर्चे शराब नोशी को किसी भी धर्म में अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता मगर इस्लाम शराब को अकबरूल कबाइर (सब से बड़ी बुराई) करार देते हुये इसे आखिरी हद तक हराम करार दिया गया है। ❑❑❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

विश्व शान्ति की बुनियाद और इस्लाम

नौशाद अहमद

इस संसार के हर इन्सान की स्वभाविक इच्छा यह है कि उसको हमेशा सुख मिले, और वह खुशहाली के साथ जीवन गुज़ारे, और वह यह भी चाहता है कि उसके आस पास में भी सुख शान्ति रहे, क्योंकि हर एक सच्चे इन्सान का यह नजरिया है कि सुख शान्ति दुनिया की नेमतों में से एक है।

विश्व शान्ति का इस्लाम से बड़ा गहरा संबन्ध है, इस्लाम के आने से पहले अगर उस वक्त के हालात का अवलोकन किया जाये तो पता चलता है कि आज से साढ़े चौदह सौ साल पहले विश्व की स्थिति क्या थी? उस समय अरब की धरती पर अज्ञानता और अमानवीय गतिविधियों का एक लम्बा सिलसिला था, एक दूसरे पर अत्याचार करना बिलकुल साधारण बात थी, मामूली मामूली बातों को लेकर एक कबीले का दूसरे कबीले से वर्षों जंग होती थी, लड़कियों को अपमान का प्रतीक समझा जाता था, यही वजह है कि उस समाज में लड़कियों को पैदा होते ही जीवित दफन कर दिया जाता था, यह समाज की एक जघन्य बुराई थी, जिस पर इस्लाम ने रोक लगायी, इसी प्रकार छोटे और बड़े का भेदभाव बड़े स्तर पर पाया जाता था, ताकतवर गरीब को सताता था, इन्सान को इन्सान नहीं समझा जाता था, औरतों पर अत्याचार आम बात थी, लूट खिसोट का बोल बाला था, कमजोर के माल को हड़पना एक मामूली बात थी, रिश्वत का चलन जोरों पर था कहने का मतलब यह है कि इस्लाम के आने से पहले जितनी समाजी बुराइयां हो सकती हैं, सब पायी जाती थीं, लेकिन इस्लाम के आने के बाद अरब समाज से इन सब बुराइयों का अन्त हो गया और इस्लाम के मानने वाले जहां भी पहुंचे इन बुराइयों के खिलाफ आवाज उठायी, और जो बुराइयां समाज में अम्न व शान्ति को भंग करने का कारण बन रही थीं उन पर ठोस ढंग से रोक लगायी।

ऊपर की पंक्तियों में समाजी बुराइयों के बारे में जो कुछ बताया गया है और इसके अन्त और उन्मूलन में इस्लाम ने जो भूमिका निभायी यह इस्लाम का असली चेहरा है। दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो अपने अपराध और पाप को छिपाने के लिये दूसरों के धर्म और उसके अनुयाइयों पर झूठे आरोप लगाते हैं, इस समय एक आरोप यह भी लगाया जाता है कि इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है जबकि इस्लाम का आतंकवाद और अमानवीय गतिविधियों से दूर का भी संबन्ध नहीं है। इस्लाम धर्म की यह स्पष्ट शिक्षा है कि एक निर्दोष की हत्या

पूरी मानवता की हत्या है। मानव सम्मान के बारे में इससे उत्तम शिक्षा क्या हो सकती है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने जीवन के हर मोड़ और पल में अपने अनुयाइयों को दया, करूणा, सदभावना और सौहार्द की शिक्षा दी है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के जीवन काल की घटना है। आप एक बगीया से गुज़र रहे थे, वहां पर एक घोड़े को रोते हुये देखा तो आपने पूछा कि इस घोड़े का स्वामी (मालिक) कौन है पता चला कि इस घोड़े का मालिक एक अनसारी सहाबी हैं, आपने अपने सहाबी (साथी) से कहा कि इस घोड़े की सहीह तरीके से देख भाल करो, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० को घोड़े के आंसू को देखकर अन्दाजा हो गया था कि इस जानवर की सहीह ढंग से देख रेख नहीं हो रही है, आपने तुरन्त इसका समाधान किया। आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि जो धर्म एक जानवर की आखों में एक बूंद आंसू को सहन नहीं कर सकता वह किसी निर्दोष की हत्या को कैसे बर्दाश्त कर सकता है?

इस्लाम के दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर एक बार शाम (सीरिया) के दौरे पर गये हुये थे, वहां उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को देखा जो कि कोढ़ के मर्ज में थे, आपने संबन्धित जिम्मेदार को आदेश दिया कि उमर भर इन बीमारों की देख रेख का प्रबन्ध किया जाये। यहां पर हज़रत उमर ने न उनके धर्म के बारे में पूछा न उनके समुदाय के बारे में पूछा? तुरन्त सरकारी फण्ड से सहायता देने का ऐलान कर दिया। दया, करूणा की इस तरह की घटनाओं से पूरा इस्लामी इतिहास भरा पड़ा है।

इन्साफ अम्न व शान्ति की बुनियाद है, इस मामले में इस्लाम का इतिहास अत्यंत उज्जवल है और न्याय के बारे में उसने जो सिद्धांत पेश किये हैं वह बेमिसाल है, हर छोटे बड़े को इन्साफ देना इस्लाम की आस्था का एक भाग है। न्याय की एक मिसाल देखिये, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने एक व्यक्ति से कर्ज लिया था, और अपने कर्ज को हासिल करने के लिये उस शख्स ने अत्यंत दुष्टता का प्रदर्शन किया, आपके साथियों ने इस शख्स के गलत व्यवहार को देखते हुये उस को सजा देना चाहते थे लेकिन ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने इसके गलत व्यवहार को नजरअन्दाज और मआफ कर दिया और अपने अनुयाइयों को शिक्षा दी इस को छोड़ दो, वह सत्य पर है और सत्य पर रहने वाले को सत्य बात कहने का पूरा पूरा अधिकार है।

मक्का के जीवन में ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० और आपके प्यारे साथियों के साथ मक्का के अहंकारियों और घमंडियों ने ताकत के नशे में जो दुर्व्यवहार किया वह इतिहास के पन्नों में मौजूद है, सताने के जितने भी तरीके हो सकते हैं सबको आजमाया गया, एक वक्त ऐसा भी आया, कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० और आपके साथियों को अपनी जन्म भूमि भी छोड़नी पड़ी, और उनको पेड़ के छाले खाने पर मजबूर

किया गया लेकिन इन तमाम अत्याचार के बावजूद एक वक्त ऐसा भी आया कि ईश्दूत और आपके साथियों को मक्का पर विजय प्राप्त होने के बावजूद, वहां के तमाम अत्याचारियों को माफ करने का ऐलान कर दिया, इसी प्रकार से ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपनी जान के दुश्मनों को ताकत रखने के बावजूद मआफ कर दिया।

यह सब वाकआत यह साबित करने के लिये काफी हैं कि इस्लाम पूरी दुनिया में अम्न व शान्ति के क्याम का ध्वजावाहक है, वह पूरी मानवता की भलाई चाहता है हर एतबार से विकास चाहता है, दुनिया में अम्न व शान्ति की स्थापना का सबसे बड़ा वाहक है, वह अशान्ति को बर्दाश्त नहीं करता वह अन्याय को सहन नहीं करता है, वह पूरी मानवता को सुख शान्ति में देखना चहता है, और बिगड़े हुये लोगों को सीधे पथ पर लाना चाहता है, इस्लाम का मानना है कि सबके साथ समता का व्यवहार करके, सदभावना का तरीका अपना करके, सौहार्द का रास्ता अपना कर के और सह-अस्तित्व के द्वारा पूरी दुनिया में सहीह मायनों में अम्न व शान्ति की स्थापना की जा सकती है।

किसी धर्म पर झूठे आरोप लगाना समस्या का हल नहीं है, जो धर्म इतने अच्छे विचार रखता है, विश्व शान्ति चाहता है उस पर आतंकवाद के प्रोत्साहन का आरोप कैसे लगाया जा सकता है, इसलिये ज़रूरत है कि हम सभी इन्सान, चाहे वह किसी वर्ग, समुदाय अथवा धर्म से सबन्ध रखते हों, वह एक दूसरे के धर्म के बारे में सहीह ज्ञान हासिल करने की कोशिश करें क्योंकि अज्ञान और भ्रम इन्सान को सहीह रास्ते तक नहीं ले जाता और सहीह ज्ञान न होने के कारण स्वार्थी लोग भटकाने में कामयाब हो जाते हैं। आइये हम संकल्प करते हैं कि एक दूसरे को समझने की कोशिश करेंगे आपस में प्रेम भाव से रहेंगे, किसी को दुख नहीं पहुंचायेंगे, किसी का माल अवैध तरीके से नहीं लेंगे, एक दूसरे के धर्म और धर्म गुरूओं का सम्मान करेंगे झूठे आरोपों से दूर रहेंगे, अपने पड़ोसियों के दुख दर्द में शामिल रहेंगे, गरीब की मदद करेंगे, अत्याचारी को कानून और धर्म की सीमा में रहते हुये अत्याचार से रोकेंगे, सत्य की राह पर चलेंगे, सहीह रास्ते की तरफ ले जायेंगे, यही सब काम विश्व शान्ति की बुनियाद हैं, इस्लाम इन सब कामों का सपोट करता है और जीवन के हर मोड़ पर एक अच्छा इन्सान बन कर रहने और एक अच्छे समाज के गठन पर बल देता है, इसलिये हमारा लक्ष्य वही होना चाहिये जो हमें सफलता की ओर ले जाये।

९-१० मार्च २०१८ को ''विश्व शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक से होने वाली मर्कज़ी जमीअत की इस कांफ्रेन्स में देश के विभिन्न जमाअतों, संगठनों के प्रतिनिध और समाजी हस्तियां भाग ले रही हैं। इस कांफ्रेन्स में विभिन्न समाजी समस्याओं का समाधान पेश किया जायेगा। ❑❑❑

शराब के नुकसानात
मानवता की सुरक्षा और हमारी जिम्मेदारियां

अब्दुल्ल जब्बार सलफी, मुंबई

संसार के अन्दर पाये जाने वाले धर्मों में से एक धर्म इस्लाम भी है। यह एक विश्वव्यापी धर्म है। इस्लाम का अर्थ सुरक्षा और अम्न व शान्ति है। इस्लाम का प्रथम मकसद पूरी दुनिया में अम्न व शान्ति की स्थापना करना है उसकी शिक्षाएं पूरी मानवता के लिये दया करूणा और अम्न व अमान का वाहक है। मानव जीवन का कोई ऐसा कोण नहीं है जिस पर इस्लाम ने प्रकाश न डाला हो इन्हीं शिक्षाओं में से एक शिक्षा मानवता की सुरक्षा है। इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को मानव सुरक्षा के बारे में जो पाठ दिया है वह इस्लाम की अपनी विशिष्ट खूबियों में से है इस्लाम ने पूरी मानवता को जो सुरक्षा प्रदान की है वह अपनी मिसाल आप है। सबसे पहले इस्लाम ने मानवता को सुरक्षा प्रदान करते हुये उसे सम्मान दिया है और सभी जानदारों में उसे श्रेष्ठ करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''हमने आदम की औलाद को बड़ी इज्जत दी'' (सूरे इसरा-७०) यह सम्मान इन्सान होने की हैसियत से हर इन्सान को प्राप्त है चाहे मुसलमान हो या किसी भी समुदाय से हो क्योंकि यह सम्मान अन्य सृष्टि जानदार, बनस्पति और जमादात (निजीर्व) आदि के मुकाबले में है। और सबसे अहम बात यह है कि दुनिया के सभी इन्सान एक ही मां बाप की औलाद हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ लोगो! हमने तुम सबको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया और इसलिये कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो कुंबे कबीले बना दिये हैं''। (सूरे हुजुरात-१३)

इस्लाम ने मानवता को आध यात्मिक, शारीरिक, समाजी और आर्थिक एवं जानी हर एतबार से सुरक्षा प्रदान किया है।

मानवता को शारीरिक और आध्यात्मिकत सुरक्षा देते हुये इस्लाम ने शराब और अन्य मादक पदार्थों जैसी घातक चीज़ों को हराम करार देकर उनसे दूर रहने का आदेश दिया है। और मादक पदार्थों से समाज और मानव जीवन पर होने वाले बुरे प्रभाव से भी आगाह किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है :

''ऐ ईमान वालो! बात यही है कि शराब, जुवा और थान वगैरह और पांसे के तीर यह सब गन्दी बातें शैतानी काम हैं उनसे बिल्कुल अलग रहो ताकि तुम सफल हो। शैतान तो यूं चाहता है कि शराब और जुवा के जरिये तुम्हारे आपस में दुश्मनी और वैमनस्य (बुग्ज) पैदा कर दे और अल्लाह की याद और नमाज से तुम को बाज रखे''। (सूरे माइदा ९१-९०)

कुरआन की इस आयत में शराब के साथ जुवा, थान और फाल के तीरों को गंदा और शैतानी काम करार देकर स्पष्ट शब्दों में

इनसे बचने का आदेश दिया गया है इसके अलावा शराब और जुवा के नुकसानात बयान करके उनसे दूर रहने का उपदेश और निर्देश दिया गया है। केवल यही नहीं बल्कि तमाम मादक पदार्थों को हराम करार देते हुये ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया हर मादक पदार्थ खुमर और हर खुमर (अक्ल को ढांप देने वाली चीज) हराम है।

इस्लाम ने इन्सान की इज्जत, प्रतिष्ठा और उसके सम्मान को सुरक्षा देने की खातिर समाज में पायी जाने वाली तमाम बुराइयों, अश्लीलताओं और खबासतों को अपराध करार दिया है और उनके खात्मे के लिये दण्ड तय की है।

मानव जीवन को बाकी रखने के लिये माल की बड़ी अहमियत है इसी के मददे नज़र इस्लाम ने इन्सानों को आर्थिक सुरक्षा दी है और ऐसे हालात पैदा करने की तरफ मानव समाज की रहनुमाई की है जिसमें कोई ऐसा वर्ग पैदा न हो जो जबरदस्ती दूसरों के रोजगार और संसाधन पर कबजा करके उन्हें बुनियादी ज़रूरतों से वंचित कर दे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और एक दूसरे का माल नाहक (असत्य) तरीके से न खाया करो न शासकों को रिश्वत पहुंचा कर किसी का कुछ माल अत्याचार से लो हांलांकि तुम जानते हो (इसका अंजाम क्या होता है) सूरे बकरा १८८

और विशेषरूप से मुसलमानों को संबोधित करते हुये फरमाया ''ऐ ईमान वालो अपने आपस के माल नाजायज (अवैध) तरीके से मत खाओ मगर यह कि तुम्हारी आपस की रजामन्दी से क्रय विक्रय हो'' (सूरे निसा-२६)

नाहक और गलत तरीके से दूसरे का माल खाने का एक दुष्ट तरीका सूद भी है इसी लिये कुरआन ने सूद को हराम करार देते हुये फरमाया ''ऐ ईमान वालो बढ़ा चढ़ा कर सूद न खाओ, अल्लाह तआला से डरो ताकि तुम्हें मुक्ति मिले'' (सूरे आल इमरान-१३०)

किसी दूसरे का माल गलत तरीके से खाने का एक तरीका चोरी भी है इस्लाम ने चोरी करने वालों की भी सजा तय की है। यह दण्ड इस्लाम ने इसलिये तय की है ताकि समाज से इन तमाम अपराधों का अन्त हो सके और एक आदर्श समाज वजूद में आये और मानवता चैन और सुकून की सांस ले सके।

इस्लाम इन्सान की जान की सुरक्षा में भी पीछे नहीं रहा उसने अंधकाल में जीवित दफन कर दी जाने वाली बच्चियों को भी सुरक्षा प्रदान किया जो इन्सान अभी तक बेटी की पैदाइश को अपने लिये लज्जा, अपमान और ऐब समझता था और पैदा होते ही जीवित कब्र में दफन कर देता था वही इन्सान बेटी को कष्ट नहीं करूणा समझने लगे यहां तक कि बेटी को अपने तर्के का वारिस भी बनाया।

इस्लाम के आने से पहले मोहताजी के भय से औलाद की हत्या एक साधारण सी बात थी। इस्लाम ने कहा ''अपनी औलाद को खर्च के डर से कत्ल न करो हम उनको भी रोजी देते हैं और तुमको भी, निसन्देह उनकी हत्या बड़ा पाप है'' (सूरे इसरा ३१) यह कह कर इस्लाम ने हत्या पर पाबन्दी लगा दी और एक निदोर्ष की हत्या को पूरी मानतवा की हत्या और एक निर्दोष जान की सुरक्षा

पूरी मानवता की सुरक्षा करार दिया। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो उसने गोया कि तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया''। (सूरे माइदा ३२)

नाहक कत्ल को हराम करार देते हुये ईश्वर ने फरमाया ''और जिस का खून करना इस्लमा ने हराम कर दिया उस को कत्ल मत करो, हां मगर हक के साथ''। (सूरे अंआम १५१)

इस्लाम ने मानवता को सुरक्षा देने और उसे शानित पूर्ण जीवन प्रदान करने के लिये दुनिया से फितना और फसाद को खत्म करके अम्न व शान्ति स्थापित करने के लिये दण्ड तय किये और फसाद बरपा करने वालों को दण्डित करने का आदेश दिया। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''उनकी सजा जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा से लड़ते और जमीन में फसाद करते फिरें यही है कि वह कत्ल कर दिये जायें या सूली पर चढ़ा दिया जायें या विपरीत दिशा से उनके हाथ पांव काट दिये जायें या उन्हें जिला वतन कर दिये जायें, यह तो हुआ उनका सांसारिक अपमान और परलय में उनके लिये बड़ा भारी अज़ाब है''। (सूरे माइदा-३३)

बात यहीं तक सीमित नहीं बल्कि इस्लाम ने जंग के वातावरण में भी मानवता की सुरक्षा और सम्मान का तरीका सिखाते हुये बताया कि, बगावत न करना, बेइमानी से बचना, बच्चों, औरतों और बूढ़ों की हत्या न करना, मरने वालों की लाशों का अपमान मत करना, वचन न तोड़ना, फसलों को बर्बाद न करना, जानवरों और पक्षियों को नुकसान न पहुंचाना, और जो लोग तुम्हारे विरूद्ध जंग में न शरीक हों उनपर हथियार न उठाना।

हम मुसलमानों पर निम्न जिम्मेदारियों लागूं होती हैं।

हम स्वंय तकवा पहरेजगारी अपनायें और दूसरों को तकवा का हुक्म दें क्योंकि यही कठिनाइयों से सुरक्षा का माध्यम और कामयाबी की राह है।

लोगों के दिलों में सांसारिक एवं परलय के प्रकोप का डर पैदा करें।

मानवता की महानता का अर्थ इनसान के दिलों में बिठायें

मानवता की सुरक्षा के लिये इस्लाम की शिक्षाओं को स्पष्ट करें।

हम इस्लाम की शिक्षाओं को स्वयं अपने जीवन का भाग बनायें और लोगों को भी इससे अवगत करायें। हमारी जिम्मेदारी है कि आपसी सहयोग प्रेम माफी तलाफी, का वातावरण पैदा करें समाज से वैमनस्यता, घमण्ड, प्रतिशोध, ध ोका, कत्ल और गारतगरी का खात्मा करें, गरीबों अनाथों की मदद करें इसी में पूरी मानवता की भलाई है।

नसली भेदभाव को मिटा कर मुहब्बत और भाई चारा का माहौल पैदा करें

जगह जगह कांफ्रेन्स और सेमीनार का आयोजन किया जाये और उसमें सभी धर्मों के लोगों को आमंत्रित किया जाये और उनके सामने मानवता की सुरक्षा के बारे में इस्लाम की जो शिक्षाएं हैं उनको उजागर किया जाये।

34 वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के अवसर पर विशेष आयोजन

इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक

अबू अदनान सईदुर्रहमान सनाबिली

इस्लाम दया करूणा और अम्न व शान्ति का धर्म है, इस्लाम ने सिसक्ती इन्सानियत को सुख और संतोष की दौलत दी। पीड़ित को उसका अधिकार दिया, अत्याचारी को अत्याचार से रोका, यतीमों, बेवाओं और मोहताजों की देख भाल की, परेशान हाल, अधिकार वंचित, बीमार के साथ हमदर्दी मुहब्बत व सहायता और सांत्वना की शिक्षा दी, लड़ाई झगड़ों से मुक्ति दिलायी। इस्लाम ने एक निर्दोष इन्सान के कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है। मुस्लिम और गैर मुस्लिम पड़ोसियों के अधिकार अदा करने और उनके समाजी मामलात में हमदर्दी और शुभचिंतन पर बल दिया है। अत्याचार को हर तरह से हराम करार दिया है। इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को इस्लाम के प्रचार की इजाज़त तो दी है लेकिन धर्म के मामले में किसी पर जबरदस्ती करने पर रोक लगा दी है।

इस्लाम अम्न व शान्ति और सुलह समझौते का सबसे बड़ा वाहक है इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कुरआन ने ऐसे अल्लाह का तसव्वुर पेश किया है जो कृपालू और दयालू है और कुरआन ने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का परिचय इन शब्दों में कराया है ''और हमने आपको पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजा है'' इस्लाम ने बिना भेदभाव सबसे प्रेम का पाठ सिखाया है क्योंकि यह धर्म प्रेम धर्म है जिसमें कदम कदम पर अल्लाह से प्रेम, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद से प्रेम, मुसलमानों से प्रेम, पूरी मानवता से प्रेम यहां तक कि अल्लाह की पूरी सृष्टि से प्रेम की शिक्षा दी गयी है।

इस लेख में उन यथार्थ का उल्लेख किया गया है जिससे मालूम होता है कि इस्लाम धर्म अम्न का वाहक और शान्ति का प्रचारक है और हिंसा, अतिवाद, आतंकवाद का सबसे बड़ा विरोधी है।

अत्याचार निन्दित कार्य है, अल्लाह तआला न्याय को पसन्द करता है और अत्याचार को अप्रिय समझता है क्योंकि अत्याचार अम्न व शान्ति व्यवस्था को भंग कर देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आले इमरान-५७)

संसार में अत्याचार करने वाले क्यामत के दिन अल्लाह के प्रकोप के शिकार होंगे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और चूंकि तुमने दुनिया में जुल्म किया था, इसीलिये आज तुम्हारी यह बात तुम्हें कोई भायदा नहीं पहुंचाएगी तुम सब अज़ाब में शरीक हो'' (सूरे जुखरूफ ३६)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद

स०अ०व० ने फरमायाः खबरदार! जिस किसी ने किसी जिम्मी पर अत्याचार किया या उसकी तनकीस (उसके अधिकार में कमी) की या उसकी ताकत से बढ़कर उसे किसी बात का मुकल्लफ किया या उसकी हार्दिक खुशी के बगैर कोई चीज़ ली तो क्यामत के दिन मैं उसकी तरफ से पक्षकार बनूंगा। (अबू दाऊद ३०५२, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

अल्लाह तआला फितना और फसाद फैलाने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता है वह अम्न व शान्ति को पसन्द करता है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''अल्लाह की दी हुयी रोज़ी से खाओ और पियो और ज़मीन में फसाद न करते फिरो''। (सूरे बक़रा ६०)

कुरआन में अल्लाह तआला कहता है ''और कोई आदमी ऐसा होता है जिसकी बात दुनियावी जिन्दगी में आपको पसन्द आ गयी और अल्लाह को अपने दिल की सच्चाई पर गवाह बनाता है हालांकि वह बदतरीन झगड़ालू होता है और वह जब आपके पास से लौटता है तो वह ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करता है और खेतों और मवेशियों को हलाक करता है और अल्लाह फसाद को पसन्द नहीं करता है''। (सूरे बकरा २०४-२०५)

यह हकीकत है कि एक इन्सान जिस की वह उपासना करता है तो वह उससे अथाह मुहब्बत करता है और अपने पूज्य को दुनिया की तमाम चीज़ों के मुकाबले ज्यादा चाहता है इसलिये जब कोई किसी के पूज्य (माबूद) को बुरा भला कहेगा तो दूसरा भी बदले में दूसरे के माबूद को गाली देगा जिससे समाज में अशान्ति होने की शंका है इसी लिये इस्लाम में दूसरों के पूज्यों को बुरा कहने से रोका गया है।

इस्लाम धर्म की बुनियाद ही नर्मी और आसानी पर है। इस धर्म में किसी भी तरह की मामूली जबरदस्ती की गुंजाइश नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''दीन के मामले में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं है''। (सूरे बकरा २५६)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि किसी भी इन्सान को इस्लाम धर्म में दाखिल होने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता।

इस्लाम के इतिहासिक अध्ययन करने से यह बात सपष्ट हो जाती है कि जब भी मुसलमान किसी शहर या एलाके में गये तो वहां के लोगों को इस्लाम पर मजबूर नहीं किया बल्कि उन्हें अपने धर्म पर बाकी रहने का अधिकार दिया जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है।

इस्लाम ने इन्सानी जानों को अत्यंत सम्मान्नीय करार दिया है।

इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने इन्सानी जान की हत्या को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

"इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फ़साद करने की सजा के मारता है वह गोया तमाम लोगों को कत्ल करता है और जिसने किसी नफ़्स (प्राण) को जीवित रखा तो उसने गोया सब लोगों को जिन्दा रखा है। (सूरे माइदा ३२)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने मुआहिद को कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा और यकीनन उसकी खुश्बू चालीस साल की दूरी तय करने पर महसूस की जाती है। (बुखारी ३१६६)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया यहूदी ईसाई और मुआहिद की दिय्यत एक मुसलमान की दिय्यत की तरह है। मुसन्नफ अब्दुर्रज्जाक ६७,८६/१)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सानों के अधिकार के सिलसिले में क्यामत के दिन सबसे पहले नाजायज खून बहाने के बारे में प्रश्न होगा। (सहीह बुखारी ८६६४)

इस्लाम में किसी भी धर्म के धर्म गुरूओं के कत्ल को हराम करार दिया गया है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया गददारी न करना, ध ोका न देना, लाशों को अपमानित न करना, बच्चों और पादरियों को कत्ल न करना। (मुसनद अहमद २७३८ मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा ३३३२ मुस्नद अबू याला २५४६)

अल्लाह ने कुरआन में किसी के पूज्य को गाली देने से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और ऐ मुसलमानो! तुम उन लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं इसलिये कि वह बिना जाने समझे ज्यादती करते हुये अल्लाह को गाली देंगे"।

यह हकीकत है कि एक इन्सान जिस की वह उपासना करता है तो वह उससे अथाह मुहब्बत करता है और अपने पूज्य को दुनिया की तमाम चीज़ों के मुकाबले ज्यादा चाहता है इसलिये जब कोई किसी के पूज्य (माबूद) को बुरा भला कहेगा तो दूसरा भी बदले में दूसरे के माबूद को गाली देगा जिससे समाज में अशान्ति होने की शंका है इसी लिये इस्लाम में दूसरों के पूज्यों को बुरा कहने से रोका गया है।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने एक बार चूटियों के बिल को देखा कि उसे जला दिया गया है तो आपने कहा आग से अजाब देने का अधिकार आग के रब के अलावा किसी के लिये वैध ा नहीं है। (सुनन अबू दाऊद २६७५ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

इस हदीस से आप अन्दाजा लगायें कि जब इस्लाम में एक दुख देने वाले जानदार को आग से जलाना हराम है तो फिर इन्सान को जलाना कैसे जायज और दुरूस्त हो सकता है?

राष्ट्रीय सदभावना और मानवीय सेवा

मुहम्मद जुनैद मक्की

देश की सुरक्षा, विकास, दृढ़ता के लिये सांप्रदायिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय सदभावना महत्वपूर्ण तत्व है। हम हिन्दुस्तानी हैं हिन्दुस्तान हमारा मातृ भूमि है, हमें इससे प्रेम है इसलिये हमें ऐसे आन्दोलनों में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिये जो राष्ट्रीय सदभावना में सहायक हों ताकि देश को सांप्रदायिकता, गुटबन्दी, पक्षपात, हिंसा और घृणा के वातावरण से निकाल कर एकता, सदभाव, भाईचारा, प्रेम और मानवता एवं समानता की राह पर लाया जा सके। इस वक्त ज़रूरत इस बात की है कि सांप्रदायिक सदभावना, भाई चारा की बका एवं सुरक्षा के लिये देश वासियों को जागरूक किया जाये। इसके लिये मुस्लिम काइदों, ओलमा, बुद्धिजीवियों और अन्य धर्म के गुरूओं को आगे आने और मिल जुल कर इस पैगाम को अवाम तक पहुंचाने की ज़रूरत है।

किसी भी देश और राष्ट्र की तरक्की के लिये राष्ट्रीय सदभावना का होना आवश्यक है अगर लोगों में एकता न हो तो देश कमजोर हो जायेगा और इसकी व्यवस्था बिखर जायेगी। देश की सभ्यता हजारों साल से चली आ रही है यहां के विभिन्न मत और विभिन्न धर्मों की शक्ल में विभिन्न रंग बिरंगे, भाँत भाँत के फूलों से सजा हुआ यह गुलदस्ता ही इसकी चमक हैं जब अनेकता में एकता हो जाती है तो वहीं से राष्ट्रीय सदभावना का अमल (प्रक्रिया) शुरू हो जाता है। राष्ट्रीय सदभावना की अगर परिभाषा की जाये तो हम कह सकते हैं कि जब किसी देश के भौगोलिक सीमाओं में रहने वाले लोग व्यक्तगत रूप से अलग पहचान रखने के बावजूद सामूहिक मामलों में एक जैसे ख्याल वाले हो जायें और आपस में एकता और मिल जुल कर रहने का व्यवहारिक आदर्श पेश करें तो यह राष्ट्रीय सदभावना होगी।

अंग्रेज़ों के खिलाफ गांधी जी और मौलाना अबुल कलाम अज़ाद और अन्य राष्ट्रीय नेताओं के तत्वाध ाान में स्वतंत्रता संग्राम का आन्दोलन चलाया जा रहा था। अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान में फूट डालो और हुकूमत करो की पालीसी अपना रखी थी ऐसे माहौल में देश में राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देना समय की महत्वपूर्ण मांग थी इस जरूरत को कवि अल्लामा इकबला ने अपनी कविता के द्वारा बहुत हद तक पूरा किया। स्वतंत्रता आन्दोलन में जहां कहीं सियासी सभाएं होती थीं वहां पर राष्ट्रीय तराने के तौर पर इकबाल का यह तराना गाया जाता था और आज़ादी के बाद भी हिन्दुस्तान में

राष्ट्रीय एकता के प्रदर्शन और देश के वफादारों के जजबे को उभारने के लिये इकबाल के इस तराने को गुनगुनाया जाता था तराने के शुरू ही में इकबाल ने यह कह कर कि

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा

हम बुलबुलें हैं उसकी यह

को धर्म के नाम पर मतभेद करने से रोकते हुये कहते हैं।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दुस्तानं हमारा

यह कविता राष्ट्रीय सदभावना एवं एकता का प्रतिनिधि कविता है। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान में धर्म के नाम पर हिन्दुओं और मुसलमानों में मतभेद पैदा करने की जो साजिश की थी इस मतभेद को हमेशा के लिये खत्म करते हुये इकबाल कहते हैं कि तमाम धर्म एक दूसरे का सम्मान करना सिखाते हैं इकबाल ने यह कहते हुये कि हम हिन्दी हैं और हमारा वतन हिन्दुस्तान है उन तमाम सामप्रदायिक ताकतों को मुंह तोड़ जवाब है जो इस देश में मुसलमानों के देश प्रेम के जजबे पर शक करते हैं जबकि तारीख गवाह है कि इस देश को जब भी ज़रूरत पड़ी मुसलमानों ने अपना खून बहा कर और अपनी जानों को निछावर करके देश की रक्षा की है जिसका स्वीकार आज़ाद भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने खुल कर किया है। इकबाल कहते हैं

चिश्ती ने जिस जमीं में पैगामे हक सुनाया

नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया

तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया

जिसने हेजाजियों से दुश्ते अरब छुड़ाया

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है

हिन्दुस्तान हमेशा से विभिन्न सभ्यताओं का संगम एवं स्थल रहा है लेकिन इस समय गिने चुने मुटठी भर लोग देश की इस एकता और राष्ट्रीय सदभावना को देखना नहीं चाहते इस देश की अमन व शान्ति के वातावरण को दूषित करने के लिये जहर घोल रहे हैं ऐसा करने वाले देश के वफादार नहीं हो सकते, देश के शुभचिंतक नहीं हो सकते। बलिक अगर हकीकत की निगाह से देखा जाये तो यह देश को नफरत का गढ़ बना कर हिन्दू मुस्लिम और अन्य वासियों की एकता को विखेरना चाहते हैं। नफरत, फूट भेदभाव सांप्रदायिकत की न इस्लाम इजाज़त देता है और न अन्य धर्म और न ही यह मानवता का रास्ता है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कांफ्रेन्स और इस प्रकार की अन्य गतिविधियां इस लिये हैं कि देश की एकता अखण्डता बाकी रहे। हिन्दू मुस्लिम और अन्य देशबन्धु मिल जुल कर प्रेम अम्न व शान्ति के वातावरण में जीवन गुजारें। हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध गुरू स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्या का बयान भी इस पृष्टिभूमि में उल्लेखनीय है कि इस समय देश के सांप्रदायिक सदभावना को खत्म करने का प्रयास चिंता जनक है इससे देश और तकसीम की तरफ बढ़ रहा है

इसलिये जरूरत इस बात की है कि देश के तमाम धर्मों के गुरू सामने आयें और राष्ट्रीय सदभावना की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

इस सिलसिले में मौलाना आज़ाद का जीवन हमारे लिये आदर्श है उन्होंने आज़ादी पाने के लिये राष्ट्रीय सदभावना के सिद्धांत को बढ़ावा दिया और सेकुलर भारत के निर्माण और मानव सेवा में महत्वपूर्ण रोल अदा किया। आप का राजनीतिक जीवन देश भक्ति की भावना के लिये समर्पित था और वह लोगों के बीच प्रेम और भाईचारा का जजबा रखते थे। उन्होंने एक अवसर पर अपने जजबात को व्यक्त करते हुये कहा था कि आज अगर एक फरिश्ता आसमान की बुलन्दियों से उतर आये और कुतुब मीनार पर खड़ा हो कर यह ऐलान कर दे कि स्वराज (आजादी) २४ घंटे के अन्दर मिल सकता है शर्त यह है कि हिन्दुस्तान हिन्दू मुस्लिम एकता से दूर हो जाये तो मैं स्वराज से दूर हो जाऊंगा मगर आपसी एकता से पीछे नहीं हटूंगा क्योंकि अगर स्वराज मिलने में देरी हुयी तो यह हिन्दुस्तान का नुकसान होगा लेकिन अगर हमारी एकता जाती रही तो यह पूरी मानवता का नुकसान होगा।

मौलाना अबुल कलाम के इस भाषण से अनदाज़ा लगाया जा सकता है कि वह आपस में मिल जुल कर रहने और राष्ट्रीय सदभावना को कितना महत्वपूर्ण समझते थे।

यहां पर मौलाना आज़ाद के उल्लेख का मकसद यह है कि हम इससे सबक हासिल करें कि राष्ट्रीय सदभावना को काम में लाते हुये देश को सकारात्मक राहों पर कैसे लाया जाये।

आज ज़रूरत इस बात की है कि राष्ट्रीय सदभावना और लोकतांत्रिक संघर्ष के द्वारा पूरे देश बल्कि पूरी दुनिया में रंग नस्ल धर्म मसलक सियासी, और क्षेत्रीय विभाजन से ऊपर होकर मानव सेवा की जाये। इस हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मानव जीवन में भलाई, नेकी, हमदर्दी साधारण भावना बन जाये तो मानव समाज स्वर्ग समान हो जाये। इसलिये मालदारों को हुक्म दिया गया है कि मानवता के निमार्ण और दूसरों के दुख दर्द में जितना खर्च कर सकते हो करो, अपनी ज़रूरतों से बचा कर दूसरे ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत पूरी करो। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया अल्लाह अपने बन्दे की उस वक़्त तक मदद करता रहता है जब तक कि बन्दा अपने दूसरे भाई की मदद करता है।

इसलिये हमारी यह कोशिश होनी चाहिये कि इस देश में राष्ट्रीय सदभावना के द्वारा जरूरतमन्दों बेवाओं, मरीजों बेरोज़गारों, प्राकृतिक आपदा सैलाब, जलजला के प्रभावितों के लिये और इन्सानों के गम व खुशी के अवसर पर उनकी मदद के लिये मानव सेवा का संगठित व्यवस्था बनायी जाये और ईमानदारी के साथ बिना किसी भेद भाव के दुखी इन्सानियत की सेवा की जाये।

❑❑❑

विश्व शान्ति की स्थापना में इमामों की भूमिका

खुर्शीद आलम मदनी, पटना

इस्लाम अम्न व शान्ति और इन्सानों के बीच भलाई, सौहार्द को बढ़ावा देने वाला धर्म है, यह दया एवं करूणा और अम्न व मुहब्बत का दीन है जो पूरी मानवता को सुख और राहत प्रदान करता है। नफरत के वातावरण को समाप्त करके अम्न व मुहब्बत की शिक्षा देता है।

इस्लाम उदारता, सुरक्षा और मानवतावादी धर्म है जो पूरी मानवता को आतंकवाद और रक्तपात से सुरक्षित रखता है।

पूरी मानवता पर इस्लाम का सबसे बड़ा उपकार यह भी है कि उसने संसार को अम्न व शान्ति का स्थल बनाया। इन्सानों के दिलों में प्यार, और अम्न व शान्ति की भावना को विकसित किया और एक दूसरे को आपस में मिल कर रहने का उपदेश दिया। समाज को अशान्ति से पवित्र रखने समाज एवं वातावरण को शांतिपूर्ण बनाने पर बल दिया। कुरआन में अल्लाह तआला ने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० को पूरी मानवता के लिये करूणा और रहमत करार देते हुये फरमाया "हमने आपको पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजा"। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० को संसार में संदेशवाहक बना कर भेजे जाने के बाद न केवल अरब बल्कि पूरी दुनिया के मजलूमों को अम्न व सुकून हासिल हुआ। हजरत मुहम्मद स०अ०व० ने अरब में जीवित दफन की जाने वाली बच्चियों को बचाया, औरतों को अत्याचार से निकाला कमजोरों और गुलामों को ज्यादती से छुटकारा दिलाया, अनाथों, बेवाओं के अधिकार दिलाये, जानवरों, और पक्षियों पर अपना करूणा निछावर किया।

इस्लाम चाहता है कि इन्सान दुनिया में अम्न व शान्ति के साथ अभय होकर जीवन व्यतीत करे, इस्लाम यह सहन नहीं करता कि इन्सानों का एक वर्ग अपनी ताकत के बल पर दूसरे वर्ग को गुलाम बना ले और उस पर अत्याचार करे, इस्लाम की दृष्टि में फितना फसाद संगीन अपराध है।

ऐसे लोगों की कोताह सोच पर बड़ा अफसोस होता है जो इस्लाम धर्म को हिंसा का धर्म करार देते हैं और आतंकवाद का रूख इस्लाम और मुसलमानों की तरफ फेर देते हैं जबकि हकीकत इसके बिल्कुल विपरीत है।

शान्ति स्थापना में आदरणीय इमाम महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं उनके ऊपर समाज के सुधार की बड़ी जिम्मेदारी डाली गयी है उनका प्रयास यही रहता है कि वह पूरी मानवता दुनिया और आखिरत में कामयाब हो जाये।

हर शहरी नेकी और संयम से सुसज्जित हो और एक आदर्श पूर्ण नागरिक की हैसियत से अपनी जिन्दगी गुजारे। इमामों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास रहता है वह कुरआन की इस आयत की व्यवहारिक व्याख्या हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

"और तुम में से एक ऐसी जमाअत होनी चाहिये जो भलाई की तरफ बुलाये और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग सफलता पाने वाले हैं"। (सूरे अलइमरान१०४)

इसलिये वह भलाई का आदेश देते हैं बुरे आचरण और अमानवीय चरित्र से रोकते हैं, क्रोध, जोश, प्रतिशोध से बचने और उच्च आचरण अपनाने का आमंत्रण देते हैं और यह ऐसे कर्म हैं जिनसे समाज में अम्न व शान्ति की बहार आती है।

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि मदर्से अम्न व शान्ति के सन्देशवाहक हैं, यह अम्न व शान्ति के ऐसे स्थल हैं जिन से न्याय, समानता, प्रेम, उदारता और अंहिसा की आवाजें बुलन्द की जाती हैं, यह अच्छे आचरण के संरक्षक हैं यहां की मिटटी से इन्सान बनाये जाते हैं।

आदरणीय इमामों के प्रारंभिक जीवन के ८-१० साल इनही मदर्सों में गुज़रते हैं जहां इन्हें शान्ति स्थापना के नियम और सुनहरे सिद्धांत पढ़ाये जाते हैं, वैचारिक गुमराही, और फितना व फसाद के निन्दित प्रभाव से इनका ब्रेनवाश किया याता है और इन के दिल व दिमाग में मानवता भाईचारा, देश शक्ति की अहमियत बिठाई जाती है उनको यह शिक्षा दी जाती है कि एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाना स्वर्ग में प्रदेश का सबब बनता है और किसी बिल्ली को भूख से मार डालना जहन्नम में जाने का सबब बन जाता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले, इसने गोया तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया"। (सूरे माइदा ३२)

उनको यह सीख दी जाती है कि देश समुदाय की पासदारी, अम्न पसन्दी, मानवता दोस्ती, हमारा कर्तव्य और शैली होनी चाहिये।

अब आप फैसला करें कि जो लोग ऐसे आध्यात्मिक और इन्सानी वातावरण में शिक्षा पाते हैं उन्हें मानवता से कितना प्रेम होगा वह मानवता के कितने शुभचिंतक होंगे और यही वह लोग हैं जो अम्न व शान्ति की स्थापना में सहायक साबित हो सकते हैं और अपने उच्च आचरण से मानवता की कश्ती को सफलता के क्षोर पर पहुँचा सकते है।

❑❑❑

आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें

डा० ईसा खान अनीस
अमीर सूबाई जमीअत अहले हदीस हरियाणा

आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें
खौर अपने लिये सिर्फ माँगें तो कया?
आइये खौरे उम्मत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें
हुस्ने अखलाक, हुस्ने अमल, हुस्ने खू
हर अदा अपने असलाफ के हू बहू
जेर हो जायेगा खुद बखुद हर अदू
हुस्ने सीरत व सूरत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें
पासदारे रिवायाते अस्लाफ बन
जिन से मिलता है राहे हुदा का चलन
अब अंधेरों में बन रोशनी की किरण
आओ रूश्दो हिदायत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें
अम्न व राहत की खुश्बू फिजाओं में हो
अम्ने आलम का नग़मा सदाओं में हो
बुग्ज व नफरत से तौबा दुआओं में हो
आओ मिल कर मुहब्बत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें
शैख असगर की जुर्अत को सद मरहबा
शैख हारून की हिम्मत को सद मरहबा
सारे अरकां की मेहनत को सद मरहबा
आइये रब से नुसरत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते दीन व मिल्लत की बातें करें
अनीस ''अम्ने आलम'' का उन्वां है खूब
चुना कल्बे देहली का मैदां है खूब

जहां से जो आया वह मेहमां है खूब
आओ मेहमां की खिदमत की बातें करें
आओ कुरआन व सुन्नत की बातें करें
खिदमते कौम व मिल्लत की बातें करें

(बाक़ी सफा २ का)

''जिसने एक इन्सान को नाहक कत्ल कर दिया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल कर दिया''।

एक प्रश्न दिमाग़ में आ सकता है कि आखिर एक इन्सान की जान इतना अधिक महत्वपूर्ण क्यों है? इसका जवाब यह है कि चाहे दुनिया हो या उसकी कोई नेमत तमाम चीज़ों को अल्लाह तआला ने इन्सान ही की राहत और आराम के लिये पैदा किया है। अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करके फरिश्तों जैसी आज्ञाकारी मखलूक के द्वारा उन्हें सजदा करवाया और इस प्रकार से मानवता सम्मान की एक महान मिसाल काइम की। फिर अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम की राहत और सुख के लिये उनकी बीवी को पैदा किया और उन दोनों को इस दुनिया में बसाया और दुनिया में एक से एक कीमती नेमतों का प्रबन्ध किया। अब यह सभी इन्सान जो क्यामत तक इस संसार में जन्म लेंगे वह आदम और हव्वा ही की तो औलाद हैं जिनके लिये यह दुनिया सजायी गयी है। अब अगर मानवीय प्राण की हत्या का सिलसिला यूं ही चलता रहेगा तो फिर इस संसार को बसाने का अल्लाह का पलान ही फेल होकर रह जायेगा इसी लिये अल्लाह ने एक इन्सान के नाहक कत्ल को इतना बड़ा अपराध करार दिया है और लोगों को यह सन्देश दिया है कि वह दुनिया की अम्न व शान्ति को गारत करने की कोशिश न करें बल्कि मानवता की सुरक्षा और अस्तित्व के लिये और अम्न व शान्ति की स्थापना के लिये जो कुछ भी कर सकते हैं उससे लापरवाही न करें क्योंकि अल्लाह को यही अपेक्षित और प्रिय है कि दुनिया सदैव अम्न व शान्ति का स्थल बनी रहे। लोग अम्न व सुख के साथ रहते हुये अपने एक पालनहार की उपासना करें मुसलमान स्वयं भी फ़साद और उपद्रव से दूर रहें और इस्लाम की मानवतावादी शिक्षाओं और अम्न व शान्ति की स्थापना के सन्देश से दुनिया के वासियों को वाकिफ़ करायें ताकि आज विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों की बिना पर दुनिया में जो तनाव और खून ख्राबे का वातावरण बना हुआ है वह समाप्त हो, लोग अम्न व शान्ति की अहमियत को समझें और अपने वक्ती और निजी स्वार्थ के लिये विश्व शान्ति को बर्बाद करने के लिये त्तपर न हों।

आज के दौर में जबकि असहिष्णुता, हिंसा, आतंकवाद, इन्सानी जानों और प्राकृतिक संसाध ों की बर्बादी जैसी घातक समाजी बीमारियाँ मानव समाज को बर्बाद करने के लिये तत्पर हैं और लोगों में ज्ञान और सूझ बूझ की कमी की वजह से जुवा, शराब नोशी, चोरी, डकैती, खियानत, व्यभिचार और एक दूसरे पर अत्याचार जैसे समाजी नासूर मानवता के लिये घातक साबित हो रहे हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने समय के एक सुलगते शीर्षक पर एक भव्य कांफ्रेन्स का आयोजन करके मानवता की भलाई के लिये एक सराहनीय कदम उठाया है। जरूरत इस बात की है कि हम सब लोग बिना भेद भाव धर्म एवं समुदाय विचार धारा व जमाअत मानवता और शान्ति स्थापना के इस अभियान से जुड़ें और इस्लाम के अम्न व मानवतावादी सन्देश को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने का प्रयास करें।

❑❑❑

भाई चारा, सदभावना और आज़ादी

नौशाद अहमद

इस्लाम ने भाई चारे के लिये जो दृष्टिकोण पेश किया उसका आधार अत्यंत दृढ़ है और यह समाज के हर वर्ग को लाभान्वित करता है, अगर किसी वर्ग या विशेष समुदाय को भाईचारा से वंचित कर दिया जाये तो इस भाई चारे का वह फल नहीं मिलता या उसका वह परिणाम सामने नहीं आता जो इस्लामी भाईचारे की आधार शिला है।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''ऐ लोगो अपने परवर दिगार (पालनहार) से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और इसी से उसकी बीवी को पैदा करके उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दी, उस अल्लाह से डरो जिसके नाम पर एक दूसरे से मांगते हो और रिश्ते नाते तोड़ने से भी बचो बेशक अल्लाह तआला तुम पर निगेहबान है।'' (सूरे निसा-१)

कुरआन की इस आयत में इन्सानों से संबोधित करते हुये कहा गया है कि जब तुम एक ही मां बाप से पैदा किये गये हो तो फिर आपस में एक दूसरे से भेद भाव क्यों? इस्लाम ने धर्म के अन्तर को किसी के साथ भेदभाव की बुनियाद बनाने की निन्दा की है। इस्लाम की नज़र में इन्सान की हैसियत से सब बराबर हैं। हर वर्ग का जरूरतमन्द मदद का पात्र है, मदद करते वक्त उसके समुदाय को नहीं बल्कि उसकी ज़रूरत को देखा जाये गा, भाई चारा के बारे में इस्लाम की यह स्पष्ट शिक्षा और सिद्धांत है और इसी शिक्षा और सिद्धांत पर इस्लाम के सच्चे अनुयायी चलते रहे। दूसरे खलीफा हज़रत उमर रजिअल्लाहो तआला अल्लाहो एक बार शाम की यात्रा पर गये थे, रास्ते में कोढ़ के मर्ज़ में लिप्त कुछ गैर मुस्लिम लोगों को देखा तो बेचैन हो गये। आप ने इन लोगों के धर्म को न देखते हुए उनकी इन्सानी ज़रूरत को देखा और यह आदेश दिया कि इनको वजीफा जारी किया जाये ताकि इनकी जिन्दगी की ज़रूरत पूरी हो सके। यह भाई चारे का एक उज्जवल इतिहास है। एक मय्यत को देख कर ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० खड़े हो गये पैरवी में आप के प्यारे साथी (सहाबा) भी खड़े हो गये किसी ने बताया कि ऐ ईश्दूत यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है तो आपने कहा कि यह भी तो इन्सान है।

सदभावना, एक दूसरे के बारे में अच्छी राय रखने एक दूसरे का सम्मान करने और एक दूसरे को समझने का नाम है। हम जिस देश में रहते हैं वहां पर विभिन्न धर्मों और मतों के लोग रहते और बस्ते हैं, एक दूसरे के धर्म का सम्मान रखते हुये मिल जुल कर रहना, सदभावना का मूल सिद्धांत है इस्लाम ने इस सिद्धांत को समाज में लागू करके दिखाया है

इस्लाम के इतिहास को पढ़कर इस दावे की हकीकत को समझा जा सकता है इस्लामी शासन काल में अन्य वर्गों और समुदायों के साथ जो व्यवहार रहा है यह इस बात की ठोस दलील है।

आज़ादी की सोच संसार के हर हिस्से में पायी जाती है इस्लाम ने आज़ादी के बारे में जो विचार पेश किये हैं वह भी एक आदर्श की हैसियत रखते हैं। इस्लाम में धर्म अपनाने की आज़ादी का जो दृष्टिकोण पेश किया गया है वह अत्यंत अनोखा और स्पष्ट है। कुरआन ने स्पष्ट शब्दों में एलान किया है कि धर्म के मामले में कोई जोर जबर दस्ती नहीं है, इस्लाम और मुसलमानों ने कभी भी धर्म के मामले में जोर जबरदस्ती की वकालत नहीं की है, कुरआन में दूसरी जगह पर यह साफ एलान है ''तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये है और मेरा दीन मेरे लिये है''। धर्म के मामले में आज़ादी की इससे स्पष्ट शिक्षा क्या हो सकती है। भाई चारा, सदभावना और आज़ादी इन तीनों का इस्लाम ने सपोट किया है जो इस्लाम के

आज़ादी की सोच संसार के हर हिस्से में पायी जाती है इस्लाम ने आज़ादी के बारे में जो विचार पेश किये है वह भी एक आदर्श की हैसियत रखते हैं। इस्लाम में धर्म अपनाने की आज़ादी का जो दृष्टिकोण पेश किया गया है वह अत्यंत अनोखा और स्पष्ट है। कुरआन ने स्पष्ट शब्दों में एलान किया है कि धर्म के मामले में कोई जोर जबर दस्ती नहीं है, इस्लाम और मुसलमानों ने कभी भी धर्म के मामले में जोर जबरदस्ती की वकालत नहीं की है, कुरआन में दूसरी जगह पर यह साफ एलान है ''तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये है और मेरा दीन मेरे लिये है''। धर्म के मामले में आज़ादी की इससे स्पष्ट शिक्षा क्या हो सकती है।

बारे में सही ज्ञान नहीं रखते हैं वह कुछ लोगो के गुमराहकुन लेख को पढ़कर इस्लाम के बारे में भ्रमित हो जाते हैं, लेकिन हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम एक दूसरे धर्म के बारे में संपूर्ण ज्ञान रखने की कोशिश करें ताकि कोई भी हम को भ्रमित करने में कामयाब न हो सके। हमें यह भी याद रखना चाहिये और यह सोचना चाहिये कि किसी एक व्यक्ति के गलत कर्म को बुनियाद बना कर किसी धर्म को निशाना नहीं बनाया जा सकता, दुनिया की कोई किताब और दुनिया का कोई भी कानून इस की वकालत नहीं करता है और यह अक्ल के भी खिलाफ है।

आइये हम यह संकल्प करते हैं कि हम एक दूसरे के धर्म को संपूर्ण रूप से समझने की कोशिश करेंगे और एक दूसरे के बारे में बदगुमानी से बचें गे और इन्सान की हैसियत से एक दूसरे का सम्मान करेंगे।

दहेज की रोक थाम कैसे की जाये

लेखकः मौलाना समर सादिक रियाजी

मानवता की सुरक्षा कई पहलुओं से नारी–सुरक्षा पर निर्भर है और दहेज मानवता और नारी दोनों के लिये घातक है। (संपादक)

हमारे समाज में कुछ रिवाजों ने इस तरह घुसपैठ बना ली है कि इस्लाम की साफ सुथरी छवि भी धूमिल हो गयी। कुछ लोगों को छोड़ कर हर शख्स इन रस्मों में इस तरह फंस गया है कि उसने यह अन्तर ही मिटा दिया है कि इन रस्मों का इस्लाम से भी कोई संबन्ध है कि नहीं? बल्कि यह भी समझा जाने लगा है कि इस्लाम का इन रस्मों से कोई टकराव नहीं बल्कि उसके अनुकूल है। अफसोस तो इस बात पर है कि अवाम तो अवाम पढ़े लिखे लोगों पर भी इन रस्मों का ऐसा जादू चला कि वह भी, सही, और गलत में फर्क से महरूम (वंचित) हो गये। इस लेख में समय की एक बुरी रस्म दहेज की कुर्आन व हदीस और सहाबा के रहन सहन की रोशनी में समीक्षा की गयी है? इस बात पर ज्यादा जोर डाला और छान बीन की कोशिश की गयी है कि क्या वास्तव में इस का इस्लाम से कोई संबन्ध है।

अल्लाह कुर्आन में फरमाता है ''ऐ मोमिनो आपस में एक दूसरे का माल बातिल (असत्य) तरीकों से ना खाओ'' शब्द ''बातिल'' में जाल साज़ी, मक्कारी सूद और जोर जबरदस्ती की तमाम सूरतें शामिल हैं और जहेज़ भी माल समेटने का एक ऐसा तरीक़ा है जिसकी इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है बल्कि जहेज़ के नाम पर एक दूसरे का माल खाने में जोर जबरदस्ती भी है और हीला और मक्कारी भी, रसूल स० के आदर्श से लापरवाही और सहाबा के तरीकों की तौहीन और दूसरों का अनुसरण भी है।

इसमें किसी का मतभेद (इख्तेलाफ) नहीं है कि जहेज़ (दहेज) की मांग बिलकुल हराम और अवैध है लेकिन क्या बिन मांगे जहेज के नाम पर मिलने वाला सामान सूफा, वाशिंग मशीन कूलर, फ्रीज साइकिल कार और कैश लेने की इजाज़त इस्लाम देता है। हम तमाम मुसलमानों के लिये जरूरी करार दिया गया है कि अपने तमाम मामलात में हज़रत मुहम्मद स० के जीवन को माडल बनायें। जैसा कि अल्लाह फरमाता है ''तो जो लोग अल्लाह और क्यामत पर यकीन रखते हैं उनके लिये अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० की जिंदगी में बेहतरीन आदर्श है'' इसलिये हज़रत मुहम्मद स० की जिंदगी का मुतालआ (अध्ययन) करते हैं कि क्या नबी स० ने अपनी लड़की दामाद या समधी को शादी के मौके पर कुछ दिया या खुद

अपनी शादी के मौके पर बिन मांगे जहेज के नाम पर कुछ लिया? छिछोरपन पर उतरे कुछ लालची आरोप (इलजाम) लगाते हैं कि नबी स० ने हजरत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर जमाने के अनुसार जहेज (दहेज) दिया था इसलिये अगर कोई शख्स अपनी ख़ुशी से वक्त और जरूरत के मुताबिक गाड़ी घोड़ा रूपये पैसा देता है तो कोई हर्ज की बात नहीं है, यह आप पर और आप के इंसाफ पर बड़ा झूठा आरोप है। यह कैसे मुम्किन है कि इंसाफ वाहक मुहम्मद० स० फातिमा को जहेज का सामान दें और दूसरी बेटियों को इससे महरूम (वंचित) करें ऐसा वही कर सकते हैं जो अपने मकसद को पूरा करने के लिये जहेज के बैक ग्राउंड और असबाब से मुंह फेरते हैं अथवा उपेक्षा करते हैं। हकीकत यह है कि आपने हज़रत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर कुछ छोटी मोटी चीज़ें इस लिये दी थीं कि आप हजरत अली के सरपरस्त (अभिभावक) थे और हजरत अली के पास घर बसाने के लिये कुछ नहीं था आपने बाप की हैसियत से अली को घर बसने के लिये थोड़ी मोड़ी सामग्री (सामान) दिया था। मतलब यह है कि यह कुछ चीज़ें जिन्हें जहेज़ का नाम दिया जाता है फातिमा को नहीं बल्कि असल में हजरत अली को सहायता के तौर पर दिया था क्योंकि अगर आप ने फातिमा को जहेज दिया होता तो इंसाफ के मुताबिक अपनी तमाम बेटियों को जहेज देते। फर्ज की जिये अगर मुहम्मद स० ने अपने दामाद या बेटी को जहेज का कुछ सामान दिया था तो यह दलील पकड़ी जा सकती है कि अगर किसी का दामाद गरीब हो, परेशान हाल हो और बाप की छाया से महरूम (वंचित) हो तो उसको जहेज दिया जा सकता है लेकिन लोग ऐसे गरीब और बेमाल वालों के यहां शादी करने के लिये क्यों नहीं सोचते, उनकी निगाह ऊपर ही उठती है और इच्छा यह होती है कि कोई खाते पीते घराने का रिश्ता मिल जाये तो उसके यहां अपनी बेटी का रिश्ता लगा दें चाहे इसके लिये जमीन ही क्यों न बेचनी पड़े, कर्ज से दब जाना पड़े, तब भी पीछे नहीं हटेंगे। मेआर और कसौटी में कितना अंतर है। एक तरफ मुहम्मद स० एक गरीब परेशान हाल को सहारा देना चाहते हैं कि अब घर आबाद हो जाये और दूसरी तरफ ख़ुशी के नाम पर जहेज इस लिये दिया जा रहा है कि उसकी बेटी ठाट बाट की जिंदगी गुजारे और हर तरफ से उसकी तरफ से दिये जाने वाले जहेज की खूब चर्चा हो जाये। अगर मुसलमान होने का दावा है तो क्यों नहीं नबी के जीवन को आदर्श बनाते और क्यों नहीं सलफे सालिहीन के नक्शे कदम पर चलना अपनी सफलता समझते। उनकी शादियों में परेशानी, ताम झाम और महीनों से तैयारी दूर दूर तक नजर नहीं आती है। रिश्ता पसंद हो जाने के बाद शादी हो जाती, लेन देन शादी में रूकावट नहीं बनता किसी गरीब की बेटी पैसा ना

होने के सबब अपने बाप के घर बैठी बूढ़ी नहीं होती शादियों में नबी के आदर्श से मुंह मोड़ने का अंजाम हम भुगत रहे हैं। इबाहियत (जायज है, कोई गुनाह नहीं मिलेगा) का फितना समाज को खोखला कर रहा है। मुहम्मद स० ने सच फरमाया ''जब तुममें से कोई शादी का संदेश दे जिसकी दीनदारी और चरित्र से तुम राज़ी हो जाओ तो उसकी शादी कर दो, अगर ऐसा नहीं किया तो जमीन में फसाद (बिगाड़) पैदा हो जाये गा''।

यहां पर एक ऐसे शख्स की शादी का वर्णन (जिक्र) किया जा रहा है जिन्होंने मालदार होने के बावजूद बड़ी सादगी से अपनी शादी रचाई उस महान व्यक्ति का नाम अब्दुर्रहमान बिन औ़फ है। इनकी शादी की खबर नबी स० को भी नहीं हो पायी एक दिन आप की निगाह अब्दुर्रहमान बिन औफ पर पड़ी उनके कपड़े पर लगे जाफरानी रंग को देख कर पूछा तो कहा कि मैंने शादी कर ली है, फिर आप ने पूछा कि महर कितनी दी है? यह नहीं पूछा कि जहेज के समान में क्या क्या मिला और ना यह शिकायत की कि तुम मुझे बारात क्यों नहीं ले गये। एक ऐसा आदमी जिस पर सहाबा जान निछावर करने के लिये तैयार रहते थे, उनको बारात की दावत ना देना हमको क्या पैगाम देता है? इसका मतलब यही ना हुआ कि नबी स० और सहाबा की शादियों में बारात का तसव्वुर ही नहीं था। आज कल अगर किसी करीबी रिश्तेदार ही नहीं बल्कि किसी आम आदमी को बारात की दावत ना दें तो मुंह लटका ले गा और सबसे शिकायत करता हुआ आपके वलीमे का बायकाट करेगा।

बारात पर जब आलोचना की जाती है और कहा जाता है कि चार छः लोग जाकर लड़की को ले आयें तो कुछ स्वार्थी लोग इस आलोचना का यह जवाब देकर बारात ले जाने का फतवा जारी करते हैं कि अगर कोई शख्स खुशी से बारात बुलाता और दावत खिलात है तो बारात पर बेतुका एतराज नहीं करना चाहिये, लेकिन दावत खिलाने का इतना शौक है तो गांव के सौ दो सौ गरीबों को दावत खिला कर या हर दिन दो चार गरीबों को खाना खिलाकर दावत खिलाने का शौक क्यों नहीं पूरा करता, सवाल है कि आखिर चार छः लोगों को बारात जाने या ले जाने का सुबूत कहां से मिल गया? ऐसे लोग कुर्आन और हदीस का हवाला या सुबूत मांगते हैं! वही बतलायें कि हम बतलायें क्या? रही बात पचास साठ बारातियों की तो क्या कोई खुशी से यह अजाब सहने के लिये तैयार है, खुशी नहीं मजबूरियां सुख नहीं, बल्कि यह रस्म व रिवाज की मेहरबानी है कि खुशी के नाम पर वह बारात बुलवाने पर तैयार हो जाता है, कहने का मतलब यह है कि लड़की का बाप यह तमाम मुतालबा मजबूर होकर खुशी के नाम पर मान लेता है। उन खाते पीते घरानों का कोई एतबार नहीं होगा जो अपनी दौलत दिखाने के लिये बारात लाने और जहेज

भी देने की जिद करते हें जब कि वह झूठे होते हैं उनको अपनी बेटी को विरासत का हक देने के बारे में कोई चिंता नहीं होती है और ना अपने बेटों को उन का हिस्सा देने की वसिय्यत करते हैं और भाइयों के कबजा करने के चलन को देखते हुये ना ही उनका हिस्सा दिलाने का कोई इंतेजाम करते हैं। एक ऐसी चीज (बारात जहेज) जिसका इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं उसके लिये इसरार और सिफारिश करना और इस्लाम के एक हुक्म (वरासत) को पैरों तले रौंद डालना क्या दीन से लापरवाही नहीं है?

बारात ले जाने के पक्षधर ओलमा से एक सवाल करते हैं कि उन चोर बारातियों के खाने का हिसाब किस की गर्दन पर जायेगा जो बुलाये नहीं जाते मगर लड़के वाले उसे भी साथ ले लेते हैं। मिसाल के तौर पर यह तय होता है कि सौ बाराती आयें गे लेकिन २५ या ५० ज्यादा पहुंचते हैं अब वही बतायें कि इन २५ और ५० चोर बारातियों का हिसाब किस के जिम्मे होगा। लेकिन लड़की का बाप यह मुसीबत भी हंसी खुशी कुबूल कर लेता है को मानने से इंकार कर दे तो बात बिगड़ सकती है क्या खैरूल कुरून के मुसलमान बारात जैसी खुराफात से आगाह थे अगर यह नेकी और भलाई की बात होती तो वह यह काम करने के लिए बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते। कहने का मतलब यह है कि खुशी के नाम पर लड़की के सरपरस्त ही को हर बोझ बर्दाश्त करना पड़ता है जब कि लड़की के बाप का दिल बेटी को भेजने के तसव्वुर से ही चूर चूर हो जाता है, जो शख्स अपने दिल के टुकड़े को एक अंजानी जगह के लिये भेज रहा हो वह भला खुश क्यों होगा? लड़की के बाप ने अपने दिल के टुकड़े को लड़के बालों के हवाले करके उन पर बड़ा उपकार किया है एहसान का बदला तो सिर्फ एहसान से ही दिया जा सकता है। लेकिन यहां तो मामला बिलकुल उलटा है कि वह लड़की भी दे रहा है और उसी को लूटा भी जा रहा है।

दहेज के भूखे कहते हैं कि लड़की के अभिभावक (सरपरस्त) हंसी खुशी से दहेज देते हैं।

एक दो प्रतिशत किसी हद तक शरीफ होते हैं और किसी से कोई मांग नहीं करते मगर अपने समधी की जेब पर ललचाई हुयी निगाह जरूर डालते हैं। लड़की का अभिभावक (सरपरस्त) जब पूछता है कि कोई मांग मुराद भी है तो वह कहता है जो आप की खुशी हो, दे देना, जबकि उसे तो यह कहना चाहिये कि आप ने लड़की देकर मेरे ऊपर एहसान का ऐसा बोझ लाद दिया है कि मैं उसका बदला नहीं चुका सकता।

अभी वक्त है इसलिये बहनों को वरासत में हिस्सा देकर जहन्नम का ईंधन बनने से बचें और दूसरों को भी बचायें और कुरआन व सुन्नत से अपने घरों को आबाद करें।

आइये हम संकल्प और वचन लेते हैं कि दहेज जैसे नासूर के खिलाफ हर संभव प्रयास करने के साथ, इससे बचने की भी कोशिश करेंगे। आमीन

❑❑❑

जहेज़

(दहेज विरोधी कविता)

सालिक बस्तवी

ओढ़नी बर्क़ की है राख की चटाई है
मुफ्लिसी खींच के यह आग में ले आयी है
हुस्न जिस गुल का रहा तौबा शिकन तक़्वा शिकन
एक नाकदरे के घर उसको कजा लायी है
गुंचा लबे गुंचा दहन एक परी का पैकर
खार की सीज पे क्यों नींद की शैदायी है
घर में मां बाप के थी आज तलक घर का चिराग
उसके ससुराल में तजलील है रूस्वाई है
हाय इस जाति की तुम कदर गंवा बैठे हो
जिसकी आगोश में नबियों ने जिला पायी है
जिसके कदमों तले मिलती है जन्नत की बहार
ज़र परस्तों को यह नेमत कहां रास आयी है
हम मिटायेंगे यहां लानत सामाने जहेज
हमने सालिक यह बसद् दे अज़्म कसम खायी है

इमरान हुसैन
Imran Hussain
खाद्य एवं आपूर्ति, पर्यावरण एवं वन,
चुनाव मंत्री
Minister of Food & Supplies,
Environment and Forest, Elections.

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
Govt. of National Capital Territory of Delhi
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली-110002
Delhi Secretariat, I.P. Estate, New Delhi-110002
Tel No. : 23392067, 23392123, Fax : 23392055

D.O. No. F.MOFSEFE/2018/588.
Date : 05/03/18

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारत की सबसे प्राचीन मुस्लिम संगठन मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द 09–10 मार्च, 2018 को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में **"मानवता के विकास और शान्तिपूर्ण समाज के गठन में इमामों और खतीबों का रोल"** के शीर्षक से कांफ्रेन्स का आयोजन कर रही है।

मैं उम्मीद करता हूं कि यह कांफ्रेन्स पूरे देशवासियों और पूरी मानवता के लिए महत्वपूर्ण साबित हो । इमामों और खतीबों का समाज के सुधार और देश में अम्न व शान्ति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पूरी मानवता अम्न व शान्ति की बात करने वालों के साथ है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महासचिव, मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी और अन्य सभी पदधारियों को इतनी भव्य कांफ्रेन्स के आयोजन पर बधाई देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि यह कांफ्रेन्स सारी मानव जाति के हक में लाभप्रद साबित हो ।

(इमरान हुसैन)

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
महासचिव
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द
4116, उर्दू बाजार, जामा मस्जिद,
दिल्ली–110006

पेड़ लगाएं जीवन बचाएं

इस्लाम में कैदियों के अधिकार

शिफाउल्लाह

इस्लाम ने अपने मानने वालों को यह आदेश दिया है कि कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये, उन्हें हर परेशानी से बचाया जाये, इस्लाम अपने अनुयाइयों को यह भी शिक्षा देता है कि पीड़ित को उसका अधिकार दिलाने के लिये जालिम को सहीह रास्ते पर लाया जाये। कुरआन की सूरे दह्र में ऐसे लोगों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है जो अपना खाना जरूरत के बावजूद कैदियों को खिलाते हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''वह लोग कैदियों को इसलिये खाना खिलाते हैं ताकि अल्लाह की खुशी हासिल की जाये''। (सूरे दह्र-८)

यह बात उल्लेखनीय है कि वह कैदियों को इस लालच में नहीं खिलाते कि उन्हें कोई सवाब या बदला मिलने वाला है बल्कि हम तो तुम्हें (कैदियों) को केवल अल्लाह की खुशी के लिये खिलाते हैं हम तुम से कोई बदला और शुक्रगुजारी नहीं चाहते हैं''। (सूरे दह्र-९)

उमर बिन अब्दुल अजीज फरमाते हैं ''गैर मुस्लिम कैदी का जब तक फैसला न हो जाये उसको खिलाया पिलाया जाये और अच्छी तरह से रखा जाये।''

काजी (जस्टिस, न्यायधीश) अबू यूसुफ ने ने खलीफा हारून रशीद को इस्लाम की शिक्षाओं की रोशनी में निर्देश जारी किया था कि कैदियों को उनकी स्थिति के अनुसार खाने पीने की व्यवस्था कीजिये, उनको मासिक वजीफा (पेंशन) तय कर दीजिये और किसी ऐसे ईमान दार को उनका अधिकारी नियुक्त किया जाये जो तमाम कैदियों का इन्देराज (हिसाब किताब) रखे।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के जमाने में छः हजार कैदियों को बिना शर्त के रिहा कर दिया गया।

ईश्दूत हज़तर मुहम्मद स०अ०व० के जमाने के एक कैदी अबू उजैर का बयान है कि मैं जिन मुसलमानों की देख रेख में था वह स्वयं तो खुजूर और मामूली चीज खा कर गुजारा कर लेते थे और मुझे रोटी और अच्छा खाना देते, मुझे शर्म आती थी लेकिन वह मुझे आग्रह और अनुरोध करके खिला देते थे और यह सब कुछ इस बुनियाद पर था कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने इन लोगों को हम कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दे रखा था।

यह तो केवल कुछ मिसालें हैं, इनके अलावा असंख्य मिसालें हैं जो हदीस और ईश्दूत की जीवनी पर आधारित किताबों में मौजूद हैं जिन से यह पाठ मिलता है कि इस्लाम ने हर हाल में मानव अधिकार की सुरक्षा, मजलूम की मदद और कैदियों से मानवीय व्यवहार और उनके साथ प्रेम भाव करने की प्रेरणा दी है और मुसलमानों को इसका पाबन्द बनाया है स्वयं ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से इसकी व्यवहारिक मिसालें इतिहास में मौजूद हैं।

लेकिन यह कितने खेद की बात है कि इन तमाम मिसालों के बावजूद आज इस्लाम पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह कैदियों को तो क्या पूरी मानवता को उसके अधिकार से वंचित रखता है। मुसलमानों पर यह भी एक निराधार आरोप है कि उसने इस्लाम के प्रचार में नाहक लोगों को कैद किया लेकिन यह सब बात इतिहास और ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ० की जीवनी पर आधारित किताबों से झूठ साबित हो चुकी है। इस्लाम मानव अधिकार का रक्षक और कैदियों के साथ अच्छे व्यवहार रखने का झण्डावाहक है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस का परिचय और उद्देश्य

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हिन्दुस्तान की सबसे पराचीन मुस्लिम संगठन है जिसकी स्थापना १९०६ में हुई थी, अपने स्थापना दिवस ही से वह दीन, देश और समाज की सेवा उच्च स्तर पर करती रही है इसके संस्थापक देश के स्वतंत्रता सेनानी ओलमा थे जो देश को विखरने से बचाने के लिये और सामप्रदायिकता के नाम पर देश को टुकड़े टुकड़े करने वाली शक्तियों के खिलाफ थे और जात पात और धर्म की बुनियाद पर किसी भी बटवारे को निरस्त कर दिया था और हिन्दुस्तान के हक़ में मुसलमानों का वोट दिलवाया था। प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना अब्दुल मजीद हरीरी सऊदी अरब में पूर्व सफीर, मौलाना अब्दुल वहाब आरवी आदि इसके सदस्य और अगुवा रह चुके हैं। स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अब्दुल कय्यूम रहमानी और हकीम अब्दुस्समद मुरादाबादी स्वतंत्रता सेनानी का अभी जल्द ही निधन हुआ है। आज भी इसके सैकड़ों नौजवान मुल्क की रक्षा में फौज़ी की हैसियत से काम कर रहे हैं। जमाअते अहले हदीस के हज़ारों मदर्से व मस्जिदें देश भर में शैक्षिक गतिविधियाँ जारी रखे हुये हैं। जमीअत की २१ सूबाई शाखाएं हैं जिसके तीन करोड़ से अधिक लोग देश भर में समाज सुधारक कामों में लगे हुये हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ९-१० मार्च २०१८ को राम लीला मैदान में ''विश्व-शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा'' के शीर्षक से ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स का आयोजन कर रही है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सदैव देश और मानवता की सेवा में पेश पेश रही है और शान्ति के सन्देश को फैलाने पर विश्वास रखती है और इसमें इसके प्रयास बिलकुल स्पष्ट हैं। मुल्क दुश्मन तत्वों के किसी भी आमानवीय कृत्य की निंदा करती रही है क्यों कि यह चीज़ उसके सिद्धांतों के विपरीत है। जमीअत अहले हदीस जिस कुरआन व हदीस को मानने की दावेदार है उसकी शिक्षाएँ इंसान दोस्ती और देश की सेवा को अनिवार्य और फर्ज क़रार देती हैं। यही सन्देश अपनी कानफ्रेन्सों, सेमीनारों सिम्पोजियमों कंवेन्शनों और अपने चारों भोंपू हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी पत्रिकाओं और दूसरी किताबों के द्वारा सार्वजनिक करती रहती है।

इसी जमाअत के संबंध में प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि ''अगर हम तराज़ू के एक पलड़े में पूरे हिन्दुस्तान के सारे लोगों की खिदमात को रखें और दूसरे पलड़े में सादिक़ पुर (अहले हदीस) की ख़िदमात को रखें तो अहले सादिक़ पुर का पलड़ा भारी पड़ेगा''।

हमारी सरकार शिक्षा के मैदान में जो काम और प्रयास कर रही है उसमें हमारी जमाअत भी अपनी गाढ़ी कमाई से स्थापित मदर्सों के द्वारा भरपूर भाग ले रही है और इसके द्वारा हर तरह के समाज सुधारक काम

कर रही है। खास तौर से गरीब और पिछड़े लोगों के उत्थान के लिये प्रयास करती रही है। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी इस संस्था के कायकर्ताओं ने बुहत बड़े पैमाने पर काम किया है। देश भर में जमाअत अहले हदीस के अनेक टेकनिकल कालेज राष्ट्र के बच्चों को आधुनिक शिक्षा से लैस करने में लगे हुये हैं। यह जमाअत पहले की तरह आज भी मानवता की सेवा में व्यस्त है। आतंकवाद इस वक़्त की सबसे बड़ी समस्या और देश के लिये सबसे बड़ी चुनौती है। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द आतंकवाद विरोधी संघर्ष में देश बन्धुओं के साथ बराबर की साझीदार है। वह अपने मदर्सों और मस्जिदों से आतंकवादी तत्वों की निंदा करती है और उनके मनोबल को तोड़ती है, देश में कहीं भी कोई आतंकी कार्रवाई होती है तो मर्कजी जमीअत उस की निंदा करती है प्रेस रिलीज जारी करके आतंक फैलाने वाले तत्वों के खिलाफ मेनडेट बनाती है इतना ही नहीं आज से दो साल पहले लगभग पचास ओलमा के हस्ताक्षर से फतवा जारी करके आतंकवाद को इस्लामी शिक्षा और मानवता के खिलाफ करार दिया था।

मर्कजी जमीअत ने १८ मार्च २००६ को दिल्ली में ''आतंकवाद वक्त का सबसे बड़ा नासूर'' के शीर्षक से अंसारी आडीटोरियम जामिया मिल्लिया इस्लामिया में एक नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन किया था जिसमें आतंकवाद की निंदा की गयी थी इस सिम्पोज़ियम में पूर्व प्रधान मंत्री वी.पी. सिंह और तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल ने शिर्कत की। इसी तरह २३ जुलाई २००६ को दिल्ली में एक नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन किया गया था जिसका शीर्षक था ''इस्लामी मदर्से मानवता के सेवक हैं आतंकवाद के अडडे नहीं'' इसी तरह लगभग दरजन भर अहले हदीस मुफ्ती ओलमा के हस्ताक्षर से आतंकवाद के विरोध में फतवा भी जारी किया। इसके अलावा इस संस्था ने ''दाइश और आतंकवाद के उन्मूलन में राष्ट्रीय सदभावना की भूमिका'' के शीर्षक से १६ मार्च २०१७ को एक सेमीनार आयोजित कर चुकी है, इसी प्रकार १५ फरवरी २०१५ को ''विश्व आतंकवाद, दाइश की स्वयंभू खिलाफत और इस्लाम का शान्ति सन्देश'' के शीर्षक से राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम आयोजित कर चुकी है और दाइश के खिलाफ लिखित फतवा दिया, २८ दिसंबर २०१५ को ''सदभावना, सांप्रदायिक सौहार्द की महत्ता एवं आवश्यकता'' पर राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम का आयोजन किया आतंकवाद और दाइश के खिलाफ सबसे पहले लिखित सामूहिक फतवा मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हदीस हिन्द ने दिया जिसकी पूरी दुनिया में प्रशंसा और सराहना की गयी।

यह संगठन, जुमा, कानफ्रेन्स, सेमीनार और दूसरे समारोह के द्वारा समाज को सुधारने का काम करती है रोजाना हजारों परिवारिक और समाजी समस्यायें पैदा होती हैं, उनके समाधान में मस्जिदों और मदर्सों के रोल की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बहुत से समाज सुधारक काम इन्हीं मदर्सों और मस्जिदों की देन हैं, इस को सभी लोग स्वीकार करते हैं।

क़ुर्आन और हदीस के अनुसार हमारा यह ऐलान है कि जानी दुश्मन के साथ भी न्याय करो, प्रतिशोध की भावना से किसी को न सताओ। छोटों पर दया करो, और बड़ो के साथ सम्मान के साथ पेश आओ, गरीबों को खाना खिलाओ, अनपढ़

और गंवार लोगों की गलतियों को नजर अंदाज करो, भलाई का हुक्म दो, बुराइयों से रोको, यह तुम्हारे अच्छे इंसान और अच्छी उम्मत होने की पहचान है।

इस्लामी शिक्षाओं की एक खूबी यह भी है कि वह हर जमाने के लिये है। उसकी तालीम है कि शिक्षा सुरक्षा और शान्ति को बढ़ावा दो, परिवारिक विद्वेष और भेद भाव की बुनियाद पर सारी नाइंसाफियों को निरस्त कर दो, इंसानियत दुश्मन रीति को समाज से मिटा दो, यह सारा काम अल्लाह की खुशी और मानवता की भलाई की भावना से होना चाहिये। इस्लाम की नजर में लूट खिसोट, घोटाला, दुश्मनी, घमंड, धूम्रपान आदि हराम हैं। इंसान दोस्ती और दूसरों के साथ हत्या लूट मार को शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के बाद सबसे बड़ा पाप माना जाता है। कुरआन में है जिसने एक जान को बिना जुर्म और फसाद के मार डाला तो समझो उसने सारे इंसानों को मार डाला और जिसने एक इंसान की जान बचाई समझो उसने सारे इंसानों की जान बचा ली। जंग में भी दुश्मन के बच्चों बूढ़ों औरतों पूजा करने वालों और पूजा स्थलों में मौजूद लोगों पर हाथ उठाना महा पाप है, खेती और दूसरी सम्पदाओं को जलाना या नुकसान पहुंचाना हराम है। इस्लाम औरतों के अधिकार का सबसे बड़ा समर्थक है एक तरफ जहां एक बच्ची को तालीम देने पर जन्नत की खुशखबरी सुनायी जाती है वहीं यह पाठ दिया जाता है कि औरत हर हाल में सम्माननीय है, जन्नत उसके कदमों के नीचे है और बाप भाई और दूसरे मर्दों की तरह वरासत में हिस्सेदार है।

इस्लाम ने शान्ति, मानवीय अधिकार को समझने और मानवीय अधिकार को अदा करने के लिये कुछ बुनियादी सिद्धांत और नियम बनाये हैं और आस्था कानून व शरीअत चरित्र और प्रकृति के हवाले से बहुत जोर दिया है और फर्ज क़रार दिया है।

इस्लामी तालीम मानवतावादी और मानवीय अधिकार की सुरक्षा की गारंटी देती है, वह मानवीय अधिकार का समर्थक है इंसान की आखिरी जिंदगी महा परलय की जिंदगी है। एक इंसान सिर्फ एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने की वजह से जन्नत में जाने का पात्र हो गया और एक औरत बिल्ली को भूखा मारने की वजह से जहन्नम में चली गयी। इस्लाम की यह शिक्षा है कि किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई वर्चस्व (बरतरी) नहीं है। सब को अल्लाह ने मिटटी से पैदा किया और सब एक बाप आदम की औलाद हैं।

आज आपसी भाईचारे को खत्म करने के लिये असमाजिक तत्वों की तरफ से लगातार प्रयास किया जा रहा है भेदभाव और वैमनष्यता फैला कर देश और हम सब को कमजोर करने की साजिश की जा रही है। इन हालात में कुरआन व सुन्नत की रोशनी में शिक्षा को बढ़ावा देने, सामप्रदायिक एकता और मानवीय मान्यताओं जिस पर हामरा विश्वास है उसकी यही मांग है कि कुरआन और हदीस की रोशनी में भाई चारे को इस्लामी शिक्षाओं से हर एक को अवगत कराया जाये, मानवता की भलाई के लिये देश में न्याय, उदारता और आपसी विश्वास का माहौल बनाने और विश्व शान्ति को काइम रखने और आतंकवाद की समस्या से निकलने का सहीह उपाय तय करें।

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष
मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के अवसर पर राजनैतिक, समाजी, शैक्षिक विद्वानों और मिल्ली संगठनों के पदधारियों के शुभ-सन्देश एवं उद्गार

Dr. NAJMA HEPTULLA
Governor of Manipur

डा० नजमा हेपतुल्ला
राज्यपाल, मणिपुर

सत्यमेव जयते

February 19, 2018

MESSAGE

I am very happy to learn that Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees Hind is organizing its two-day 34th All India Ahle Ahle Hadees Conference entitled **"Restoration of World Peace and Protection of Humanity"** on March 9-10, 2018 at Ramleela Ground, New Delhi and a Souvenir is being brought out to mark the mega event.

The Markazi Zamiat Ahle Hadees Hind was established in the year, 1906 and championing the cause of humanity since its inception. It has been engaged in promoting human values, peace and order in the society, while working for the cause of religious harmony, co-existence, national solidarity and social justice. The organization deserves unreserved appreciation for all its endeavour. It is heartening to know that the conference will be a quality congregation of several eminent National and International Scholars, thinkers and intellectuals. It will be a platform where the participants will have the opportunity to exchange valuable ideas to address issues spawning the present prevailing turmoil such as hatred, mistrust, inter-communal conflicts, disunity, lawlessness, terrorism, illiteracy, social evils like alcohol, gambling and atrocities against women.

I am really impressed to know that there are 23 provincial branches and around 40,000 units of the Jamiat in the country and about three crore people associated with it are engaged educational, social, human welfare and reform activities. In addition, this more than one century old Jamiat has so far organized 33 formal All India Conferences apart from conventions, seminars and symposia on different topics. I am fully confident that this Jamiat while championing the cause of Islamic teachings will continue with their endeavours to fight against sectarian forces and work for the welfare of the people of the country irrespective of caste, religion or state.

I wish the Conference a grand success.

Najma Heptulla

(DR. NAJMA HEPTULLA)

इंफाल : राज भवन, इंफाल–795001 फोन : +91-385-2451222/244080 फैक्स : +91-0385-2450278/2442478
Imphal : Raj Bhawan, Imphal Tel: +91-385-2451222/244080 Fax: +91-0385-2450278/2442478

Regret for two-days All India Conference on the Restoration of World Peace and Protection of Humanity at Ram Leela Ground, New Delhi on 9th and 10th March, 2018.

HM Hrd Ministry <dirpbhrd@gmail.com> Reply |
Tue 2/20, 6:05 AM
You

20th February, 2018

Dear Asghar Ali Imam Mahadi Salafi Ji,

Kindly refer to your letter dated 31st January, 2018 inviting the Hon'ble Minister of Human Resource Development, Govt. of India as the Guest of Honour at the two-days All India Conference on the Restoration of World Peace and Protection of Humanity at Ram Leela Ground, New Delhi on 9th and 10th March, 2018.

Compliments to you for 4th session of the conference. However, due to the pre-occupation of the Hon'ble Minister, he will not be able to attend.

We wish the Conference a grand success.

With regards,
O/o Minister of HRD
Ph. 23782387, 23782698.

सुरेश प्रभु
SURESH PRABHU

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली
MINISTER OF COMMERCE & INDUSTRY
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind would be organizing the 34th All India Ahle Hadees Conference on "Restoration of World Peace and Protection of Humanity" on 9th and 10th March, 2018 at New Delhi.

It merits appreciation that the Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind regularly organizes discussions to promote feelings of national integration, world peace, universal brotherhood and humanism.

I extend my best wishes for the success of this conference.

(Suresh Prabhu)

उद्योग भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110011 / दूरभाष : 91–11–23062223, 23061492, 23061008 फैक्स : 23062947
Udyog Bhavan, Rafi Marg, New Delhi-110011 / Tel. No. 91-11-23062223, 23061492, 23061008 Fax : 23062947
E-mail : sureshprabhu@gov.in

बंधुआ मुक्ति मोर्चा

BONDED LABOUR LIBERATION FRONT

36 Yrs.

36 साल से समाज के अंतिम व्यक्ति की मुक्ति के लिए समर्पित *Dedicated for the liberation of last person for 36 yrs.*

27 फरवरी, 2018

आदरणीय असगरी अली जी,

''अहले हदीस'' के माध्यम से पहले दुनियाँ के सभी मुसलमानों को, चाहे वे शिया हों या सुन्नी या और भी कोई सभी तौहीद के बिना पर एक हों। सभी मतभेद एक अल्लाह के मानने वालों में मिटने चाहियें–सभी एक दूसरे को अपने बराबर इज़्जत दें। आपस में अमीर–गरीब, ऊँची और छोटी जाति, औरत–आदमी, गोरे–काले, आदि भेदभाव खत्म हों ऐसा नया मुस्लिम समाज बनाना हर मुसलमान की इबादत का हिस्सा बने। इस्लाम का असली तेजस्वी रूप मानवता को, खासकर विषमता के शिकार गरीब गुरबा को आकर्षित करेगा और फिर बाकी गैर इस्लामिक मत–सम्प्रदाय के लोगों को भी इसी मंत्र को लागू करने की प्रेरणा दी जाय।

मैं स्वयं वेद मंत्रों को आधार बनाकर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के आधार पर इस दिशा में काम कर रहा हूँ। हमारा आपका साथ और सहयोग हो तो हम मिलकर एक नई दुनियाँ, अच्छी दुनियाँ, समाजमूलक और अमन पसंदों की दुनियाँ बना सकते हैं। ओ३म् कहो या अल्लाह, हम सभी को सद्बुद्धि दें।

स्वामी अग्निवेश

अध्यक्ष

Regd. Office: 7, Jantar Mantar Road, New Delhi-110001
Tel.: 011-23363221, 23367943, *Fax No.:* 011-23367946
E-mail: bmm@bondedlabour.org, agnivesh70@gmail.com • *Website:* www.bondedlabour.org, www.swamiagnivesh.com

सैय्यद गय्यूरुल हसन रिज़वी
अध्यक्ष
Syed Ghayorul Hasan Rizvi
Chairperson

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
Government of India
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग
National Commission For Minorities

22nd February, 2018

MESSAGE

I am pleased to learn that Markazi Jamiat Ahle Hadeeth Hind is publishing special issues of "The Simple Truth", 'Islah-E-Samaj" and "Jarida Tarjuman" on the occasion of 34th All India Ahle Hadees Conference being organised on 9-10 March, 2018 at Ram Leela Maidan, New Delhi to promote Islamic fraternity, communal harmony and national integration.

I send my warm wishes to the organisers and pray for the success of the conference.

S G H Rizvi
(Syed Ghayorul Hasan Rizvi)

ब्लाक-3 (तीसरी मंजिल) सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003
Block-3, (3rd Floor) CGO Complex, Lodhi Road, New Delhi - 110 003
दूरभाष/Tel. : 24360591 फैक्स/Fax : 011-24368410
Email : chairman-ncm@nic.in • Website : www.ncm.nic.in

Sheila Dikshit

February 21, 2018

MESSAGE

It gives me immense pleasure to learn that the Markazi Ahl-E-Hadees Hind is organizing its 34th All India Ahle Hadees Conference on a relevant topic of "Restoration of World Peace and Protection of Humanity" on 9th and 10th March, 2018 at Ramleela Maidan, New Delhi.

The role and contribution of the Markazi Ahl-E- Hadees in the freedom struggle and transfer of power in a smooth manner will always be commended by the peace loving secular and democrat persons. Its association with the great patriot and educational policy maker Maulana Abul Kalam Azad has helped in the nurturing the values of co-existence and humanity.

The topic of the conference is of paramount importance in the present state of affair of hatred and social divide. I do hope that the deliberations of conference will be able to give a crystal clear message of peace, progress and prosperity. Add the participation of the well known secular, patriot and likeminded personalities will also be able to give a right direction to the elements presently on the wrong trajectory to mend their ways by following the Indian traditions of equality and justice for one and all.

Please accept my sincere best wishes for the success of the conference.

(Sheila Dikshit)

B-2, Nizamuddin East, New Delhi-110013, India
Tel. : 011-24356941, Mobile : 9971283487

TARIQ ANWAR
Member of Parliament
Leader, NCP Party in Lok Sabha
General Secretary, NCP

सत्यमेव जयते

Member : Department-Related Parliamentary Standing Committee on Personnel, Public Grievences, Law & Justice
Member : Consultative Committee of Ministry of Petroleum & Natural Gas
Member : Committee on Government Assurances
Member : General Purpose Committee
Member : Hindi Advisory Committee, Ministry of Tourism

NCP/TA/8432/2018

19.2.2018

My dear Asghar Ali Imam Saheb,

I received your letter dated 06.2.2018 and very glad to know that two-days **All India Ahle Hadees Conference** is going to be held in New Delhi on 9 & 10 March, 2018.

I am thankful to you for inviting me in this conference. If time will permit, I will try to attend it.

Wishing the conference a grand success.

With best wishes,

Yours sincerely,

(TARIQ ANWAR)

Shri Asghar Ali Imam Mahadi Salafi,
President,
Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees Hind,
Ahle Hadees Manzil, 4116, Urdu Bazar,
Jama Masjid, **Delhi-110 006.**

Office : 1, Pt. Ravi Shankar Shukla Lane (Canning Lane) Near Ferozshah Road, New Delhi - 110 001
Tel. : 23382217, 23382109 **Fax** : 23382131, 23382285

Res. AB-11, Tilak Marg, New Delhi-110001 **Tel.** : 23384392 **Telefax** : 23384374 **E-Mail** :tariqanwarindia@gmail.com

बिहार राज्य खाद्य आयोग

BIHAR STATE FOOD COMMISSION

मो० सलाम
अध्यक्ष

19/20/84 ऑफिसर्स फ्लैट, न्यू पुनाईचक
पटना-800 001
दूरभाष 9431292932

Md. Salam
Chairman

Ref .... Date ....

پیغام

مجھے یہ جان کر بے انتہا خوشی ہو رہی ہے۔ کہ مرکزی جمعیۃ اہل حدیث کے زیر اہتمام مورخہ 10-9 مارچ 2018 کو دلی کے رام لیلا میدان میں ''عالمی امن کے قیام اور تحفظ انسانیت'' کے موضوع پر کانفرنس کا انعقاد کیا گیا ہے۔ یہ موضوع دور حاضر کا اہم ترین مسئلہ اور BURNING TOPIC ہے۔ آج ساری دنیا بدامنی کا شکار ہے۔ اکثریت ممالک کسی نہ کسی شکل میں دہشت گردی کے شکار ہیں۔ افسوسناک پہلو یہ ہے کہ سبھی ایک دوسرے کو مورد الزام ٹھہرانے میں لگے ہیں مگر کوئی انکے سدباب کے لئے اپنے ملک میں ٹھوس قدم نہیں اٹھا رہا ہے۔ ہمارے ملک میں ہی دیکھیں جہاں ایک طرف سرحد پار دہشت گردی کے شکار ہیں دوسری طرف ملک کی جنگجو مذہبی جماعتیں اقلیتوں کی عرصہ حیات کو تنگ کرنے کے درپے ہیں۔ آئے دن طرح طرح کی واردات رونما ہو رہی ہیں جس میں معصوم لوگ شہید ہو رہے ہیں۔ وہیں دوسری طرف انتہا پسند جماعتیں جنہیں نکسل وادی کے نام سے جانا جاتا ہے۔ ملک کے بیشتر حصے میں پاؤں پھیلا چکی ہے۔ اگر بین الاقوامی سطح پر نظر ڈالیں تو مشرق وسطیٰ سب سے زیادہ اسکے شکار ہے۔ فلسطینیوں کے جان مال کی کوئی قیمت نہیں ہے۔ بچوں اور عورتوں تک کو نہیں بخشا جا رہا ہے۔ ہمارے پڑوس میں پاکستان، لنکا، بنگلہ دیش، برما وغیرہ تمام ممالک اس میں مبتلا ہیں۔ میانمار کے مسلمانوں کی جان مال اور عزت سبھی داؤ پر ہیں۔ یہاں تک کہ مہاجر کی زندگی بسر کرنے کو مجبور ہیں۔

बिहार राज्य खाद्य आयोग

BIHAR STATE FOOD COMMISSION

मो० सलाम
अध्यक्ष

19 20/84 ऑफिसर्स फ्लैट, न्यू पुनाईचक
पटना 800 001
दूरभाष 9431292932

Md. Salam
Chairman

Ref .... Date ....

شام سے لاکھوں کی تعداد میں لوگ ہجرت کر چکے ہیں۔ یوربی ممالک بھی اس سے اچھوتا نہیں ہیں۔ وہاں بھی کچھ نہ کچھ واردات ہوتی رہتی ہیں داعش سب سے بڑا خطرہ بتایا جاتا ہے۔ مگر امریکہ اور اسرائیل کو اپنے گریباں میں بھی جھانکنا چاہیے۔ عراق اور افغانستان کو برباد کرنے کے بعد امریکہ برطانیہ، فرانس وغیرہ اب اپنی غلطی پر نادم ہیں۔

اسطرح ہم دیکھتے ہیں کہ اس انتشار اور بدامنی کا سب سے زیادہ شکار مسلمان اور مذہب اسلام ہے۔ مگر دہشت گردی کو اسلام سے جوڑا جا رہا ہے۔ جبکہ امن اور سلامتی اسلام کا بنیاد ہے۔ برما، لنکا، آئرلینڈ وغیرہ میں تو دہشت گرد بودھ اور عیسائی ہیں۔ پنجاب کے دہشت گرد سکھ ہیں۔

مالیگاوں کے دہشت گرد ہندو تھے۔ زیادہ تر نکسلی ہندو ہیں۔ مگر بدنامی صرف مسلمانوں کی ہے۔

برق گرتی ہے تو بیچارے مسلمانوں پر

اسلئے میرا ماننا ہے کہ دہشت گرد کا کسی مذہب سے تعلق نہیں ہے۔ لہذا وقت کی مانگ ہے کہ دنیا میں امن قائم ہو اور انسانیت کو بچایا جائے۔ اس لحاظ سے یہ کانفرنس بڑی اہمیت کا حامل ہے۔

میں اس کانفرنس کی کامیابی کے لیئے تہہ دل سے دعا گو ہوں اور میری تمام تر نیک خواہشات آپلوگوں کے ساتھ ہے۔

مخلص
محمد سلام

جناب اصغر علی امام مہدی سلفی
صدر
مرکزی جمعیت اہل حدیث، نئی دلی

ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

Aligarh - 202 002, U.P., India.

PROF. TARIQ MANSOOR
MS (Surgery), FICS
Vice-Chancellor

Phone: (Off) +91-571-2700994/2702167
(Res) +91-571-2700173
Fax: (Off) +91-571-2702607
Email: vcamu@amu.ac.in

پیغام

-1 مجھے یہ جان کر بے حد مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیۃ اہل حدیث ہند کی جانب سے ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' کے موضوع پر 9-10/مارچ2018 کو آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کا انعقاد کیا جارہا ہے اوراس موقعہ پر جمعیۃ کی جانب سے ایک خصوصی نمبر بھی شائع کیا جائے گا۔

-2 اس کانفرنس کا موضوع نہایت بروقت مسائل پرمبنی ہے جن سے پوری انسانیت متاثر ہورہی ہے اوراگر ان مسائل کا بروقت تدارک نہ کیا گیا تو یقیناً ہماری آنے والی نسلوں کوشدید نقصانات اٹھانے ہوں گے۔

-3 اس پلیٹ فارم پر زیرغور آنے والے امور پر مسلم دانشوران، علماء، مدبرین، سیاسی قائدین اورائمہ حضرات کی آرا ملت اسلامیہ کے لئے رہنمائی اور قیادت کا موجب ثابت ہوگی۔

-4 مجھے یقین ہے کہ اس کانفرنس میں کثیر تعداد میں لوگ شامل ہوکر عالم انسانیت کو درپیش مسائل پرغور وخوض کریں گے اور یہ کانفرنس اپنے مقاصد میں کامیاب ہوگی۔ میں خصوصی نمبر کی عام پذیرائی کے لئے دعا گو ہوں۔

طارق منصور

(پروفیسر طارق منصور)

Phone: { 23233547
23738257
Jamiat Ulama-i-Hind
1-Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110 002
E-mail : juh.org2010@gmail.com

جمعیۃ علماء الہند

Ref. No. .... Date ....

JUHA/LTR/2018/28 10/02/2018

محترم المقام جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب زید مجدکم

امیر مرکزی جمعیۃ اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

جمعیۃ اہل حدیث ہند کی طرف سے قیام ''امن عالم اور تحفظ انسانیت'' کے عنوان پر ۳۴ویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس میں شرکت کا دعوت نامہ پہنچا میں آپ کا بہت ممنون ہوں۔

اس وقت یہ دونوں چیزیں یعنی ''امن عالم اور تحفظ انسانیت'' ساری دنیا کا بڑا اہم موضوع ہے اور چونکہ غلط پروپیگنڈہ کی بنیاد پر مسلمان اور اسلام شکار بنا ہوا ہے، اس لئے پوری دنیا میں اور خاص طور پر ہندوستان میں ان موضوعات پر کام کرنے کی بہت زیادہ ضرورت ہے، اس لئے میں آپ کو دنیا کے موجودہ حالات کو دیکھتے ہوئے اس موضوع پر کانفرنس منعقد کرنے پر مبارکباد دیتا ہوں، اس کی کوشش کرنی چاہئے کہ میڈیا کے ذریعہ آپ کی آواز دنیا میں گھر گھر پہونچ سکے اور انسانیت، ظلم وتشدد کا نشانہ بننے سے محفوظ رہ سکے۔

چونکہ مارچ کے پہلے عشرہ میں یہ فقیر دہلی نہیں رہے گا اس لئے حاضری سے معذرت خواہ ہوں، اور دعا کرتا ہوں کہ اس اجتماع کو اللہ کامیاب فرمائے اور آپ کی کوششیں بارآور ہوں۔

دعوات صالحہ میں فراموش نہ فرمائیں

والسلام

ارشد مدنی

صدر جمعیۃ علماء ہند

Ph. : (01336) 222429
Fax : (01336) 222768

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Web : www.darululoom-deoband.com
Email: info@darululoom-deoband.com

دارالعلوم دیوبند

Darul-Uloom, Deoband. U.P. India

حوالہ 229/18   التاریخ.........

باسمہ سبحانہ وتعالیٰ

پیغام

یہ معلوم کرکے مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیۃ اہل حدیث ہند مورخہ ۹-۱۰/مارچ ۲۰۱۸ء بروز جمعہ وسنیچر رام لیلا گراؤنڈ دہلی میں "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کے عنوان سے اپنی کانفرنس منعقد کررہی ہے۔

موجودہ دور میں وطن عزیز اور قرب وجوار ہی نہیں؛ بلکہ پورے عالم میں انسانی قدروں کی پامالی، عدم تحفظ اور بدامنی کی جو فضا عام ہوچکی ہے، ان حالات میں اسلام کی امن پسندی اور انسانیت نوازی پر مبنی سراپا رحمت تعلیمات کو ہر سطح پر زیادہ سے زیادہ عام کرنے کی ضرورت ہے۔

امید ہے کہ ملک کے مرکزی مقام پر منعقد ہونے والی "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کانفرنس عدم رواداری اور تشدد پسندی کی مسموم فضا کو خوشگوار بنانے میں موثر کردار ادا کرے گی۔

اور اس موقع پر مختلف زبانوں میں شائع ہونے والے جرائد ومجلات بھی قارئین کے ذہن کو متاثر کریں گے۔

اللہ تعالیٰ ہم سب کی مساعی کو قبول فرمائے۔

(مولانا مفتی) ابوالقاسم نعمانی
مہتمم دارالعلوم دیوبند
۱۹/۵/۱۴۳۹ھ=۶/۲/۲۰۱۸ء

الجامعة الإسلامية دار العلوم وقف ديوبند الهند

DARUL - ULOOM WAQF DEOBAND -247554 (U.P.) INDIA

التاریخ 04.02.2018 — الرقم ______

محترم ومکرم جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب حفظکم اللہ

امیر مرکزی جمعیۃ اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید کہ مزاج گرامی بعافیت ہوں گے

گرامی نامہ موصول ہوکر باعث تشکر ہوا۔ بحالات موجودہ ملکی وعالمی سطح پر فکر ونظر اور تہذیب وثقافت کے مختلف رویوں میں عدم تحمل اور پر تشدد طریقۂ فکر نے دین اسلام اور ملت اسلامیہ کے برخلاف کشمکش اور تصادم کے امکانات وواقعات میں ایک واضح اضافہ کیا ہے؛ چنانچہ اس منظر نامے کے پیش نظر جہاں ایک طرف قیام امن عالم اور تحفظ انسانیت جیسے عناوین کے تحت عمومی بیداری کی مہم اپنی اہمیت کے لحاظ سے ناگزیر ہے وہیں دوسری طرف سیرۃ رسول علیہم الصلوٰۃ والسلام اور تعلیمات اسلام کے بنیاد واساسات کے زیادہ سے زیادہ تذکرہ واہتمام کی بھی ضرورت موجودہ فکر ونظر کے پس منظر میں قرار واقعی اہمیت کی متقاضی ہے جس کے ان شاء اللہ گہرے اثرات مرتب ہوں گے۔

بہ لحاظ عمر طبعی ضعف ونقاہت اور علالت کے سبب قریب گذشتہ تین چار سالوں سے اسفار ترک ہو چکے ہیں اس لئے حاضری سے تو معذرت خواہ ہوں البتہ ہمہ وقت دعاء گو ہوں کہ حق تعالیٰ آنمحترم اور جملہ شرکائے کار کی مخلصانہ کوششوں کو شرف قبولیت سے سرفراز فرماتے ہوئے امت کے حق میں مثبت ومؤثر ثمرات کی صورت میں ظاہر فرمائیں۔

والسلام

(لنبام محمد سفیان قاسمی)

(حضرت مولانا) محمد سالم قاسمی (صاحب دامت برکاتہم)

صدر مہتمم دار العلوم وقف دیوبند

مورخہ: ۱۷ر جمادی الاول ۱۴۳۹ھ

Office : +91-1336-222752, Mobile: +91-9927515725, E-mail: rector@dud.edu.in / info@dud.edu.in
website : www.dud.edu.in

Syed Ahmed Bukhari
Shahi Imam
Jama Masjid Delhi (India)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نئی دہلی!
24 /فروری 2018ء

پیغام

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند مورخہ 9، 10 / مارچ 2018ء کو دہلی میں ''قیام امن عالم و تحفظ انسانیت'' کے عنوان پر دو روزہ چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس منعقد کرنے جارہی ہے۔

اس وقت ملکی اور عالمی سطح پر دہشت گردی، مسلمہ اقدار و حقوق کی پامالی اور انسانیت کی روح سے متصادم نظریات کے باعث جس طرح کی بے اطمینانی پائی جارہی ہے اس سے صرف مسلمان ہی نہیں بلکہ اقوام عالم کا ہر ذی ہوش فکرمند ہے اور انسانیت کو درپیش ان مسائل کا پائدار حل بھی چاہتا ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس انسانیت کو درپیش مسائل کے حوالے سے سنگ میل ثابت ہوگی اور اسلام کے پیغام امن و انسانیت کو جاننے اور عام کرنے اور سازشوں کو سمجھنے میں اہم کردار ادا کرے گی۔

نیک خواہشات کے ساتھ

سید احمد بخاری

Telefax: (0091-11) 2326 8344 E-mail: projmd2000@gmail.com

Darul Uloom Nizamia Farangi Mahal

दारूल उलूम निज़ामिया फरंगी महल

دارالعلوم نظامیہ فرنگی محل

Eidgah Aishbagh, Lucknow-226003 Mobile : 9415023970, e-mail: imamkrasheed@gmail.com, website: ww.farangimahal.in عیدگاہ عیش باغ لکھنؤ

Ref ....   Date ....

پیغام

مولانا خالد رشید فرنگی محلی
ناظم دارالعلوم فرنگی محل
چیئرمین اسلامک سنٹر آف انڈیا فرنگی محل
امام عیدگاہ لکھنؤ

سلام مسنون

مزاج گرامی!

اس اطلاع سے بے حد مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس میں ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' جیسے ضروری اور مفید عنوان پر علمائے کرام ودانش وران ملک وملت اظہار خیال فرمائیں گے۔

محترمی! کانفرنس کا موضوع موجودہ حالات کے پیش نظر نہایت اہمیت کا حامل ہے۔ ہمیں قوی امید ہے کہ علمائے کرام ودیگر مقررین اس عنوان پر کھل کر گفتگو کریں گے تا کہ اسلام اور مسلمانوں کے متعلق جو غلط فہمی اور ناواقفیت پھیلی ہوئی ہے وہ دور ہوگی۔ ان شاء اللہ العزیز۔

یہ ایک واضح حقیقت ہے کہ اسلام امن وامان کا داعی، آشتی وسلامتی کا نقیب اور تحفظ انسانیت کا پاس بان ہے۔ اس نے صاف صاف اعلان کیا ہے ''الخلق عیال اللہ'' یعنی مخلوق تو ساری اللہ تعالیٰ کا کنبہ ہے۔ اسلام نے بتایا ہے کہ مسلمان وہ ہے جس کی زبان اور ہاتھوں سے تمام لوگ محفوظ اور سلامت رہیں۔

سیرت نبویؐ، اسوہ صحابہ کرامؓ اور فاتحین اسلام کے کردار تاریخ کے صفحات میں آج بھی درخشاں وتاباں ہیں کہ انہوں نے ہمیشہ امن وسلامتی اور انسانیت کے تحفظ واحترام کو اولین ترجیح دی ہے۔ یہ اس بات کا ثبوت ہے کہ خدائے کائنات کا پسندیدہ دین اسلام تمام مخلوقات کے لیے بہترین دین ہے۔

کانفرنس کی کامیابی اور آں محترم کے جلیل القدر مقاصد کی تکمیل کے لیے راقم دعا گو ہے۔

فقط

خالد رشید فرنگی محلی   ۲۲ر فروری ۲۰۱۸ء

ڈاکٹر مفتی مُحمّد مُکرّم احمد
DR. MUFTI M. MUKARRAM AHMED Ph.D.
SHAHI IMAM
SHAHI MASJID FATEHPURI, Ch. Chowk, Delhi-6 (India)
Tel/Fax : 23918322, E-mail : shahi.imam@ymail.com

بسم اللہ الرحمن الرحیم

محترم ۔۔ سلام مسنون ۔

مجھے یہ معلوم ہو کر خوشی ہوئی کہ آپ ہر سال کی طرح اس سال بھی نیشنل کانفرنس منعقد کرا رہے ہیں جس کا موضوع ہے قیامِ امنِ عالَم اور تحفظِ انسانیت ۔ یہ ناقابلِ انکار حقیقت ہے کہ عالمی بدامنی اپنی حد کو پار کر چکی ہے اور ہر طرف مظلوم انسانوں کی آہیں ہمارے دلوں کو رنج و غم پہنچا رہی ہیں اور اربابِ اقتدار اپنے سیاسی مفادات اور ذاتی انا کی خاطر ظلم کا سہارا لے رہے ہیں اور اپنے وقار اور خاندانی اقتدار کو بچانے کیلئے ملی مفادات کو قربان کرنے میں کسی قسم کا موقع ہاتھ سے جانے دینا نہیں چاہتے ۔ بڑی طاقتیں یہود و نصاریٰ کی حمایت میں سرگرم ہیں اور مومنین بہت بڑی تعداد میں ہونے کے باوجود ہر طرف سے بے وقعتی کے ساتھ ٹھکرائے جا رہے ہیں ۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے وَمَا أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ اگر خطباء اور علماء کرام اپنے خطبات میں فرماتے ہیں وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا ۔ بڑے افسوس کی بات ہے کہ مغضوب اور ضالین گروہ کی طرح ہر اہلِ ایمان بھی ظالمانہ حرکتوں پر گامزن ہیں ۔ بجائے اصلاح کرنے کے خود ہی اُن کے جال میں پھنس رہے ہیں وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ کو بھول چکے ہیں ۔ مسجدِ اقصیٰ کے قضیہ کو صرف فلسطین کا مسئلہ سمجھ کر اُسے لپیٹ کر ڈال دیا گیا ہے ۔ دوسروں کی اصلاح کرنے کے بجائے آج ہر ایک کو اپنی اصلاح کرنی چاہئے ۔ سب اپنے اعمال کو درست کریں گے تو قیامِ امنِ عالَم بھی وجود میں آ جائے گا نیز انسانیت کو تحفظ بھی نصیب ہو جائے گا ۔ ہر مومن اور مومنہ کیلئے لازم اور ضروری ہے کہ پیغمبرِ اسلام محسنِ انسانیت صلی اللہ علیہ وسلم کا اتباع کرے اور ہم قرآن کریم کی تعلیمات کی روشنی میں اپنی زندگی کا لائحہ عمل تیار کریں ۔ دنیا گمراہی میں رہے تو یہ اس کا نصیب ہے ہمیں اپنے قول و عمل سے دین کی روشنی کو پھیلانا چاہئے ۔

وما توفیقی الا باللہ العلی العظیم

احقر محمد مکرم احمد غفرلہ الصمد
۳۰ فروری ۲۰۱۸ء | ۳ جمادی الثانی ۱۴۳۹ھ

MAULANA AZAD UNIVERSITY, JODHPUR
मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, जोधपुर مولانا آزاد یونیورسٹی، جودھ پور

(Estd. by Rajasthan State Legislative Act No. 35 of 2013)

Prof. Akhtarul Wasey
President

تاریخ: ۲۲ فروری ۲۰۱۸ء

حضرت مولانا الحاج شیخ اصغر علی امام مہدی سلفی دامت برکاتہم
امیر
جمعیت اہل حدیث ہند
نئی دہلی

محترم المقام حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی دامت برکاتہم

سلام وتحیات

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی امارت پر آپ کے انتخاب کے لیے آپ کو ایک بار پھر مبارکباد پیش کرتا ہوں اور ساتھ میں ان تمام لوگوں کی دانش وفراست کی ستائش بھی کرتا ہوں جنہوں نے آپ کا انتخاب کیا۔ خدائے بزرگ وبرتر سے دعا ہے کہ وہ آپ کے عمر، صحت اور اقبال میں مزید ترقی دے اور ملک وملت آپ سے مستفید ہوتے رہیں۔

۹-۱۰؍مارچ ۲۰۱۸ء کو دہلی کے رام لیلا میدان میں "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کے عنوان پر چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کے انعقاد ایک بڑی مستحسن کوشش ہے۔

انسانیت کو ہلاکت سے محفوظ رکھنا، امن وامان کا قیام اور فواحش ومنکرات سے لوگوں کو روکنا، ہر اس شخص پر فرض ہے جو توحید باری تعالی، رسالت محمدی صلی اللہ علیہ وسلم، قرآن حکیم کی حقانیت اور عقیدۂ آخرت پر یقین رکھتا ہے۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث پچھلے ۳۳ سالوں سے اس نیک کام میں لگی ہوئی ہے۔ آپ اور آپ کے اکابرین اور رفقاء ملت مسلمہ کی طرف سے شکریہ کے مستحق ہیں کہ انہوں نے ضلالت وگمراہی کی تاریکیوں میں صلاح وفلاح کے چراغ روشن کیے۔ اسلام تشدد کا نہیں امن کا مذہب ہے جس میں جبر نہیں صبر کو ترجیح دی گئی۔ اسلام نفاق کا نہیں اتفاق کا مذہب ہے۔ اسلام انتہا پسندی اور افراط وتفریط کا نہیں بلکہ توازن اور صراط مستقیم کا مذہب ہے۔ اسلام سود، زنا، شراب اور جوئے کو انسانیت کے لیے ہلاکت کا سبب مانتا ہے اس لیے ان سے لوگوں کی حفاظت اور انہیں ہوشیار کرنا اسلام اور انسانیت دونوں کی بنیادی خدمت ہے جہاں تک داعش، بوکو حرام، لشکر طیبہ، جیش محمد جیسی تشدد پسند عسکری تنظیموں کا سوال ہے یہ اسلام اور مسلمان دونوں کے سب سے بڑے دشمن ہیں۔ یہ ہمارے عہد کے خوارج ہیں میں آپ کو ایک بار پھر مبارکباد دیتا ہوں کہ آپ کی قیادت وسعادت میں اعلائے کلمۃ الحق کے لیے ایسا زبردست اجتماع قلب دہلی میں رام لیلا میدان میں ہونے جا رہا ہے۔ اللہ تعالی اس کو قبول فرمائے اور عالم انسانیت کے لیے نفع بخش بنائے۔

دعاؤں کی درخواست کے ساتھ آپ کا نیاز آگیں

پروفیسر اختر الواسع
۲۲/۲/۲۰۱۸

Campus: Village-Bujhawer, Tehsil-Luni, Jodhpur-342802 Correspondence: Kamla Nehru Nagar, Jodhpur-342008 (Rajasthan)
Mob: +91-9810541045, E-mail: wasey27@gmail.com, Website: www.mauj.ac.in

شعبۂ اردو، دہلی یونی ورسٹی، دہلی

DEPARTMENT OF URDU, University of Delhi, Delhi-110007

Tel. : 27666627
27667725/Ext. 1303

Prof. N. M. KAMAL
(IBNE KANWAL)
HEAD

پیغام

اکیسویں صدی کی آمد پر امید تھی کہ شاید یہ صدی امن کی صدی ہوگی، کیوں کہ بیسویں صدی کے دامن پر عالمی جنگوں کے علاوہ بھی کئی جنگوں کے داغ تھے، لیکن ایسا نہیں ہوا۔ اکیسویں صدی کی ابتداء ہی جنگ سے ہوئی، پھر پے در پے جنگوں کا سلسلہ شروع ہوگیا، جو آج بھی جاری ہے جس کی زد میں انسانیت مجروح ہوگئی، لاکھوں انسانوں کے خون سے زمین سرخ ہوگئی، نا جانے کتنے ملک تباہ و برباد ہوگئے۔ ایسا محسوس ہوتا ہے کہ اسلامی ممالک اور خصوصاً مسلمانوں کے لیے یہ دنیا تنگ ہوگئی ہے اور امن رخصت ہوگیا ہے۔ ان حالات میں ہر بشر کا یہ فرض ہے کہ انسانیت کی بقا اور امن کی بحالی کے لیے کوشاں ہو۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند ہمیشہ اس کوشش میں سرگرداں رہی ہے۔ اس کے زیر اہتمام ۹-۱۰ مارچ ۲۰۱۸ء کو دہلی کے رام لیلا میدان میں ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' کے عنوان پر منعقد ہو رہی یہ کانفرنس بھی اس بات کا ثبوت ہے۔ مجھے امید ہے کہ ان کی یہ کوشش رائیگاں نہیں جائے گی اور دنیا میں امن قائم ہوگا۔ ان شاء اللہ

اس کانفرنس کے انعقاد کے لیے میں مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے امیر حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی و دیگر ذمہ داران کو دلی مبارک باد پیش کرتا ہوں۔

پروفیسر ابن کنول

صدر شعبۂ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

RES. ADDRESS : 36/III FLOOR, LANE NO. 2, JOHRI FARM, JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025 TEL : 26315461
E-mail : ibnekanwal@yahoo.com

Dr. Saeed al Azami al Nadwi
Chief Editor: "Albaas-el-Islami"
Post Box 93, Nadwatul Ulama
Lucknow. 226007, U.P. (India)

د/ سعید الأعظمي الندوي
رئیس تحریر : مجلة " البعث الإسلامي "
ص. ب. ۹۳ ، ندوة العلماء ، لکناؤ
أترابرادیش (الهند) ۲۲٦۰۰۷

پیغام

برائے دوروزہ چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس ۹-۱۰/مارچ ۲۰۱۸ء

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على سيد المرسلين محمد وعلى آله و أصحابه تبعهم باحسان الى يوم الدين ، وبعد :

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر انتظام چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بعنوان: قیام امن عالم اور تحفظ انسانیت ۹-۱۰/مارچ ۲۰۱۸ء کو رام لیلا میدان ترکمان گیٹ، نئی دہلی میں منعقد ہو رہی ہے، کانفرنس کا انعقاد ایسے وقت میں ہو رہا ہے جبکہ امن عالم کو تاراج کرنے اور انسانیت کا گلا گھونٹنے کے لئے باطل طاقتیں سرگرم ہیں، وہ کسی لمحہ دنیا کے باشندوں کو چین و سکون سے جینے کا حق نہیں دے رہی ہیں، اس کے لئے مختلف ذرائع اور وسائل استعمال کرکے عالم انسانیت کو مشکلات ومصائب سے دوچار کر رہی ہیں، مزید طرفہ یہ کہ وہ اسلام پر الزام دے رہی ہیں کہ وہی امن وسکون کو سبوتاژ کرنے والا مذہب ہے، اور انسانیت کے لئے خطرہ کی گھنٹی ہے۔

یہ ایک تاریخی حقیقت ہے، جس کا انکار سورج کو چراغ دکھانے کے مرادف ہے کہ اسلام امن وسلامتی کا مذہب اور تحفظ انسانیت کا پیامبر ہے، ایک آدمی کا قتل پوری انسانیت کے قتل کے مرادف ہے، دین اسلام، انسان کو صرف آخرت ہی کی کامیابی کی ضمانت وخوش خبری نہیں دیتا ہے، بلکہ وہ اس دنیا میں بھی اس کے دلی سکون واطمینان کا ضامن ہے، دین اسلام کی یہ خوبی اس سے نمایاں ہوتی ہے کہ اسلام کا نام ہی سلامتی سے مشتق ہے، لہٰذا امن پسندی، صلح جوئی اور ایسی تمام چیزوں سے بیزاری جو امن وسلامتی کے مفہوم کے منافی ہو مرد مسلمان کی طبیعت ثانیہ بن جاتی ہے، حقیقت یہ ہے کہ اللہ رب العزت نے تنہا اسلام ہی کو آخری دین قرار دیا اور اسی کو امن وسلامتی اور سکون واطمینان کا ضامن بنایا اور اسی کے اندر تمام مسائل ومشکلات کا حل مضمر کر رکھا ہے، چونکہ اللہ تعالیٰ نے اعلان فرما دیا ہے کہ جو شخص اسلام کے علاوہ کسی اور دین کو اختیار کرے گا تو اس کا دین ہرگز قبول نہیں کیا جائے گا، اس لئے وہ قدرتی طور پر ایسے مخالف حالات سے دور رہے گا، جو اس کے امن وامان کو برباد کرنے والے ہوں اور اس کے چین وسکون کو ختم کرنے کے درپے ہوں، اس سے یہ بات بھی معلوم ہوگئی کہ مسلمان کے لئے امن وامان کی زندگی بسر کرنے کے واسطے یہ ضروری ہے کہ وہ اس دین کو مکمل طور پر اختیار کرے اور کسی بھی حال میں اس کی کسی معمولی چیز کو بھی ترک نہ کرے، اللہ تعالیٰ اپنے مومن بندوں کو مختلف انداز سے بار بار پورے طور پر اسلام میں داخل ہونے، اور خواہشات نفسانی، اور شیطان کی پیروی سے بچنے، اور دور رہنے کا حکم دیتے ہیں کہ شیطان مومن کا کھلا ہوا ازلی دشمن ہے، وہ ہمیشہ کوشاں اور متمنی رہتا ہے کہ سیدھے راستے سے مسلمانوں کے قدم پھسل جائیں اور خواہشات نفسانی کی طرف وہ مائل ہو کر ایمان اور عمل صالح سے دور ہو جائیں، قرآن میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتے ہیں:

" يـأيهـا الـذين آمنوا ادخلوا في السلم كافة ولا تتبعوا خطوات الشيطان ، إنه لكم عدو مبين (البقرة : ١٦٨) "
اے ایمان والو! پورے طور سے اسلام میں داخل ہو جاؤ اور شیطان کے نقش قدم پر نہ چلو، اس لئے کہ وہ تمہارا کھلا ہوا دشمن ہے"۔

0091-522-2741272 mamndnu@gmail.com عنوان المنزل : مكتبة الفردوس ، مكارم نگر (بروليا) لكناؤ (الهند)

Dr. Saeed al Azami al Nadwi
Chief Editor: "Albaas-el-Islami"
Post Box 93, Nadwatul Ulama
Lucknow. 226007, U.P. (India)

د / سعيد الأعظمي الندوي
رئيس تحرير : مجلة " البعث الإسلامي "
ص. ب. ۹۳ ، ندوة العلماء ، لكناؤ
أترابراديش (الهند) ۲۲۶۰۰۷

اسلام نام ہے پورے طور پر اللہ کے سامنے سرتسلیم خم کرنے اور اللہ اور اس کے رسول ﷺ کی اطاعت میں داخل ہونے کا، اس کے بعد مسلمان اللہ کی حفاظت میں داخل ہو کر اس کی برکتوں و رحمتوں اور اس کی عنایت و توجہ کا مستحق بن جاتا ہے، دنیا و آخرت میں اس کے پیار و محبت اور اس کے انعام و اکرام کا حق دار ہو جاتا ہے، اور اخلاص، اور اللہ کے ساتھ نہایت مخلصانہ اور مضبوط تعلق قائم کر کے اس کی نعمتوں سے بہرہ اندوز ہوتا ہے، اور اس شریعت سے وابستگی کی اسے توفیق ہوتی ہے جس کو اللہ تعالیٰ نے دائمی اور انسان کے لئے تاقیامت مکمل طریقۂ کار کے طور پر نازل کیا ہے، اسی قانون الٰہی سے سماج کی انفرادی و اجتماعی وابستگی زندگی کو خوشگوار بناتی ہے اور طاقتور کمزور پر ظلم کرنے کی جسارت نہیں کرتا ہے اور نہ بڑی مچھلی چھوٹی مچھلی کو نگلنے کی جرأت کرتی ہے۔

معاشرہ کو تمام برائیوں اور نقائص سے پاک کر کے اسے جنت نشان بنانے کی اسلام کو کتنی فکر ہے، اس کا اندازہ اس سے لگایا جاسکتا ہے کہ حضور ﷺ نے فرمایا کہ: تم لوگ جنت میں داخل نہ ہوگے، یہاں تک کہ مؤمن ہو جاؤ، اور تم لوگ مؤمن نہیں ہو سکتے یہاں تک کہ ایک دوسرے سے محبت کرنے لگو، کیا میں تمہیں ایسی بات نہ بتاؤں کہ جب تم اس کو اختیار کرو تو ایک دوسرے سے محبت کرنے لگو، وہ بات یہ ہے کہ اپنے درمیان سلام کو عام کرو، اور دوسری روایت میں ہے کہ اے لوگو! اسلام کو عام کرو، کھانا کھلاؤ، اور صلہ رحمی کرو، اور نمازیں پڑھو اس حال میں کہ لوگ سو رہے ہوں، تا کہ تم جنت میں بحفاظت تمام داخل ہو جاؤ۔

غرض اسلام صرف سلامتی و محبت اور آپسی میل ملاپ کا نام ہے، لیکن افسوس کہ مسلمان کی زندگی کامل اسلام سے بہت دور ہو چکی ہے، پھر اس کے پاس امن و عافیت اور محبت و سلامتی کی زندگی کہاں سے آئے، اور کیسے وہ اس جسد واحد کا نمونہ پیش کرے جس کے ایک عضو کو اگر تکلیف ہو تو سارا جسم پریشان ہو جائے۔

ہم لوگوں کو اپنا بے لاگ محاسبہ کرنا چاہئے کہ ہمارا عمل اسلام سے میل کھاتا ہے یا نہیں، ہماری فکر اسلام سے کتنی دور ہے، ہمارا معاشرہ اسلامی ہے یا غیر اسلامی، معاشرہ میں رائج رسم و رواج شریعت سے متصادم تو نہیں ہیں۔ اس پر سنجیدگی سے ہم کو غور کرنا چاہئے، اللہ تعالیٰ آنکھوں کی خیانت، اور دلوں میں جو چیزیں مخفی ہیں اس سے خوب واقف ہے۔

ان معروضات سے یہ اندازہ لگانا بالکل آسان ہے کہ اسلام کا پیغام ہی امن عالم اور تحفظ انسانیت ہے، مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے ذمہ داران، خاص طور اس کے امیر فضیلۃ الشیخ اصغر علی امام مہدی حفظہ اللہ اور ان کے رفقاء قابل مبارکباد ہیں، جنہوں نے موجودہ حالات کے تناظر میں ایسے اہم موضوع کا انتخاب کیا، اس سے ان شاء اللہ پوری دنیا میں عام طور سے اور ہندوستان میں خاص طور سے امن و سلامتی کے لئے کوشاں افراد کو غیر معمولی تحریک ملے گی، اور کاروان امن و انصاف مزید تیز گام ہوگا۔

دعاء ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کانفرنس کو مفید اور نتیجہ خیز بنائیں اور ہر سطح پر اس کے پیغام کو اسلام کے تعلق سے شکوک و شبہات کے ازالہ اور امن و سلامتی کے قیام کا ذریعہ بنائیں۔ وما ذلک علی اللہ بعزیز۔

راقم الحروف

سعید الرحمن اعظمی ندوی

مدیر البعث الاسلامی، ندوۃ العلماء، لکھنؤ

۴ رجمادی الثانیہ ۱۴۳۹ھ

۲۱ فروری ۲۰۱۸ء

0091-522-2741272 mamndnu@gmail.com
عنوان المنزل : مكتبة الفردوس ، مكارم نافر (بروليا) لكناؤ (الهند)

ALL INDIA IMAM ORGANIZATION

(A Representative Body of Half A Million Imams of India)

DR. IMAM UMER AHMED ILYASI
CHIEF IMAM

پیغام

Date: 24th FEB 2018

گرامی قدر جناب حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب حفظہ اللہ
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

گرامی نامہ موصول ہوا۔ یہ جان کر بڑی خوشی ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی قدیم ترین تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کے عنوان پر دو روزہ عظیم الشان چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس مورخہ ۹-۱۰ مارچ ۲۰۱۸ء کو دہلی کے رام لیلا میدان میں منعقد کرنے جا رہی ہے۔ ہماری دعا ہے کہ یہ کانفرنس کامیابیوں سے ہمکنار ہو اور اللہ اس کو ملک وملت اور انسانیت کے لیے مفید سے مفید تر بنائے۔ آمین۔

وقت کے حساس ترین موضوع پر کانفرنس کے انعقاد کے لیے میں آں محترم اور مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے دیگر ذمہ داران وکارکنان کو دلی مبارکباد پیش کرتا ہوں۔

بلاشبہ یہ کانفرنس بھی مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی قومی وملی خدمات اور امن وانسانیت، بھائی چارہ، آپسی میل جول، قومی یکجہتی اور فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے قیام وفروغ اور دہشت گردی کے خاتمے کے لیے دیرینہ مساعی کا مبارک تسلسل ہے اور اس بات پر شاہد عدل ہے کہ یہ جمعیت ملک وملت اور انسانیت کے حساس وسلگتے مسائل کے حل کے تئیں ہمیشہ فکر مند رہتی ہے اور ان میں اپنا مثبت کردار ادا کرنے کی سعی پیہم کرتی ہے۔

اس وقت معاشرتی، ملکی اور عالمی سطح پر دہشت گردی، دینی واخلاقی بیزاری، مسلمہ اقدار وحقوق کی پامالی، امراض وتنگی کی کثرت اور انسانیت کی روح سے متصادم نظریات واعمال کے باعث جس طرح کی بے اطمینانی، بے چینی اور عدم تحمل وکشیدگی اور بسا اوقات امن وامان کی بگڑتی صورتحال پائی جا رہی ہے۔ اس سے صرف مسلمان ہی نہیں بلکہ وطن عزیز واقوام عالم کا ہر ذی ہوش وسلیم الطبع شخص فکر مند ہے اور ملک وملت اور انسانیت کو درپیش ان مسائل ومشکلات کا پائیدار حل بھی چاہتا ہے۔ ان ناگفتہ بہ حالات کا تقاضا ہے کہ ہر شخص بحیثیت انسان اپنی بساط بھر اس کے لیے کوشاں رہے اور مثبت اقدامات کرنے والوں کی آواز میں آواز ملائے۔ اسی میں انسانیت بلکہ ساری کائنات کی بھلائی مضمر ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس اپنے موضوع، مشمولات اور زمان ومکان کے لحاظ سے انسانیت کو درپیش مسائل کے حوالے سے سنگ میل ثابت ہوگی اور اسلام کے پیغام امن وانسانیت کو جاننے اور عام کرنے، دہشت گردی، داعش ودیگر دہشت گرد تنظیموں کی بیخ کنی اور سازشوں کو سمجھنے اور ان کے خلاف بیداری پیدا کرنے، اسلامی رواداری، فرقہ وارانہ ہم آہنگی اور قومی یکجہتی اور تعلیم کے فروغ میں اہم کردار ادا کرے گی۔ علاوہ ازیں وطن عزیز میں شراب نوشی ودیگر منشیات کا استعمال، جہیز جیسی سماجی برائیاں، جوا، رشوت، جہالت وبھکمری معاشرے کے لیے چیلنج بنی ہوئی ہیں اور آلودگی اور اس کے نتیجہ میں بڑھتے ہوئے درجہ حرارت اور پانی کی قلت کے خدشات کے مسائل بھی کم فکر مندی کے حامل نہیں، ان سے پوری انسانیت مضطرب اور دنیا کی ساری مخلوق اس کی خطرناکیوں کے نرغے میں ہے۔ یہ بڑی خوش آئند بات ہے کہ ملک وملت وانسانیت کو درپیش مذکورہ مسائل ومشکلات کا حل پیش کرنے اور ان کے سلسلے میں عوامی بیداری لانے کے لیے اس کانفرنس میں نوع بنوع پروگرام بھی منعقد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ اللہ تعالی اس کانفرنس کو ہر اعتبار سے ملک وملت اور انسانیت کے لیے مفید بنائے، اس کے اچھے اثرات ظاہر ہوں اور آپ کی تمام قومی، ملی وانسانی خدمات کو قبول فرمائے۔ آمین

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

ڈاکٹر امام عمیر احمد الیاسی
چیف امام

Central Office : Imam House, Masjid Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110 001 (India)
Phone : +91-11-2338 5777 Telefax : +91-11-2338 5963 Mobile : 9811641786
E-mail : moulanailyasi@gmail.com, allindiaimamorganization@gmail.com
Website : [illegible]

Regd.No.: S-17650/87

INSTITUTE OF OBJECTIVE STUDIES

NGO in consultative status (Roster) with the
Economic and Social Council of the United Nations

IOS/MA/PP/2018-2/139.

تاریخ:20/فروری2018

بسم اللہ الرحمن الرحیم

گرامی قدر مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب زید لطفہ
امیر، مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

اللہ کرے آپ پوری طرح بصحت وعافیت ہوں۔

15/جنوری 2018 کا مکتوب نظر نواز ہوا، ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' کے عنوان سے مورخہ 9-10/مارچ 2018 کو دہلی کے رام لیلا میدان میں منعقد کی جانے والی 34/ویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کے بارے میں معلوم ہو کر مسرت ہوئی۔ حالات کے نقطۂ نگاہ سے ایسے پروگرام بہت ضروری بھی ہیں اور مفید بھی۔

امید ہے کہ ملک وبیرون ملک کے مشاہیر علمائے کرام ودانشوران ملک وملت نیز دینی وسماجی اہم شخصیات کے بصیرت آمیز خطابات، تقاریر اور مقالات کے باعث ملکی وعالمی سطح پر پائی جانے والی بے اطمینانی وبے چینی وعدم تحمل وکشیدگی کو دور کرنے میں مدد ملے گی اور مجوزہ کانفرنس انسانیت کو درپیش مسائل کے حوالے سے سنگ میل ثابت ہوگی۔

ہماری طرف سے پیشگی مبارکباد قبول فرمائیں۔ اللہ جل شانہ سے دعا ہے وہ کانفرنس کو اپنے مقاصد میں کامیابی سے ہمکنار کرے۔ آمین

والسلام

خاکسار

(ڈاکٹر محمد منظور عالم)
چیئرمین

P.O. BOX NO. 9725, INSTITUTE BUILDING, 162, JOGABAI MAIN ROAD, JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025 INDIA

Anjuman Minhaje Rasool (S)

انجمن منہاج رسولﷺ

(Organization Way of the Prophet)

پاسدار منہج مصطفیٰ ﷺ

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کا شمار ہندوستان کی قدیم و ممتاز ملی جماعتوں میں ہوتا ہے جمعیت نے متحدہ ہندوستان اور بعد ازیں آزاد بھارت میں قرآن و سنت کی احیاء و حمایت اور شرک و ضلالت کے خاتمہ و مخالفت کی بابت جو خدمات انجام دیں اور جو قربانیاں دیں ہیں اسکے ذکر کے بغیر ملت اسلامی ہند کی تاریخ نامکمل ہے تبلیغ دین، اصلاح معاشرہ، رفاہ عامہ اور سماجی خدمات کے ساتھ ساتھ جمعیت اہل حدیث ہند نے تحریک آزادی ہند بھی سرگرم کردار ادا کیا تھا یہی نہیں بلکہ ملک کی تعمیر جدید میں بھی جمعیت ہمیشہ آگے رہی ہے

جبکہ دور حاضر میں جمعیت اہل حدیث ایک طرف جہاں انسانی حقوق و اقدار کی حفاظت، سماجی رواداری کے قیام اور امن و سلامتی کی بحالی و تحفظ کیلئے برسرپیکار ہے وہیں دوسری طرف جمعیت داعش جیسے فتنوں اور باطل نظریات سے پیدا ہوئی دہشت گردی و شدت پسندی کے خلاف انتہائی پامردی سے جہد مسلسل کر رہی ہے

آج جب ملکی و عالمی سطح پر متعدد دعوتی و ملی جماعتوں کو نشانہ بنایا جا رہا ہے ایسے آزمائشی حالات میں بھی جمعیت مکمل استقلال و استقامت سے اپنے منہج کی پاسداری کے ساتھ اپنے مقاصد حسنہ کے حصول کے لئے پیہم رواں ہے اور بلا شبہ ان کارہائے نمایاں کے لئے پوری جمعیت لائق داد و تحسین ہے مگر یہاں مجھے یہ کہتے ہوئے کوئی عار نہیں کہ "تصور جماعت ممکن نہیں بغیر امام کے" جی ہاں جمعیت کے امیر مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی دامت برکاتہم کی ہمہ کمال، انتہائی فعال اور جہانیاں جہاں گشت شخصیت نے ۲۰ ویں صدی عیسوی میں قومی و بین الاقوامی سطح پر جمعیت اہل حدیث ہند کا جس موثر انداز سے اجمالی تعارف کرایا ہے وہ صرف مولانا موصوف کا ہی خاصہ ہے جو صلہ کی تمنا و ستائش کی پرواہ کیے بغیر صرف اپنے عزم مصمم کے ساتھ متواتر اپنے قائدانہ سفر کو جاری رکھے ہوئے ہیں

مجھے یہ جان کر حد درجہ مسرت ہے کہ ۹، ۱۰ مارچ ۲۰۱۸ کو جمعیت اپنی ۳۴ ویں کل ہند کانفرنس کا انعقاد امسال بھی دہلی میں کر رہی ہے اس کانفرنس کی سب سے اہم بات یہ ہے کہ اس کے عنوانات نہ صرف انسانی برادری بلکہ کرہ ارض اور اسکے تمام ساکنان کو درپیش اکثر مسائل بشمول دہشت و تشدد اور منشیات و ماحولیات کا احاطہ کیے ہوئے ہیں۔ اللہ رب العزت والجلال سے دعا ہے کہ یہ کانفرنس اپنے تمام مقاصد مبارکہ کے ساتھ کامیابی سے ہمکنار ہو اور اسکے فیوض و برکات سے مخلوق کل و انسانی برادری عام طور پر اور ملت احمد مصطفیٰ ﷺ خاص طور پر مستفید ہو

وما توفیقی الا باللہ

بصد خلوص خاک پائے اسلاف

سید اطہر حسین دہلوی

۲۷ فروری ۲۰۱۸ مطابق ۹ جمادی الثانی ۱۴۳۹

"Noor Manzil" 2545 / 2, Tiraha Behram Khan, Darya Ganj, New Delhi 110002 India Telefax.: +91-11-23257566
www.minhajerasool.org, Email: minhajerasool@gmail.com

दिल्ली स्टेट हज कमेटी
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
(संसद के अधिनियम 35/2002 के अंतर्गत स्थापित)

دہلی اسٹیٹ حج کمیٹی
Delhi State Haj Committee
Government of NCT of Delhi
(Constituted under the Act of Parliament No. 35 of 2002)

Ashfaque Ahmad Arfi
Executive Officer

الحمد اللہ مقام مسرت ہے کہ مرکزی جمعیۃ اہل حدیث، ہند اپنا چونتیسواں دو روزہ کل ہند اہل حدیث کانفرنس منعقد کررہی ہے۔ اس مبارک موقع پر میری تمام نیک تمنائیں جمعیۃ کے ساتھ ہیں۔

قابل ذکر ہے کہ جمعیۃ نے قومی، ملی، سماجی اور تہذیبی وثقافتی سطح پر اپنی لائق تحسین خدمات کے سو سال سے زیادہ عرصہ پر مشتمل تاریخی سفر میں مذہبی امور ومسائل کے ساتھ ساتھ سماج، ملک اور عام انسانیت سے وابستہ حالات ومعاملات کو بھی اپنی سرگرمیوں میں شامل رکھا ہے۔ اس اعتبار سے ''امن عالم کا قیام اور تحفظ انسانیت'' کے موضوع پر دو روزہ کانفرنس کا انعقاد، موجودہ معاشرہ کو درپیش چند در چند خطرات وخدشات اور ان کے انسداد اور انسانیت کو نجات دلانے کے لیے جمعیۃ کے گہرے سروکار کو سامنے لاتا ہے۔

میں بارگاہ رب العزت میں دست بہ دعا ہوں کہ جمعیۃ کا کاروان تیز گام اپنی منزل تک رسائی اور مقاصد کی جستجو وتکمیل کے لیے اور بھی جنوں آشنا ہو اور اس کی مساعی کامیابی کے شرف سے ہمکنار ہو سکے۔

(اشفاق احمد عارفی)
ایگزیکٹو آفیسر

بخدمت گرامی قدر

جناب حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب،

صدر،
مرکزی جمعیۃ اہل حدیث، ہند

Office: Haj Manzil, Asaf Ali Road, New Delhi-110002, Phone: 011-23230507, Fax: 011-23234041
Mob: 9910718476, Email: ashfaquearfi@gmail.com, delhistatehajcommittee@gmail.com
Visit on : www.delhihajcommittee.com, www.dshc.in

ALL INDIA MUSLIM MAJLIS-E MUSHAWARAT

(UMBRELLA BODY OF INDIAN MUSLIM ORGANISATIONS AND EMINENT PERSONALITIES)

ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिसे मुशावरत آل انڈیا مسلم مجلس مشاورت

پیغام برائے چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس

۲رفروری ۲۰۱۸ء

مکرمی ومحترمی جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب

امیر، مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید ہے مزاج گرامی بخیر ہوں گے۔

اس اطلاع سے مسرت ہوئی کہ ۹-۱۰ مارچ ۲۰۱۸ء کو مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی "چونتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس" نئی دہلی میں منعقد ہورہی ہے جس کا عنوان "قیام امن عالم وتحفظ عالم انسانیت" رکھا گیا ہے۔ موجودہ عہد میں اس طرح کے عنوانات پر چھوٹے بڑے پروگرام کی بڑی افادیت و معنویت ہے۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند ہمیشہ سے ہی ملک وسماج کے حساس مسائل پر رہنمائی کرتی آئی ہے اور آج جب عالم انسانیت اور ہمارا ملک، سماج میں پھیلی بے شمار برائیوں سے نبرد آزما ہے تو ایسی حالات میں مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی جانب سے کی جانے والی یہ کانفرنس وقت کی اہم ضرورت محسوس ہوتی ہے۔

عالمی اور ملک کی سطح پر اسلام اور مسلمانوں کے لیے جو حالات پیدا کیے گئے ہیں ان میں زبانی اور تحریری طور پر قیام امن کے پیغام کو وسیع پیمانے پر عام کرنے کی شدت سے ضرورت محسوس ہوتی ہے۔ منشیات، جوا، جہیز اور رشوت جیسی سماجی برائیوں کو ختم کرنے کی جدوجہد کے ساتھ، اسلامی رواداری، آپسی بھائی چارہ اور قومی یکجہتی خاص طور سے توجہ طلب ہے۔ اس کے علاوہ مختلف عنوانات پر ہندی انگریزی اردو میں پمفلٹ کی شکل میں انسانی حقوق، فرقہ وارانہ ہم آہنگی اور باہمی لین دین کے حوالے سے اسلام اور امت مسلمہ کے موقف کو برادران وطن کے سامنے لانا بھی ایک اہم ذمہ داری ہے۔ مزید یہ کہ جس پیمانے پر غلط پروپیگنڈا کرکے اسلام اور مسلمانوں کی غلط شبیہ پیش کی جاتی ہے اس سے زیادہ یا کم از کم اسی پیمانے پر نفرت پر مبنی اس پروپیگنڈا کا توڑ کرنا اہل دانش کی اہم ذمہ داریوں میں شامل ہے۔

ہمیں امید ہی نہیں بلکہ یقین ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند وقت کے تقاضوں کے پیش نظر کانفرنس کے موضوعات وعنوانات میں ضروری امور کو شامل کرے گی۔ ہماری دعا ہے کہ اللہ تعالی اس کانفرنس کو کامیابیوں سے ہمکنار کرے اور اس کے نفع کو عام اور تام کرے۔ آمین

نوید حامد

صدر

جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب

امیر، مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

اہل حدیث منزل، اردو بازار، جامع مسجد

دہلی-۱۱۰۰۰۶

D-250 Abul Fazal Enclave Part-1, Jamia Nagar, New Delhi-110025 ● Tel.: 011-26946780, 26941341 Mob.: +91-9990366660
E-mail: mushawarat@mushawarat.com Web.: www.mushawarat.com

ਦਿੱਲੀ ਘੱਟ ਗਿਣਤੀ ਕਮਿਸ਼ਨ
दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग دہلی اقلیتی کمیشن

DELHI MINORITIES COMMISSION

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
C-BLOCK, 1st FLOOR, VIKAS BHAWAN, NEW DELHI-110002
Telefax : 23370825
E-mail : dmc_nct@rediffmail.com
Website : www.dmc.delhigovt.nic.in

सत्यमेव जयते

DR. ZAFARUL-ISLAM KHAN
CHAIRMAN

بسم اللہ الرحمن الرحیم

۲۲ فروری ۲۰۱۸

برادر محترم و مکرم مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی حفظہ اللہ ورعاہ

وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

مجھے یہ جان کر بہت خوشی ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند دہلی کے رام لیلا گراونڈ میں ''قیام امن عالم و تحفظ انسانیت'' کے موضوع پر دوروزہ کانفرنس منعقد کر رہی ہے۔

جمعیت اہل حدیث کی خدمات اسلام اور امن و آشتی کے لئے اہل اسلام اور دوسرے برادران وطن کی نظروں میں بڑی وقعت رکھتی ہیں۔ دہشت گردی کے سلسلے میں بھی جمعیت کا موقف بہت واضح رہا ہے۔ مجھے امید ہے کہ رواداری، ہم آہنگی اور قومی یکجہتی کو تقویت پہنچانے میں یہ کانفرنس مددگار ہوگی اور اس کا پیغام دور دور تک جائے گا۔ اللہ عزوجل آپ کی کوششوں کو کامیاب فرمائیں۔ آمین

ڈاکٹر ظفر الاسلام خان
صدر دہلی اقلیتی کمیشن

Jamia Hamdard

Deemed to be University,'A' Category - NAAC
Hamdard Nagar, New Delhi-110 062, India
Tel.: +91-11-26059662 (O), Telefax: +91-11-26059663
E-mail : vc@jamiahamdard.ac.in
Website : http://www.jamiahamdard.edu
Personal Website: http://www.seyedehasnain.org

Professor Dr. Seyed E. Hasnain
Phd, DSc(h.c.), DMedSc(h.c.), FNA, FTWAS, ML, FAAM
Vice Chancellor

Feb 12,2018

عالی جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند۔ دہلی

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

جناب عالی!

اسلام امن وسلامتی کا مذہب ہے، پیغمبر اسلام رسول اکرم ﷺ نے اپنی تعلیمات میں صرف انسانوں کے ساتھ ہمدردی کا برتاؤ کرنے کا ہی نہیں بلکہ جانوروں کے ساتھ بھی رحمدلی کا مظاہرہ کرنے کا حکم دیا ہے، آپ پوری دنیا کے لئے رحمت بنا کر بھیجے گئے ہیں اس لئے ظلم وتشدد، نفرت وبیزاری کسی کے بھی ساتھ ہو اس سے آپ نے برہمی کا اظہار فرمایا ہے، قرآن کریم کے مطالعہ سے بھی ہمیں یہ بات معلوم ہوتی ہے کہ ادنی ہو یا اعلیٰ، چھوٹا ہو یا بڑا، امیر ہو یا غریب، ہندو ہو یا مسلمان، سکھ ہو یا عیسائی تمام مخلوق اللہ کا کنبہ ہے، سب کے ساتھ فرقہ وارانہ ہم آہنگی، قومی یکجہتی، اسلامی رواداری اور پیار ومحبت کے ساتھ پیش آنا اور ایک دوسرے کو فائدہ پہنچانا چاہئے اور قرآن کی تعلیمات میں تو ہمیں یہاں تک ملتا ہے کہ "تم اس کے ساتھ بھی بھلائی کرو جو تمہارے ساتھ برائی کرے"۔ اس قرآنی مشن کو جو لوگ عام کرتے ہیں یا جو تنظیمیں ایسی تعلیمات کو فروغ دیتی ہیں جس سے سماج میں اطمینان وسکون کا ماحول بنے وہ قابل مبارک باد ہیں۔

مرکزی جمعیۃ اہل حدیث ہند "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کے تعلق سے جو کانفرنس منعقد کر رہی ہے وہ وقت کی ضرورت ہے اس کانفرنس کے انعقاد پر میں آپ تمامی حضرات کو مبارک باد دیتا ہوں اور دعا بھی کرتا ہوں کہ اس کے مثبت نتائج برآمد ہوں اور سماج کو اس کانفرنس سے خاطر خواہ فائدہ پہنچے تاکہ وہ سماجی برائیاں جو آئے دن ہماری نوجوان نسلوں کو تباہ وبرباد کر رہی ہیں اس پر قدغن لگ سکے۔ آمین

سید احتشام حسنین

(شیخ الجامعہ)

SHAH WALIULLAH INSTITUTE
شاہ ولی اللہ انسٹی ٹیوٹ
Off. Masjid Kaka Nagar, Dr. Zakir Husain Marg, Kaka Nagar, New Delhi-110003
Ph.: 011-26953430 Mob.: 9811740661 Email: shahwaliullah_institute@yahoo.in

Ref. No. :......................

Date: 18/02/2018

پیغام

مرکزی جمعیت اہلحدیث ہند کے زیر اہتمام منعقد ہونے والی چونتیسویں آل انڈیا اہلحدیث کانفرنس میں شرکت کا دعوت نامہ ملا اور اس کے ساتھ جمعیت کی جانب سے شائع ہونے والی اردو، ہندی، اور انگریزی میگزینس کے خصوصی نمبروں کے لیے پیغام کی فرمائش بھی نظر نواز ہوئی۔ میں اولا مرکزی جمعیت اہلحدیث ہند کی جانب سے اس کل ہند اہلحدیث کانفرنس کے انعقاد اور پھر 'قیام امن عالم وتحفظ انسانیت' اسلامی رواداری، فرقہ وارانہ ہم آہنگی، قومی یکجہتی، اور فروغ تعلیم جیسے اہم موضوعات کے انتخاب بلکہ حسن انتخاب پر جمعیت کے جملہ ارکان وعہدیداران بالخصوص حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب امیر مرکزی جمعیت اہلحدیث ہند کو دل کی گہرائیوں سے مبارکباد دیتا ہوں کہ انہوں نے عالم اسلام خاص کر ہندوستان کے موجودہ حالات کے تناظر میں اسلام اور اسلامیان ہند کے خلاف پھیلائی گئی غلط فہمیوں، پروپگنڈوں اور بدگمانیوں کو دور کرنے کی مخلصانہ جدوجہد کی ہے اور اسلامی تعلیمات واقدار کو فروغ دینے کی بھرپور کوشش کی ہے۔ میں، موجودہ امیر جمعیت کی وسعت فکری اور اعتدال پسندی کا قائل رہا ہوں کہ انھوں نے ماضی میں بڑی حکمت عملی ودوراندیشی سے محض کلمہ کی بنیاد پر ہندوستان کے تمام مکاتب فکر ومسالک کے علماء ومشائخ کو اور انسانیت کی بنیاد پر برادران وطن کو جمعیت کے پلیٹ فارم پر جمع کرکے، نہ صرف اتحاد واتفاق، قومی یکجہتی، بھائی چارگی اور ملی اجتماعیت کا ثبوت دیا ہے بلکہ صحیح معنوں میں اسلامی روح کو پیش کرنے کی سعی بلیغ کی ہے۔

مجھے یقین ہے کہ حسب سابق اس عظیم الشان قومی وملی کانفرنس سے بلند ہونے والی اجتماعی آواز بھی اسلامیان ہند کی رہنمائی اور ان کی حوصلہ افزائی کی باعث ثابت ہوگی اور ان کے شخصی وجود وملی تشخص کے تحفظ وبقا میں اہم کردار ادا کرے گی۔

(مولانا ومفتی) عطاء الرحمٰن قاسمی
چیئرمین
شاہ ولی اللہ انسی ٹیوٹ، نئی دہلی

Mob:- +91- 9897862331, 7417056092
e-mail:- zrrizvi786@gmail.com
Web: www.madarsaboard.org.in

Maulana Zahid Raza Rizvi
ACTING CHAIRMAN
Uttarakhand Madarsa Education Board Dehradun

مولانا زاہد رضا رضوی
کارگزار صدر
اتراکھنڈ مدرسہ تعلیمی بورڈ، دہرہ دون

Add:- Alp Sankhyak Kalyan Bhavan 'B' Block, Shaheed Bhagat Singh Colony, Adhoiwala, Dehradun-248001- Ph:- 0135-2781157

Ref. No.786-92/CUMEB/2/2018

Date.18.02.2018........

فخر ملت عالی جناب
حضرت مولانا اصغر علی صاحب مدظلہ العالی
امیر۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث، ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ --------------- امید کہ مزاج عالی بخیر ہوگا،

مرکزی جمعیت اہل حدیث کی جانب سے مورخہ ۹/۱۰ مارچ ۲۰۱۸ کو دہلی کے رام لیلا میدان میں منعقد ہونے والی عظیم الشان کانفرنس بنام ''**قیام امن و عالم و تحفظ انسانیت**'' کا دعوت نامہ موصول ہوا یاد آوری اور کرم فرمائی کا بیحد شکریہ۔

آپ نے کانفرنس کا جو عنوان منتخب کیا ہے وہ ہندوستان کے موجودہ حالات اور مسلم قوم بلکہ پوری انسانیت کے لئے بیحد حساس اور اشد ضروری ہے۔ آج جبکہ دنیائے انسانیت امن وسکون کی پناہ گاہوں کی تلاش اور فتنہ وفساد وقتل وغارت گری کی تباہ خیزیوں سے خود کو محفوظ کرنے کی جستجو میں ٹھوکریں کھاتی پھر رہی ہے ایسے میں ہر حق پسند فرد اور تنظیم کی ذمہ داری ہے کہ اسلام کے پیغام امن وانسانیت کو عام کرنے اور اس کی تعلیمات کو برادران وطن تک پہنچانے کی ذمہ داری نبھا کر حب الوطنی کا فریضہ انجام دیں۔ جو کہ دور حاضر میں مرکزی جمعیت اہل حدیث آپ کی قیادت میں بحسن وخوبی انجام دے رہی ہے۔

محترم المقام، امن تین لفظوں پر مشتمل ہے لیکن لفظ امن کا مفہوم اور مطلب نہایت وسیع ہے کیوں کہ امن اپنے ماحول اور اپنی علاقائی نوعیت کے اعتبار سے ہمہ پہلو ہوتا ہے۔ امن انفرادی بھی ہوتا ہے اور اجتماعی بھی، امن خاندانی بھی ہوتا ہے اور سماجی بھی، امن اخلاقی بھی ہوتا ہے معاشرتی بھی، امن شہری بھی ہوتا ہے اور ریاستی بھی، امن سیاسی بھی ہوتا ہے اور دینی بھی، امن قومی بھی ہوتا ہے اور ملی بھی، امن بین المذاہب بھی ہوتا ہے اور فرقہ وارانہ بھی، امن بین الممالک بھی ہوتا ہے اور بین المسالک بھی۔ امن کا زنجیری سلسلہ بالآخر امن عالم پر منتج ہوتا ہے۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ اسی امن عالم کے قیام سے انسانیت کا تحفظ ممکن ہے۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث آپ کی مخلصانہ سرپرستی میں مختلف مواقع پر ملت اسلامیہ کی رہنمائی کرتی رہی ہے۔ مسلم معاشرے میں پھیلی ہوئی خرابیوں کو دور کرنے کے لئے ہر میدان میں آپ کی جدوجہد کے روشن نقوش موجود ہیں۔ اتحاد بین المسالک کی مخلصانہ کوشش کرنا پسماندہ علاقوں میں دینی مکاتب، مدارس ومساجد قائم کرنا، تعلیمی اداروں میں باہمی تعاون واشتراک کی فضا قائم کرنا، فرقہ پرستوں کی جانب سے مدارس اسلامیہ کو دہشت گردی کا نشانہ بنانے کی مخالفت کرنا، مسلم سماج میں خاص طور پر شراب، جوا، جہیز، رشوت، جہالت وبھکمری کے خلاف لڑائی لڑنا اور کسی بھی مسلم قوم کی حساس مسئلے پر پوری ہمت وطاقت کے ساتھ تحریک چلانا مرکزی جمعیت اہل حدیث کا انفرادی کارنامہ ہے۔

مجھے پوری امید ہے کہ یہ کانفرنس پوری مسلم قوم اور عالم انسانیت کے لیے رہنما ثابت ہوگی اور اتحاد ملت کے لئے بھی سنگ میل کا کام کریگی۔

میں انشاء اللہ تعالیٰ حکم کی تعمیل کرتے ہوئے ۲ روزہ کانفرنس میں شرکت کی سعادت حاصل کرونگا۔

رب کریم سے دعا ہے کہ یہ عظیم الشان کانفرنس معنوی اعتبار سے کامیابی کی منازل سے ہمکنار ہو۔

فقط والسلام
آپکا مخلص

(مولانا زاهد رضا رضوی)
امیر شریعت، اتراکھنڈ
چیرمین۔ اتراکھنڈ مدرسہ تعلیمی بورڈ

DR. S. FAROOQ
M. Sc. Ph. D. (Gold Medalist)
D. Sc., P.G.D.E.M., F.R.S.H. (London)

ڈاکٹر سید فاروق

بتاریخ: ۲۳ر فروری ۲۰۱۸ء

باسمہ تعالیٰ شانہ

جناب حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

آپ نے مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام بعنوان "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" پر منعقد ہونے والے کانفرنس میں شائع ہونے والے سووینیر کے لئے پیغام لکھنے کا حکم دیا جس کی تعمیل میں یہ مختصر پیغام تحریر خدمت ہے۔

پیغام

اس دور میں سب خیریت ہے مگر
یہی کمی ہے کہ انسانیت کم ہے

میں مبارکباد دیتا ہوں کہ "قیام امن عالم وتحفظ انسانیت" کے عنوان سے ایک عظیم کانفرنس مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند مورخہ: ۹ر ۱۰ر مارچ ۲۰۱۸ء میں منعقد کر رہی ہے۔

یہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کا حب الوطنی کے تئیں ایک قابل ستائش قدم ہے جسے ہر با اثر چھوٹی بڑی تنظیم کو اپنی استطاعت کے مطابق پھیلانا چاہئے اور ہر ایک کو انسان دوست بننے کی کوشش کرنی چاہئے، اور عورتوں اور بچوں کا استحصال ختم ہو، بزرگوں کی عزت ہو، آپسی رواداری قائم ہو، ملک کی ملکیت، ذاتی سرمایہ، اور ذہن ملک کی ترقی، تعلیم اور تعمیر میں کام آئے اور ہم سب کا ایک ہی موقف ہو کہ

شانتی پسند ہیں ہم دل رکھتے ہیں نفرتوں سے خالی
عزت وطن کی جس کو ہے اس نے نہ آپس میں بیر پالی

والسلام

بخدمت حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

دعاؤں کا طالب

(ڈاکٹر سید فاروق)

Address:
321-D Okhla Village,
New Delhi- 110025 (India)

E-mail : dr.sfarooq.him@gmail.com, Fax 91-135-2640264

2, Turner Road,
Clement Town,
Dehradun - 248002
Uttarakhand (India)

WELFARE PARTY OF INDIA

E-57/1, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025
Phone: 011-29948444, Email: welfarepartyofindia@gmail.com

24 فروری 2018

حضرت مولانا اصغر امام مہدی سلفی، دامت برکاتہم

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید ہے مزاج گرامی بخیر ہوگا۔ یہ جان کر بے حد مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند 9-10 مارچ کو دہلی کے رام لیلا میدان میں "قیام امن عالم و تحفظ انسانیت" کے عنوان پر ایک آل انڈیا کانفرنس منعقد کر رہی ہے۔ اللہ تعالی سے دعا ہے کہ یہ کانفرنس ظاہری و معنوی دونوں لحاظ سے کامیاب ہو اور انسانی سماج جن مسائل و مصائب سے جوجھ رہا ہے یہ کانفرنس اس کا مداوا بن سکے۔

نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی حدیث ہے "خیر الناس من ینفع الناس"۔ تم میں بہتر وہ ہے جو انسانوں کے لئے نفع بخش ہوگا۔ ہم جس دین کے داعی و علمبردار ہیں وہ دین سراپا رحمت ہے جو حقوق اللہ اور حقوق العباد سے عبارت ہے۔ قرآن مجید کی متعدد آیات اور سیرت نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے سلسلے میں ارشادات حقوق العباد کے تعلق سے موجود ہیں۔ انسانوں کے حقوق کی ادائیگی میں ہم نے ڈھیل کی تو یقیناً آخرت میں سخت بازپرس ہوگی۔

اگر ہندوستانی مسلمان برادران وطن کے درمیان اپنے قول و عمل سے اسلام کی شہادت پیش کرسکیں اور عام انسانی سماج کو مشکلات و مصائب سے نجات دلانے کی سعی و جہد میں اپنا مؤثر کردار ادا کریں تو وہ اس ملک کے لئے زحمت نہیں (جیسا کہ آج سمجھا جاتا ہے) بلکہ ایک سرمایہ ثابت ہو سکتے ہیں۔ اللہ تعالی اس امت کو اپنی ذمہ داریاں ادا کرنے کی توفیق عطا کرے۔

کانفرنس کی کامیابی کے لئے نیک خواہشات

والسلام

ڈاکٹر سید قاسم رسول الیاس
قومی صدر

JAMIA MILLIA ISLAMIA Prof. Md. Ehsaul Haque (Kausar Mazhari) जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(A Central University by an Act of Parliament)

Department of Urdu شعبۂ اردو

Faculty of Humanities and Languages
Maulana Mohammed Ali Jauhar Marg, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Tel: 26988044, 26981717 Extn. 2830, 2832

تاریخ:25.02.2018

پیغام

یہ جان کر بہت خوشی ہوئی کہ انسانی تہذیبی اقدار اور اخلاقی افکار کے اجتماعی زوال کے اس عہد میں آپ ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' کے عنوان سے آل انڈیا کانفرنس کا انعقاد کررہے ہیں۔ دور حاضر میں انسانی حقوق کی پامالی، اخلاقی بے زاری اور عدم تحمل کی جو فضا قائم ہوگئی ہے اس سے تمام عالم انسانیت کو خطرہ لاحق ہے۔ آپ نے بہت معقول اور درست فیصلہ کیا ہے کہ فرقہ واریت، فسطائیت، قومی افراتفری اور بے حسی کی دھند کو صاف کرنے اور لوگوں کو خواب غفلت سے بیدار کرنے کے لیے کانفرنس کی جائے۔ فکرو احساس، بحث ومباحثہ اور باہمی گفت وشنید کے ذریعے ہی معاملات زندگی کو خوش اسلوبی کے ساتھ طے کیا جاسکتا ہے۔ امن کی ڈور جس قدر مضبوط اور تہذیبی اقدار جس قدر توانا ہونگی ہماری اجتماعی زندگی بھی اسی قدر مستحکم ہوگی۔

مجھے امید ہے کہ آپ کی ''قیام امن عالم اور تحفظ انسانیت'' کی یہ سعی مستحسن یقیناً کامیاب ہوگی چنانچہ میں اس کار نیک کے لیے آپ کو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔

پروفیسر شہپر رسول

صدر، شعبۂ اردو

جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی-25

Tel: No.: 011-49539000
Fax No.: 011-49539099

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद्

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان

Website.: www.urducouncil.nic.in
E-mail.: urducouncil@gmail.com
urduduniyancpul@yahoo.co.in

National Council for Promotion of Urdu Language
Ministry of Human Resource Development
Government of India

فروغ اردو بھون
Farogh-e-Urdu Bhawan
FC-33/9, Institutional Area
Jasola, New Delhi-110025

مورخہ: 26 فروری 2018

پیغام

یہ بے حد مسرت کی بات ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند 'قیام امن عالم وتحفظ انسانیت' کے عنوان سے ایک کانفرنس کا انعقاد کر رہی ہے۔ آج کے عہد میں جب کہ پوری انسانی کائنات تشدد، تصادم اور انتشار سے دوچار ہے اور بہت سارے مسائل بھی درپیش ہیں۔ ایسے میں قیام امن عالم کے لیے یہ اقدام قابل ستائش ہے۔ خاص طور پر جب اس طرح کے اقدامات علمائے کرام اور ملی تنظیموں کی طرف سے ہوں تو اس کی معنویت بڑھ جاتی ہے۔

مجھے امید ہے کہ اس کانفرنس کا مثبت پیغام پوری دنیا میں جائے گا اور قیامِ امن کی ایک نئی راہ ہموار ہوگی۔ لوگ دہشت گردی اور دہشت گرد تنظیموں کی سازشوں کو سمجھنے میں بھی کامیاب ہوں گے۔

یہ کانفرنس وقت کی ضرورت ہے اس لیے میری تمام نیک خواہشات اور دعائیں آپ کے ساتھ ہیں۔

(پروفیسر ارتضیٰ کریم)
ڈائرکٹر، قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، نئی دہلی

بخدمت

محترم اصغر علی امام مہدی سلفی
ناظم عمومی، جمعیت اہل حدیث ہند

MOHAMMAD ADEEB
Former MP, Rajya Sabha

Villa No–113, Laburnum Society,
Sushant Lok, A–Block
Sector–28A, Gurgaon,
HARYANA
Mob No. 9868181945
Email: madeeb45@yahoo.co.in

Date: 27/02/2018

پیغام

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند، ہندوستان کی فعال ومتحرک تنظیموں وجماعتوں میں ایک اہم تنظیم ہے، جس کی اپنی ایک شاندار تاریخ رہی ہے اور جس سے وابستہ علماء وزعماء کا تحریک آزادی وطن میں اور آزادی کے بعد اس کی تعمیر وترقی میں اہم کردار رہا ہے، جس کا اعتراف ہندوستان کے پہلے وزیر اعظم پنڈت جواہر لعل نہرو نے بھی کیا ہے۔

یہ ایک خوش آئند بات ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند ایک خالص دینی جماعت ہونے کے ساتھ ساتھ سماجی کاموں سے بھی سروکار رکھتی ہے اور اس کے ذمہ داران ملی اور سماجی کاموں میں بڑھ چڑھ کر حصہ لیتے ہیں۔

یہ جان کر مجھے خوشی ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی جانب سے ''قیام امن عالم وتحفظ انسانیت'' کے موضوع پر ایک دو روزہ نیشنل کانفرنس منعقد کی جا رہی ہے۔ موجودہ حالات میں جس کی شدید ضرورت ہے، آج ہندستان ہی نہیں بلکہ پوری دنیا میں مسلمانوں کے خلاف نفرت پھیلائی جا رہی ہے، آج خود ہمارے ملک میں تعمیر وترقی کے بجائے نفرت کی سیاست کی بنیاد پر حکومت بنائی جا رہی ہے اور مسلمانوں کے خلاف ماحول بنایا جا رہا ہے۔

میں ایسے پرفتن دور میں اس عظیم الشان کانفرنس کے انعقاد پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے سربراہ مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کو مبارکباد دیتا ہوں اور اس کی کامیابی کے لیے دعا کرتا ہوں۔

محمد ادیب

बिस्मिल्लाहिर्ररहमानिर्रहीम

दाइश के आतंकवाद के खिलाफ अहले हदीस ओलमा का सामूहिक फ़तवा

प्रशनः१. इस हकीकत के बावजूद कि इस्लाम अम्न व शान्ति का धर्म है और इसमें किसी भी प्रकार की हिंसा अतिवाद और आतंकवाद की गुंजाइश नहीं है, भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में जारी आतंकवाद की घटनाओं और कार्रवाइयों को इस्लाम और मुसलमानों से जोड़ कर पेश किया जाता है जबकि इस्लाम और उसके प्रतिनिधि महान ओलमा-ए-इस्लाम ने आतंकवाद को हराम करार दिया है और आज से लगभग दस साल पूर्व मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने भी उसकी अवैधता पर फतवे जारी किये। इसके बावजूद मुसलमानों पर ऐसे आरोप लगाये जा रहे हैं और क्या प्रतिक्रिया के तौर पर भी आतंकवाद का जवाब आतंकवाद से दिया जा सकता है जैसा कि कुछ लोग आत्मघाती हमलों के द्वारा इस तरह के काम करते हैं इस्लाम में इसका क्या हुक्म है?

प्रश्न२ः आज कल खिलाफते इस्लामिया का दावा करने वाली तथाकथित संगठन दाइश और इस जैसे दूसरे संगठन जो कि विभिन्न देशों में भय व आतंक फैलाये हुये हैं हुकूमतों और अवाम के खिलाफ हथियार उठाये हुये हैं, निर्दोष मर्दों, औरतों बूढ़ों और बच्चों पर जान लेवा हमले कर रहे हैं और उनके इन आतंकी हमलों और तकफीरी कार्रवाइयों की वजह से अम्न व शान्ति भंग हो चुकी है। इन हमलों में अब तक हज़ारों लोग मर चुके हैं माल असबाब तबाह हो चुके हैं और अवाम को हर घड़ी अपने जान व माल परिवार और साथी संबन्धियों के लिये भय और आतंक लगा रहता है तो क्या तथाकथित खिलाफत के नाम पर दाइश या इस जैसे संगठन के द्वारा देश के अम्न व शान्ति और कानून को हाथ में लेने की कोशिश करना, चौक चौराहों और आम जगहों पर बम धमाका करना, सरकारी और व्यक्तगत समपदाओं और सैनिक प्रतिष्ठानों को तबाह करना, जहाजों को हाईजेक करना, पर्यटकों, पत्रकारों और गैर मुल्की कर्मचारियों और नर्सों को बन्धक बनाना या कत्ल करना, पर्दा न करने वाली औरतों, शैक्षिक संस्थानों, समाचार पत्रों और दूतावासों पर हमला करना अवाम और देश के अम्न व शान्ति को भंग करने की कोशिश करना क्या इस्लामी कानून के एतबार से दुरूस्त है?

कुरआन और हदीस की रोशनी में इन महत्वपूर्ण और संवेदन शील प्रश्नों का ज़बाब देने की कृपया करें।

अल मुस्तफती (फतवा पूछने वाली संस्था)
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

उत्तरः निसंदेह इस्लाम पूरी

सृष्टि के पालनहार अल्लाह का दिया हुआ अम्न व शान्ति का धर्म है और वह पूरे संसार के लिये पूर्ण रूप से रहमत है उसमें किसी तरह के आतंकवाद की कोई गुनजाइश नहीं है। मध्यमार्ग पर आधारित इस धर्म ने मानव समाज की महानता व सम्मान का हमेशा ख्याल रखा है और अम्न व शान्ति काइम करने में प्रशंसनीय रोल अदा किया है। ''न नुकसान पहुचाओ और न नुकसान उठाओ'' के महान सिद्धांत पर आधारित इस धर्म ने समाज में बेचैनी पैदा करने वाले तत्वों के खिलाफ हमेशा आवाज उठायी है। अल्लाह तआला अत्यंत दयालु और अत्यंत मेहरबान है उसके अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजे गये। आप की शिक्षाएं हिंसा से खाली और दया व करूणा से भरपूर हैं। इस्लाम मध्यमार्ग, आपसी भाई चारा, मानवता और बिना किसी मतभेद के पड़ोसियों और मानव अधिकार को अदा करने का आदेश व उपदेश देता है अल्लाह के अधिकार के साथ मानव अधिकार को अदा करने का आदेश देता है इस्लाम में अत्याचार और कत्ल शिर्क के बाद सबसे बड़ा अत्याचार और पाप है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''जिस शख्स ने किसी निर्दोष को कत्ल कर दिया तो गोया वह पूरे संसार का कातिल है और जिस ने किसी जान को बचा लिया तो गोया उसने पूरी मानवता को जिन्दा कर दिया''। (सूरे माइदा ३२)

इस्लाम की शिक्षा है कि जिहाद के समय भी दुश्मन के बच्चों, औरतों, बूढ़ों, पूजा करने वालों, प्रोहितों और जो अपने पूजा स्थलों में हों उनकी हत्या न की जाये, न बाग़ात काटे जायें, न खेतियां जलाई जायें, न जानवरों को मारा जाये। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि एक नेक औरत जहन्नम में दाखिल हो गयी क्योंकि उसने एक बिल्ली को भूखा प्यासा बांध रखा था जिस की वजह से मर गयी। और एक गुनहगार इन्सान जिस ने एक प्यासे कुत्ते को कुवें से पानी भर कर पिला दिया था, वह स्वर्ग में चला गया।

इस्लाम की न्यायिक व्यवस्था में इस बात की कदापि गुनजाइश नहीं है कि एक शख्स की गलती का इन्तेकाम दूसरे से लिया जाये। (सूरे अंआम-१६४)

इस्लामी हुकूमत में रहने वाले गैर मुस्लिमों को सुरक्षित रखना हुकूमत और मुसलमानों की जिम्मेदारी है उनको नाहक कत्ल करने वाले को स्वर्ग की हवा भी नहीं लगेगी। (सहीह बुखारी)

इसी प्रकार जंग के मैदान से बाहर रहने वाले कुफ्फार से भी लड़ाई नहीं की जा सकती। इमाम इब्ने कुदामा कहते हैंः इस्लाम के इमामों के दर्मियान इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि नाहक कत्ल हराम है।

इमाम इब्ने तैमिया और इमाम नव्वी फरमाते हैंः सबसे बड़ा पाप कुफ्र और शिर्क है तो इन्सान को नाहक कत्ल करना कैसे वैध हो सकता है। (फतहुल बारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं हिलाकत का गढ़ा जहां गिरने के बाद बाहर निकला असंभव है वह नाहक कत्ल है।

इस लिये बाज संगठनों के द्वारा देश के अम्न व कानून को हाथ में लेने की कोशिश करना, सरकारी और व्यक्तगत समपदाओं और सैनिक प्रतिष्ठानों

को तबाह करना, जहाजों को हाईजेक करना, पर्यटकों, पत्रकारों और गैर मुल्की कर्मचारियों और नर्सों को बन्धक बनाना या कत्ल करना, पर्दा न करने वाली औरतों शैक्षिक संस्थानों, समाचार पत्रों और दूतावासों पर हमला करना अवाम और देश के अम्न व शान्ति को भंग करने की कोशिश करना, चौक चौराहों आम सड़कों पर बम फैंकना व बम धमाका करना, इस्लाम की दृष्टि से दुरूस्त नहीं है इस्लाम में भलाई का हुक्म देना और बुराई का इन्कार करने के लिये शर्त और सिद्धांत हैं इस पर उसको लागू नहीं किया जा सकता। और इस्लाम ने हर व्यक्ति के लिये तमाम मामलात की तरह कार्य सीमा निर्धारित की है जिनका पास न रखने की वजह से फितना व उपद्रव पैदा होता है और अशान्ति पैदा होती है।

दुर्भाग्य से आधुनिक युग में कुछ ऐसे संगठन वजूद में आ गये हैं जो इस्लाम का नाम लेकर मुसलमान के लिये बदनामी का कारण बने हुये हैं और उनके इकदामात किसी भी तरह से इस्लामी शिक्षाओं से मेल नहीं रखते बल्कि जो कार्य वह करते रहे हैं वह इस्लाम में बिल्कुल हराम हैं और स्पष्ट रूप से आतंकवाद है और खिलाफत और इस्लामी हुकूमत का उनका स्वयंभू दावा एक पाखण्ड है और इस्लामी खिलाफत के विपरीत है न इसमें वह शर्तें पायी जा रही हैं और न ही खिलाफत के काइम होने के तकाज़े पूरे करते हैं हरम के प्रधान मुफ्ती और सऊदी उच्चतम ओलमा परिषद के अध्यक्ष मौलाना अल्लामा अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह आले शैख फरमाते हैंः दाइश और इस जैसे संगठन इस्लाम का प्रतिनिधुत्व नहीं करते।

सम्माननीय मौलाना अब्दुल मुहसिन बिन हम्द अल इबाद, शैख मु० अल मुंजिद इत्यादि और अरब के दूसरे महान व विश्वसनीय ओलमा-ए-किराम ने खुले शब्दों में कहा कि यह लोग उम्मत के ख्वारिज हैं भूतपूर्व में भी उनकी कम इल्मी और अज्ञानता की वजह से इस्लाम बदनाम हुआ है और जिसे यह लोग जिहाद कह रहे हैं वह एक फितना और आतंकवाद है क्योंकि जिहाद के कुछ सिद्धांत और शर्तें हैं जिनकी इनके पास कोई रिआयत नहीं है और न वह इसके हकदार हैं इसी तरह इस्लामी खिलाफत के कुछ सिद्धांत और शर्तें हैं जिन की पाबन्दी के बिना न कोई मुसलमानों का खलीफा हो सकता है और न ही किसी के लिये यह जाइज है कि ऐसे अत्याचारी के लिये अमीरूल मोमिनील जैसे भारी भरकम शब्द प्रयोग करें।

दाइश और इस जैसे संगठन जो हरकतें कर रहे हैं उनकी खबरें सुन कर और तस्वीर देख कर इन्सानियत चीख उठती है। यह हिंसा, अत्याचार, हत्या, लूटमार, फितना व फसाद देश के शान्ति पसन्द नागरिकों को बंधक बनाकर उन्हें हलाक करना, जला देना यह ऐसे कुकृत्य हैं जो इन्सान तो इन्सान जानवरों के साथ भी वैध नहीं हो सकते हैं और जिस खिलाफत का लिबादा ओढ़ कर इस्लाम के नाम पर बदनाम किया जा रहा है जो निसंदेह इस्लाम दुश्मन ताकतों और मानवता के कातिलों की गहरी साजिश का नतीजा मालूम होता है।

अफसोस है कि कुछ भोले भाले लोग इन अपराध को पीड़ित इन्सानों और मुसलमानों पर होने वाले अत्याचार की प्रतिक्रिया से परिभाषित करते हैं जो निसंदेह ज्ञान और विचार की कोताही है।

इस्लाम धर्म में किसी के पाप का बदला दूसरे निर्दोष इन्सानों को हलाक करके लेना वैध नहीं है जैसा कि कुरआन और हदीस और पूर्वजों (सलफ) के कथनों से स्पष्ट होता है।

हमारे सामने मजलूम हज़रत खुबैब बिन अदी का आदर्श मौजूद है कि जब जेल में उनके हाथों में चाकू देख कर एक औरत कांप उठी और उसे यह खतरा हुआ कि इस चाकू से मेरे निर्दोष बच्चे की गर्दन न काट दी जाये हजरत खुबैब ने इस औरत के भय या बेचैनी को महसूस किया और उसके भय को खत्म करने के लिये फरमाया हम मुसलमान निर्दोष बच्चों की हत्या नहीं करते और इस बच्चे को मां के हवाले कर दिया हालांकि उस वक्त उनको फांसी पर लटका देने और उनके बच्चों को अनाथ और बीवी को बेवा बना देने की तैयारी हो चुकी थी। दाइश एक ऐसा संगठन और सरफिरे लोगों का एक ऐसा गुट है जो इस्लामी ताक़तों को कमजोर करने मुसलमानों में विखराव पैदा करने और इस्लाम की क्षवि को दुनिया के सामने बिगाड़ने और दुनिया को इस आसमानी मानवतावादी धर्म से घृणा के लिये वजूद में लाया गया है। यह निसंदेह मानवता के लिये खतरा और उम्मते मुस्लिमा के पतन का कारण है ।

इसलिये ऐसे संगठन आतंकवादी हैं और निदंनीय हैं और उनका सपोट करना और उनका किसी प्रकार से सहयोग करना इस्लाम में हराम है। मुस्लिमों के बुद्धिमान वर्ग का यह धार्मिक और चारित्रिक कर्तव्य है कि वह उनके खतरात से दुनिया को बतायें और मुस्लिम नौजवानों को उनका सपोट और भौतिक समर्थन से बचाने की कोशिश करें।

नोटः- यह फ़तवा दिनांक १५ फरवरी २०१५ को जारी किया गया।

आतंकवाद के विरोध में

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का सामूहिक फतवा

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की तरफ से आतंकवाद के विरोध में महान ओलमा और लगभग एक दर्जन मदर्सों के हस्ताक्षर से यह फतवा जारी किया जा रहा है।

प्रश्नः इस वक्त आतंकवाद के नाम पर पूरी दुनिया में हंगामा है। वैश्विक मीडिया से लेकर नेश्नल मीडिया तक हर जगह आतंकवाद की चीख सुनाई देती है और देखने में इसके कई रूप हैं। धमाके, विनाशकारी, अपहरण, कत्ल आत्मघाती हमले, बसों और हवाई जहाजों को हाईजेक करना और उसे तबाह करना आदि। इस आतंकवाद के कारण जान माल सरकारी और प्राइवेट सम्पदाओं को नुक्सान पहुंचता है। जनहित के अनेक प्रतिष्ठान तबाह होते हैं और निर्दोष लोग मारे जाते हैं। इस्लामी ओलमा और मुफ्ती इन सब चीजों के बारे में क्या राय रखते हैं कृप्या हमें यह बतायें कि आतंकवाद को किसी भी सूरत में जगह मिल सकती है। इस्लामी कानून की दृष्टि से असमाजिक कार्रवाइयों की क्या हैसियत है और इन्हें शरीअत किस नजर से देखती है?

उत्तरः धमाके , अपहरण, हत्या, आत्मघाती हमले, हवाई जहाजों और बसों को हाईजेक करके यात्रियों सहित तबाह करना और निर्दोष लोगों को जान से मारना आदि इन सब कामों की इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है। इस्लामी कानून में यह सब काम बिल्कुल हराम हैं। इन्हें कोई भी नाम दिया जाये और इनके पीछे कोई भी सबब बयान किया जाये यह सब काम हर हाल में हराम और गलत हैं। यह काम चाहे कोई मुसलमान करे या गैर मुस्लिम, चाहे आतंकवाद किसी मुस्लिम मुल्क में हो या किसी गैर मुस्लिम मुल्क में, हर हाल में हराम है।

हकीकत यह है कि जब कोई धमाका होता है या कोई विनाशकारी कार्रवाई होती है, अपहरण या हत्या होती है, या आत्मघाती हमले होते हैं, किसी आम सवारी या जहाज की हाई जेकिंग होती है तो लोगों के जान माल इज्जत और धर्म और विश्वास खतरे में पड़ जाते हैं। शान्ति तहस नहस हो जाती है। निर्दोष लोग मारे जाते हैं, जन सम्पदा (पब्लिक प्रापर्टी) तबाह होती है। इंसान भावुकता का शिकार हो जाता है और सारी धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं का दामन छोड़ देता है जब कि इस्लाम इन सबकी सुरक्षा की गारंटी देता है। अल्लाह तआला फरमाता है ''इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फसाद करने (की सज़ा) के मारता है वह गोया (हकीकत में) तमाम लोगों को कत्ल करता है जो लोग दंगा फसाद करके गोया अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और मुल्क में फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं उनकी सजा बस यही है कि कत्ल किये जायें या उनके हाथ पांव उल्टे सीधे काट दिये जायें या उनको देश से निकाल दिया जाये (यह सब

सूरतें हाकिम की राय के अनुसार हों) यह जिल्लत उन (फसादियों के लिये दुनिया में है और) अभी आखिरत में बड़ा अजाब (बाकी) है। सूरे माइदा-३२-३३

कुर्आन की इन दो आयतों से स्पष्ट है कि इस्लामी सजाओं का मकसद ही यह है कि इंसानों की जान माल इज्जत और धर्म व अक्ल तबाह न हो, उनको सुरक्षा मिले, जन शान्ति बाकी रहे, किसी आदमी या गुट को कानून को तोड़ने और मनमानी का अवसर न मिले, और जो विनाशकारी हरकत करें, उपद्रव फैलायें, हत्या करें उन्हें निश्चय सजा मिलनी चाहिये।

कुर्आन में अल्लाह तआला फरमाता हैः और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी बातें तुझ को दुनिया में भली मालूम होती हैं और जो कुछ दिल में है उस पर अल्लाह को गवाह करता है, जब फिर जाता है तो जमीन में दौड़ धूप करता है कि उसमें फसाद फैलाये और खेतों को बर्बाद करे और चौपायों और नस्ल को मार दे। और अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता है। (सूरे बकरा-२०४-२०५)

ऐसी मेहनत और प्रयास जो इंसान को तबाह कर दे, सम्पदा को नुक्सान पहुंचाये, जिससे शान्तिपूर्ण माहौल में उपद्रव फैल जाये, यह सब चीज अल्लाह को बिलकुल पसंद नहीं है इसको किसी भी तरह वैध (जायज) नहीं ठहराया जा सकता। जो लोग अक्ल से काम नहीं लेते, नफरत और दुश्मनी उनकी सोच बन जाती है, इंतेकाम (प्रतिशोध) उनका लक्ष्य बन जाता है, इस्लाम और क़ानून की उन्हें कोई परवाह नहीं होती, ऐसे ही लोग जमीन में उपद्रव फैलाते हैं। इन सब अपराधिक कामों की कुर्आन ने निंदा की है और सख्ती से रोका है। साथ ही सकारात्मक व्यवहार अपनाने पर उभारा है। अल्लाह तआला फरमाता है।

''और किसी कौम की दुश्मनी से अन्याय न करने लगो बल्कि हर हाल में न्याय ही किया करो क्योंकि न्याय परहेजगारी के बहुत ही करीब है (सूरे माइदा-८)

किसी भी इंसान या गुट को किसी कौम या किसी इंसान से दुश्मनी है तो उसके लिये यह जायज नहीं कि वह दुश्मनी के नशे में सारी सीमाओं और क़ानून को तोड़ डाले और जिस से दुश्मनी है उसके साथ जुल्म और अन्याय का व्यवहार करे। इस्लाम ने हर हाल में इंसाफ की तालीम दी है चाहे किसी से कितनी ही दुश्मनी क्यों न हो।

विनाशकारी कामों में जुल्म सिर्फ एक आदमी पर नहीं बल्कि बहुत सारे निर्दोष लोगों पर होता है। कभी कभार इसमें सैकड़ों बल्कि हजारों जानें तबाह हो जाती हैं। और जन सम्पदा बर्बाद हो जाता है।

ऐसी सूरत में इन कामों के हराम होने में क्या शक हो सकता है? यह बिल्कुल हराम हैं। इंसाफ करने का आदेश कुर्आन की दूसरी आयतों में भी दिया गया है। अल्लाह तआला फरमाता है ''अल्लाह तुम को इंसाफ करने का हुक्म देता है और (हर एक के साथ) एहसान करने का और संबन्धियों को जरूरत के मुताबिक देने का और बेहयाई (यानी ज़िना, उसकी तरफ उभारने वाली चीजों) और नाजायज हरकतों से और अत्याचार करने से मना करता है तुम को नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत पाओ। (सूरह नहल-१०)

इस आयत में इंसाफ, संबन्धियों के साथ भलाई का हुक्म और बेशर्मी, अत्याचार हिंसा और बगावत से रोका गया है।

यह सारी आयतें इतनी व्यापी हैं कि इनकी रोशनी में किसी भी तरह की मनमानी अत्याचार अधिकार हनन, जान माल, इज्जत और दीन धर्म पर हमला करने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

हर तरह के अत्याचार हिंसा

और अधिकार हनन का उपचार इस्लाम में मौजूद है और उसका तरीका भी बताया गया है, उनको दूर करने के लिये जिस को कानूनी अधिकार दिये गये हैं उसे यह अधिकार इस्तेमाल करना चाहिये और लोगों को निराज और उपद्रव नहीं फैलाना चाहिये।

अल्लाह ने मुसलमानों को मुसलमानों पर भी किसी तरह का अत्याचार करने से रोका है। अल्लाह फरमाता है ''जो लोग मुसलमान मर्दों और औरतों पर बगैर किसी (लानत मलामत) के काम की यातनायें देते हैं वह बहुत बड़ा बोहतान और खुले पाप का बोझ अपनी गर्दन पर उठाते हैं (सूर अहजाब ५८१)

मुहम्मद स० ने फरमाया

हर मुसलमान की जान इज्जत और माल दूसरे पर हराम है। (बुखारी, ४०४ मुस्लिम-२५२४)

मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से मुसलमान महफूज रहें। (बुखारी५१ मुस्लिम-४०)

रसूल स० ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि तुम नर्मी अपनाओ ताकि कोई किसी पर अत्याचार न करे और न कोई किसी पर फख्र (गर्व) करे। इन हदीसों से स्पष्ट है कि किसी मुसलमान के लिये जायज नहीं कि किसी को किसी तरह सताये और किसी के जान माल और इज्जत के लिये खतरा बने या किसी पर अत्याचार करे। इस फतवे पर जिन मुफती ओलमा और मदर्सों के पदधारियों के हस्ताक्षर हैं। वह यह है।

● ● ●

यह फतवा दिनाँक १८ मार्च २००६ को जारी किया गया।

दाइश की गतिविधियाँ मानवता विरोधी और निन्दित हैं
इस्लाम के असल स्रोत कुरआन और हदीस

नौशाद अहमद

समाजी जीवन में इस्लाम की शिक्षा यह है कि वह सबकी सुरक्षा चाहता है, वह सुलह को पसन्द करता है, किसी को सताने को पाप मानता है, सबके प्राण जीवन का सम्मान करने का आदेश देता है। एक निर्दोष की हत्या को पूरी मानवता की हत्या के समान करार देता है और एक प्राण को बचाने के कर्म को पूरी मानवता की सुरक्षा के समान करार देता है इस्लाम यह भी कहता है कि अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करो, वह कहता है कि किसी के जान व माल को तनिक भर भी हानि न पहुंचाया जाये। वह प्रेम सदव्यवहार, सदभावना, एकता को पसन्द करता है और अहिंसा, घृणा, सांप्रदायिकता की कड़ी निन्दा करता है। वह पूरी मानवता को अल्लाह का कुंबा (परिवार) मानता है। वह समानता का पक्षधर है और पक्षपात का सख्त विरोधी है।

इन तमाम खूबियों के बावजूद आज इस्लाम पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह आतंकवाद का प्रोत्साहन करता है, वह आतंकी धर्म है, उसका रिश्ता आतंकवाद से जोड़ा जा रहा है पश्चिम मीडिया यही प्रोपैगण्डा कर रहा है जबकि हकीकत यह है कि आतंकवाद से इस्लाम का कोई रिश्ता नाता नहीं है। यह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने के लिये इस्लाम को निशाना बनाया जा रहा है।

उपर्युक्त पंक्तियों में इस्लाम की जो शिक्षाएँ बयान की गयी हैं हकीकत में इस्लाम का वही असली चेहरा है।

जब कोई इस्लाम के बारे में गलत प्रोपैगण्डा करता है तो आम तौर से ऐसा होता है कि असल हकीकत को जानने की कोशिश नहीं की जाती है अगर प्रोपैगण्डे को सामने रख कर इस्लाम धर्म का अध्ययन किया जाये तो विषय वस्तु साफ हो सकती है जो लोग इस्लाम के बारे में भ्रमित हैं उनका जेहन साफ हो सकता है लेकिन यह बड़े अफसोस की बात है कि कुछ लोग प्रोपैगण्डे पर ध्यान देने और उसको सुनने के इतने आदी हो गये हैं कि उनका ध्यान असल हकीकत की तरफ नहीं जाता।

यह हमेशा याद रखना चाहिये कि किसी भी धर्म को समझने के लिये उस धर्म के असल स्रोत का अध्ययन करना चाहिये साधारण साहित्य पर ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिये।

दाइश की मिसाल सामने है बहुत से लोग उसे मुसलमानों का गुट समझते हैं जबकि हकीकत यह है कि दाइश का इस्लाम और मुसलमानों से कोई संबन्ध नहीं है दाइश को इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने के लिये खड़ा किया गया है अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये कुछ लोग आर्थिक ताकत के बल पर दूसरी कौम को बदनाम कर रहे हैं अम्न पसन्द देशों को उन स्रोतों का पता लगाना चाहिये

जिसकी बुनियाद पर दाइश के लोग अम्न पसन्दों के लिये चिन्ता का विषय बने हुये हैं और उस पाखण्ड को सामने आना चाहिये जो पूरी दुनिया को अशान्ति की तरफ ले जा रहे हैं। वह इस्लाम और मुसलमानों का दुश्मन होने के साथ साथ पूरी मानवता के दुश्मन हैं, वह देखने में कुछ और नज़र आते हैं लेकिन हकीकत यह है कि दाइश की गतिविधियों का इस्लाम और मुसलमानों से कोई संबन्ध नहीं है। वह स्वार्थी हैं वह अपनी इच्छा का गुलाम हैं जो निर्दोषों का कत्ल कर रहे है वह इस्लाम का अनुयायी कैसे हो सकते हैं इस्लाम तो एक जानवर के साथ भी दया करूणा का व्यवहार करने का आदेश देता है। भारतीय मुसलमान सहित दुनिया के मुसलमान दाइश को मुसलमान नहीं मानते हैं क्योंकि उनका कोई भी कर्म इस्लाम के अनुसार नहीं है वह धर्म और मानवता के नाम पर कलंक हैं उनकी जितनी भी निन्दा की जाये कम है।

इस्लाम की शिक्षाओं का असल स्रोत कुरआन और हदीस हैं। कोई भी इन स्रोतों से लाभान्वित होने के बाद दाइश को और उसके आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ने का साहस नहीं करेगा इसलिये ज़रूरी है कि हम सब इस्लाम की असल शिक्षाओं को समझने की कोशिश करें और जो लोग दाइश की आड़ में मुसलमानों को कलंकित करने की कुचेष्टा कर रहे हैं उनको भी समझने की कोशिश करें।

जो लोग दाइश और उसके आतंकवाद को सलफी विचारा ध ाारा से जोड़ रहे हैं क्या कभी उन्होंने सलफी विचार धारा के असल स्रोत का अध्ययन किया है, यह पश्चिम मीडिया का सलफी विचार धारा के खिलाफ गलत प्रोपैगण्डा है जो वह अपने स्वार्थ के लिये ऐसा गलत प्रोपैगण्डा कर रहा है लेकिन बड़े दुख की बात है कि हमारे देश में भी कुछ लेखक पश्चिम मीडिया के प्रोपैगण्डे का शिकार हो कर सलफी विचार धारा को कलंकित करने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि होना तो यह चाहिये था कि वह पश्चिम मीडिया के इन निराधार बातों का गहराई से अवलोकन करते और शोध का रास्ता अपनाते लेकिन इस संबन्ध ा में अंधी पैरवी करके पत्रकारिता जैसे पवित्र पेशे को कुछ लेखक कलंकित कर रहे हैं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को दाइश और आतंकवाद के खिलाफ लिखित फतवा देने में प्राथमिकता प्राप्त है वह शुरू ही से उसके खिलाफ आवाज़ उठा रही है और विभिन्न सेमीनारों, सिम्पोज़ियमों के द्वारा उसके घिनावने कामों से लोगों को अवगत करा रही है।

दाइश पूरी मानवता का अपराधी है, उसकी गतिविधियां ध र्म विरोधी और मानवता विरोधी हैं इसी लिये भारत सहित दुनिया के तमाम मुसलमान दाइश के खिलाफ होने वाली किसी भी कार्रवाई का सपोर्ट करते हैं और उसकी आतंकी कार्रवाइयों की निन्दा करते हुये उसके खिलाफ आवाज़ उठाने के लिये लोगों को जागरूक भी कर रहे हैं। देश की प्राचीन मुस्लिम संगठन मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द शुरू ही से दाइश की गतिविधियों और उसके आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी आवाज़ उठा रही है और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की राज्य इकाइयाँ भी दाइश के आतंकवाद के खिलाफ आवाज़ उठा रही हैं और हर स्तर पर उसकी निन्दा कर रही हैं।

हम आतंकवाद के निरन्तर विरोध में क्यों?

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

पिछले दिनों कुछ मुस्लिम और गैर मुस्लिम लीडरों की तरफ से यह बात आती रही कि हम आतंकवाद पर शुरू ही से निरन्तर काफ्रेन्स, सिम्पोज़ियम, सेमीनार, सम्मेलन और सभाएं क्यों आयोजित करते हैं? आतंकवाद विरोधी व्यक्तिगत बयानात, सामूहिक ब्यानात और विरोध का यह सिलसिला मुसलमान विशेष रूप से जमीअत और जमाअत अहले हदीस ने क्यों शुरू कर रखा है? सामूहिक और व्यक्तिगत फतवा के जारी करने का जो असीमित सिलसिला मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने २००६ के आरंभ से शुरू किया था और पूर्व प्रधान मंत्री, ग्रह मंत्री, ग्रह राज्य मंत्री, डिप्टी स्पीकर, मुख्य मंत्री, विभिन्न दलों के प्रतिनिधि, सांसद, मुस्लिम, हिन्दू, ईसाई धार्मिक एवं समाजी मार्गदर्शक, राजनीतिक लीडरान और राजनीतिज्ञ, ओलम, धर्म गुरू, मुस्लिम संगठनों के मुखिया और प्रतिनिधि के हाथों आतंकवाद विरोधी फतवों का विमोचन और इसका बार बार प्रकाशन और प्रचार व प्रसार क्यों होता है? मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द आतंकवाद के विरूद्ध अपनी पत्रिकाओं के विशेष एडीशन बार बार क्यों प्रकाशित करती है। इसके पदधारी केवल राष्ट्रीय राजधानी ही नहीं बल्कि देश के लगभग हर राज्य और जिलों में आतंकवाद के खिलाफ प्रेस रिलीज, जनसभाएं, सम्मेलन, सिम्पोज़ियम का आयोजन और प्रेस रिलीज़ क्यों जारी करते है? इतनी अधिकता से जमीअत अहले हदीस विभिन्न जिलों, नगरों और राज्यों में आतंकवाद के खिलाफ प्रेस रिलीज, जन सभाएं, सम्मेलन, सिम्पोज़ियम का आयोजन और प्रेस रिलीज क्यों जारी करते हैं? इतनी अधिकता से जमीअत अहले हदीस विभिन्न जिलों, नगरों और राज्यों में आतंकवाद के विरोधा में क्यों इतना संगठित काम करती है? आखिर मुसलमान ही यह सफाई क्यों दे रहे हैं आदि?

जवाब यह है कि हम आतंकवाद को हराम करार देते हैं हमारे धर्म और विचारधारा (मसलक) में सबसे बदतरीन बुराई आतंकवाद है जो वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर है। हत्या और गारतगरी से बढ़कर आतंकवाद का फितना है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और (सुनो) फितना कत्ल से ज़्यादा सख्त है'' (सूरे बकरा १६१) इस आयत में जो चेतावनी, शिक्षा उपदेश फितनों से दूर रहने की दी गयी है और इन फितनों में सबसे बदतरीन मनहूस और निन्दनीय अतिश्योक्ति अतिवाद, हिंसा और आतंकवाद है और सलफ सालिहीन इमाम, मुहद्दिसीन और औलिया ने बगावत ही को सबसे बड़ा फितना माना है और इब्ने अश्अस और खवारिज के फितने के बाद लगभग तमाम इमामों ने बगावत और भय व आतंक के इन कामों और विचारों को खत्म करने का हर संभव प्रयास किया है। उन्होंने शासकों खलीफ़ा और समय के शासक का आज्ञापालन को फर्ज करार दिया और आस्था विचार धारा और सिद्धांत से संबन्धित किताबों में शासकों, और

सम्माननीय खलीफा का आज्ञापालन का स्थायी रूप से उल्लेख करना शुरू किया अर्थात इस्लामी आस्था का एक महत्वपूर्ण अंग शासकों का आज्ञापालन बताया गया है और हमेशा के लिये आस्था का बुनियादी अध्याय शासकों का आज्ञापालन करार दिया गया और उनके खिलाफ बगावत को असली गुमराही बताया गया और यह सर्वमान्य बातों में से है और बुद्धिमान अम्न व शान्ति की महत्ता को जानता है मगर इस्लाम ने अम्न व शान्ति की जो महत्ता बतायी है उसका सारांश यह है कि दुनियावी नेमतों में से सबसे बड़ी नेमत शान्ति और सुरक्षा है।

इस्लाम वास्तव में प्राकृतिक और मानवता का धर्म है और पूरी सृष्टि के स्वामी ने ही इस्लाम के उज्जवल सिद्धांत और उसकी सुनहरी शिक्षाएं प्रदान की हैं इसलिये वह पूरी मानवता के लिये रहमत और करूणा है। इस्लाम का अर्थ ही अम्न व शान्ति सुरक्षा और अल्लाह और उसके आदेशों के सामने स्वयं को समर्पित करने के हैं और उसका आज्ञापालन करने वाले को मुसलमान कहते हैं अतः मुसलमानों का काम ही यह है कि वह अल्लाह के सामने हमेशा आज्ञापालन करते रहें, उसकी खुशी के इच्छुक रहें उसकी नाराज़गी से बचें, और यह बात हर मुसलमान अच्छी तरह जानता है कि अल्लाह अत्यन्त दयालू है वह अपने बन्दों से असीम प्रेम करता है इसी लिये उसने अधिकार तय किये हैं जिनको पूरा करना हर मुसलमान और इन्सान पर फर्ज करार दिया है। अल्लाह ने अत्याचार को अपने ऊपर हराम कर लिया है और रहमत और मुहब्बत में संपूर्ण होने की वजह से उसने अत्याचार को इन्सानों के लिये भी हराम करार दिया है और इससे दूर रहने का कड़ा आदेश दिया है। अल्लाह ने अपने तमाम बन्दों को बिना किसी भेद भाव, रंग नस्ल, धर्म समुदाय और क्षेत्र एक दूसरे पर आतंकवाद को हराम करार दिया है और अत्याचार को अपने क्रोध का कारण बताया है। अल्लाह कहता है कि ऐ मेरे बन्दों हमने अपने ऊपर अत्याचार को हराम करार दे दिया है और तुम्हारे बीच भी अत्याचार को हराम करार दे दिया है इसलिये तुम एक दूसरे पर अत्याचार न करो। (सहीह मुस्लिम)

इस आदेश में मुसलमान और गैर मुसलमान के बीच कोई अन्तर नहीं रखा है जैसा कि एक दूसरी हदीस में है जिसमें ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मजलूम की बददुआ से बचो अगरचे वह मजलूम काफिर ही क्यों न हो क्यों कि इस बददुआ (अभिशाप) के बीच कोई पर्दा और रूकावट नहीं होती (तिर्मिज़ी)

ईश्वर ने हर काम के शुरू में बिस्मिल्लाह को ज़रूरी करार दिया है उसने अपनी विशेषता रहमान (कृपाशील) रहीम (दयावान) की विशेषता को अल्लाह के साथ बिस्मिल्लाह में प्रयोग करने का हुक्म दिया है क्यों कि उसकी तमाम खूबियाँ संपूर्ण होने के बावजूद उसकी रहमत कष्ट और क्रोध पर हावी है अल्लाह के दया करूणा में परिपूर्णता का भी तकाज़ा है कि उसने अत्याचार भय और आतंक को हराम करार दिया और उसे अपनी हिकमत और न्याय में परिपूर्ण होने की वजह से अत्याचार को हराम ठहराया और अत्याचारी को सज़ा सुनायी यहां तक कि अत्याचारी अपने अत्याचार से रूक जाये अपने पालनहार से क्षमायाचना करे और उसके बन्दों से अपना मामला साफ और मआफ करा ले।

वास्तव में अल्लाह ने जो इस्लामी कानून और जो आदेश अपने बन्दों के लिये जारी किये हैं वह स्वयं रहमत है और अत्याचार और आतंकवाद के खात्मे के लिये